बराबास

[सन् १९५१ का नोबुल पुरस्कार प्राप्त उपन्यास]

●

पायर लागरक्विस्त

कि ता ब म ह ल
इ ला हा बा द

प्रथम संस्करण

१६५५

मूल लेखक

पायर लागरविक्स्त

अनुवादक

राधानाथ चतुर्वेदी

प्रकाशक

किताब महल, इलाहाबाद

मुद्रक

अनुपम प्रेस, इलाहाबाद

प्रस्तावना

इस उपन्यास की कथा बाइबिल की एक अन्तरकथा पर आधारित है। संक्षेप में वह इस प्रकार है।

कथानक का मुख्य पात्र बरब्बास एक डाकू है। वह पकड़ा जा चुका है और उसे सूली पर चढ़ाया जाने वाला है। इसी बीच ईसा पकड़े जाते हैं। वे जेरूसलम के रोमन अधिकारियों से कहते हैं कि इस डाकू को छोड़कर—इसके स्थान पर मुझे सूली पर चढ़ा दो। ऐसा ही हुआ। जब बरब्बास को पता चला वह मसीहा थे—तब उसे विश्वास न हुआ। यह कैसा मसीहा—जो सर्वशक्तिमान होते हुए भी इतनी शारीरिक व्यथा और कष्ट को झेलता रहा ? यहीं से संदेह और अविश्वास आरम्भ होता है और बरब्बास लगातार ईसा सम्बन्धी प्रत्येक घटना पर अविश्वास करता चला जाता है।

संदेह, अविश्वास, निराशा, दुख और घोर मनोव्यथा इस उपन्यास के मूल-तत्व हैं। यही उपन्यास की साधारण-सी कथा को अद्भुत रूपक बना देते हैं। बरब्बास बाइबिल की कथा या इस उपन्यास की कथा का ही पात्र नहीं है। वह आधुनिक मानव के विश्वासों से हीन, संदेहों से ग्रस्त, दुःखी और त्रस्त मानव मस्तिष्क का प्रतिनिधित्व करता है। इसी दृष्टि से बरब्बास का कण्ठस्वर सार्वभौमिक है। उसका सम्बन्ध हम सबसे है।

इस उपन्यास के मूल लेखक श्री पार लैगरक्विस्ट सुप्रसिद्ध स्वीडिश साहित्यकार हैं। वे एक ऐसे बौद्धिक वर्ग के प्रतिनिधि हैं जो आधुनिक संसार के कोलाहलमय प्रचारात्मक साधनों से दूर, प्रकृति के अंक में बैठकर सरस्वती-साधना को ही लेखक का परम धर्म मानते हैं। वे उपन्यासकार

ही नहीं कवि और कहानीकार भी हैं। साहित्य-साधना के जिस अंचल में भी उन्होंने प्रवेश किया है उसी में उन्होंने यह दिखला दिया है कि वे ऐसे गोताखोर हैं जिसके लिए दर्शन के सागर से विचार रूपी अद्भुत और विस्मयान्वित कर देने वाले मोतियों का खोज लाना बाएँ हाथ का खेल है।

श्री लैगर्वेस्ती की शैली में भाषा की सामान्यता के साथ सौजन्यता का स्वर स्पष्टतः फूटा पड़ता है। वे मानव-मस्तिष्क या विचार स्वातंत्र्य के कट्टर समर्थक हैं। उनकी लेखन शैली में नाटकीयता, लघु कथा की संक्षिप्तता और आध्यात्मिकता का अद्भुत मिश्रण है।

मानव जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' का है। वे अज्ञान से ज्ञान की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने वाले तत्वों की सक्रिय सहायता करने के लिए सतत सचेष्ट दिखायी पड़ते हैं।

विश्वासों के अभाव ने ही आज मानव मात्र को ऐसी पहेली बना रखा है जिसे बूझना कठिन प्रतीत होता है। इस पहेली को ही इस उपन्यास में उपस्थित किया गया है। यह उपन्यास केवल साहित्य क्षेत्र में ही सीमित न रहकर लूसीयन मॉरी के शब्दों में 'कला की वस्तु' हो गया है। 'समकालीन विचार-धारा की जलवायु' इसमें साफ-साफ झलकती है।

विश्वास और सत्य के संसारों के बीच अंधकार की एक डोर है। इस डोर पर चलने में श्री लैगर्वेस्ती ने आन्द्रेजीद के शब्दों में सचमुच ही नट की सी कला का परिचय दिया है।

बरबास जैसी रूपक कथाओं का भारतीय साहित्य में अभाव नहीं है। लेकिन उन कथाओं की समकालीन समस्याओं के प्रकाश में व्याख्या करने की आवश्यकता है। संभवतः प्रस्तुत उपन्यास उक्त दिशा में कुछ निर्देश कर सके। यदि ऐसा हुआ तो मैं अपना परिश्रम सार्थक समझूँगा।

—अनुवादक

१

सब जानते हैं कि वे तीनों वहाँ सूलियों पर किस प्रकार लटकाए गए थे और जो उन्हें घेरे खड़े थे—वे कौन-कौन थे : उनकी माँ मेरी और मेग्डेलीन, वेरोनिका, साइमन जो सूली ढोकर ले गया था और जोसेफ जो उनसे वहाँ लिपटा हुआ था। लेकिन पर्वतीय ढाल पर कुछ नीचे—एक तरफ को—एक व्यक्ति और खड़ा था जिसकी दृष्टि बीच की सूली पर लटके मरणासन्न व्यक्ति पर गड़ी हुई थी। वह अपने स्थान पर तब से खड़ा था जब से सूली पर उन तीनों को लटकाये जाने का उपक्रम किया जा रहा था और तब तक खड़ा रहा जब तक बीच की सूली पर लटका व्यक्ति भी मृत्यु की पीड़ा और वेदना से छटपटा-छटपटा कर चल नहीं बसा। इस पूरी घटना को आदि से अन्त तक देखने वाले उस व्यक्ति का नाम बरब्बास था। यह पुस्तक उसी के सम्बन्ध में है।

बरब्बास की आयु लगभग तीस वर्ष की होगी। लेकिन उसकी समूची शरीर रचना बड़ी सुदृढ़ और उसके अमित शारीरिक बल की द्योतक थी। वर्ण उसका गेहुँआ था जो चिन्ता की अतिशयतावश कुछ काला-सा पड़ गया था। उसकी दाढ़ी लाल और केश काले थे। भौंहें स्याह थीं और आँखें गड्ढों में इस प्रकार धुसी मालूम होती थीं जैसे वे छिप जाना चाहती हों। एक आँख के नीचे किसी गहरे घाव का निशान था जो दाढ़ी में दब जाने के कारण दिखलायी नहीं पड़ता था। लेकिन इससे क्या; किसी भी व्यक्ति का स्वरूप या उसकी आकृति बहुत अधिक महत्व की नहीं होती।

वह गवर्नर के निवास-स्थान से लेकर यहाँ तक आने वाली भीड़ के पीछे-पीछे—बल्कि उससे कुछ दूर रहते हुए—आया था। जब क्लान्त दण्डित बन्दी अपनी सूली के बोझ के कारण उसके नीचे दब कर गिर गया था तब वह सूली से पीछे दूरी पर ही रुक गया था और उसने सचेत भाव से अपने आपको सूली के पास आने से रोका था। और तभी बलवान साइमन को उन लोगों ने पकड़ लिया और उसकी पीठ पर सूली लाद दी। भीड़ में चलने वाले पुरुषों की संख्या सैनिकों से अधिक नहीं थी। सैनिक दण्डितों के पीछे-पीछे चल रहे थे। भीड़ के शेष लोगों में ऐसे आवारा लड़कों की संख्या ही अधिक थी जो जेरूसलम की सड़कों पर सदा घूमा करते थे और जब भी कोई बन्दी प्राणदण्ड के लिए ले जाया जाता उसके पीछे हो लेते थे। ऐसा करना उनके मनोरञ्जन का साधन था। इन आवारा लड़कों के अतिरिक्त अधिकांश महिलाएँ थीं जो सैनिकों के पीछे-पीछे बन्दियों के साथ चल रही थीं।

आवारा लड़कों का झुण्ड थोड़ी ही देर बाद थक गया और थोड़ी-थोड़ी देर रुकने, चलने के बाद पीछे रह गया। हाँ, एक बात अवश्य हुई और वह यह थी कि उनमें से प्रत्येक ने रुक कर उस आदमी को अवश्य देखा जिसके मुँह पर घाव का गहरा-सा निशान था।

और अब वह सूली की पहाड़ी पर खड़ा बीच की सूली पर लटके व्यक्ति को किसी सम्मोहित व्यक्ति की भाँति देख रहा था। वह चाहते हुए भी अपनी दृष्टि उस पर से हटा नहीं पा रहा था। वस्तुतः वह यहाँ आना ही नहीं चाहता था। कारण स्पष्ट था। यहाँ का सारा वातावरण ही घिनौना था। ऐसा प्रतीत होता था जैसे जो भी यहाँ आएगा उसको अवश्य ही उस स्थान के वातावरण की छूत लग जायगी। यदि किसी भी व्यक्ति ने अभिशप्त उस स्थल पर अपना पाँव भी रखा तो वह बच न सकेगा और कभी न कभी उसे उस स्थान पर इस प्रकार बलात् ले जायगा कि वह कभी वहाँ से वापस न लौटने पाये। वहाँ चारों ओर

अस्थियाँ और शिरों के अवशेष सूलियों के क्षत-विक्षत अंशों सहित पड़े हुए थे—क्योंकि उस स्थान की किसी वस्तु को कोई स्पर्श भी नहीं करना चाहता था—चाहे वह किसी उपयोग की हो या न हो। वह वहाँ क्यों खड़ा था? वह सूली पर लटके व्यक्ति को जानता भी नहीं और न उसका उससे सम्बन्ध ही है। वह कारामुक्त होने के बाद भी अब गोलगोथा में खड़ा-खड़ा क्या कर रहा है?

सूली पर लटके व्यक्ति का सिर लुढ़क गया था और उसकी ऊर्ध्व श्वाँस चल रही थी। अब सब कुछ समाप्त होने में अधिक समय नहीं था। मरणासन्न व्यक्ति शारीरिक दृष्टि से बलवान न था। शरीर कृशकाय और भुजाएँ निर्बल और मांसहीन थीं। उनको देखने से ऐसा लगता था जैसे भुजाओं से कभी कोई काम ही नहीं लिया गया हो। बड़ा विचित्र-सा था वह! उसकी दाढ़ी छोटी और हलकी थी और वक्षस्थल पर एक भी केश न था—ठीक उसी तरह जैसे किसी बालक का वक्ष केशहीन होता है। बरबास उसे बिलकुल नहीं चाह सका।

बरबास ने सूली पर लटके उस मरणासन्न व्यक्ति को सब से पहले गवर्नर के महल के सामने वाले मैदान में देखा था। तब से ही वह उसे साधारण मनुष्यों से भिन्न प्रतीत हो रहा था। यह भिन्नता किस प्रकार की थी—यह बात स्पष्टतः वाणी द्वारा प्रकट करने में वह असमर्थ था। वह भिन्नता कुछ ऐसी अनोखी थी—जो केवल अनुभूति की वस्तु ही थी। उसे स्मरण नहीं पड़ता था कि पहले भी कभी उसने ऐसे किसी व्यक्ति को देखा हो। सम्भवतः यह भिन्नता उसे इसलिए प्रतीत हो रही हो कि वह हाल ही में बन्दीगृह की कालकोठरी से मुक्त हुआ है और उसके नेत्र सूर्य की चमक के पूरी तरह अभ्यस्त न हो पाये हों। इसलिए जब सबसे पहले उसने दण्डित व्यक्ति को देखा तो उसे ऐसा लगा था कि एक तेजोमय आभा उसके मुखमण्डल से फूटी पड़ रही है। यह तेजोमय आभा उसे लगा था कि थोड़ी देर बाद जाती रही। तब उसकी आँखों ने प्रकाश

सहिष्णुता प्राप्त कर ली थी और मैदान में जैसे अन्य व्यक्ति खड़े थे वैसा ही वह व्यक्ति भी प्रतीत होने लगा। लेकिन बरब्बास का मस्तिष्क इस विचार से मुक्त न हो सका था कि उस व्यक्ति में कुछ न कुछ असाधारणता अवश्य है। वह अन्य सब के सदृश नहीं है। उसे यह विश्वास न हो सका कि वह व्यक्ति भी बन्दी है और उसे भी उनके साथ खड़े अन्य बन्दियों की भाँति मृत्यु दण्ड दिया गया है। वह भी उसकी ही तरह बन्दी है—यह बात बरब्बास की समझ में किसी भी प्रकार नहीं आ रही थी। यद्यपि यह बरब्बास की चिन्ता का विषय न था फिर भी वह सोच रहा था कि उन लोगों ने उसे मृत्यु-दण्ड क्यों दे दिया? यह तो उसका मुँह देखने से भी स्पष्ट हो जाता था कि यह निर्दोष है।

इसके बाद उन लोगों को छाँट लिया गया जिन्हें सूली पर चढ़ाया जाने वाला था। बरब्बास को शृङ्खला-मुक्त कर दिया गया और कहा गया कि वह मुक्त है। उसने अपने छूटने के लिए कोई प्रयत्न नहीं किया था। सारा कृत्य उन्हीं लोगों का था। उन्हें चयन की पूरी स्वतंत्रता थी और बन्धन एवं मुक्ति दोनों का निर्णय उन सारे बन्दियों के सम्बन्ध में उन्हीं ने किया था। पहले दोनों को मृत्यु-दण्ड दिया गया था लेकिन बाद में निश्चय किया गया कि उनमें से एक को छोड़ दिया जाय। उसे अपने छोड़े जाने पर स्वयं आश्चर्य हो रहा था। जब सैनिक उसको बन्धनमुक्त कर रहे थे तब उसने दूसरे व्यक्ति को सूली पीठ पर लादे मेहराबदार दरवाजे से सैनिकों सहित जाते हुए देखा था। थोड़ी ही देर में वह दल मुड़ कर दृष्टि से ओझल हो गया।

वह उस द्वार की ओर शून्य दृष्टि से देखता हुआ खड़ा रह गया। तब गारद के सिपाही ने धक्का देते हुए उससे तेज स्वर में कहा था, 'अब तुम क्या इन्तजार कर रहे हो। भागो यहाँ से! तुम छूट गये।' और उसे लगा जैसे वह सोते से जाग गया हो। वह भी चल पड़ा। उसी मेहराबदार दरवाजे से होता हुआ सड़क पर बढ़ चला और जब

उसने प्राण-दण्डित बन्दी को अपनी सूली घसीटते हुए देखा तो कुछ दूर रहते हुए वह उसी के पीछे यहाँ तक चला आया। क्यों, यह वह नहीं जानता। और न वह यही जानता है कि घण्टों से वह यहाँ क्यों खड़ा है और सूली पर चढ़ाये जाने के बाद होने वाली हृदय-विदारक व्यथाओं को क्यों देख रहा है जबकि इससे उसका कोई सम्बन्ध नहीं है।

क्या उन लोगों के भी रहने की वहाँ कोई आवश्यकता है जो सूली के चारों ओर उसे घेरे खड़े हैं ? नहीं, यदि वे न चाहते तो न खड़े रहते। यह तो उनकी अपनी इच्छा की बात है। किसी ने उनको सूली दिये जाने वाले गन्दे स्थान में आने के लिए विवश नहीं किया था। लेकिन, निस्संदेह वे सब, जो वहाँ खड़े थे, दण्डित बन्दी के निकट सम्बन्धी और घनिष्ठ मित्र थे। यह कुछ बड़ी अजीब सी बात है कि उन्हें अपने अशुद्ध होने की तनिक सी भी चिन्ता नहीं थी।

वह स्त्री अवश्य ही उसकी माँ होगी। यद्यपि वह स्त्री ठीक उसी व्यक्ति की भाँति न थी जो सूली पर लटका मृत्यु की व्यथा से तड़प रहा था लेकिन फिर ठीक उसी की भाँति और कौन हो भी सकता था ? वह किसी किसान-परिवार की गृहिणी सी प्रतीत होती थी। उसके चेहरे पर विषादयुक्त दृढ़ता और बज्र सी कठोरता थी। वह बार-बार मुँह और नाक पर हाथ रखकर थोड़ी देर बैठी रहती और फिर इसके बाद पीठ से हाथ पोंछती थी। नेत्र बार-बार अश्रुपूरित हो जाते थे। लेकिन वह रुदन नहीं कर रही थी। वह अन्यों की भाँति क्रन्दन कर अपना अतिशय दुख भी नहीं प्रकट कर रही थी। वह उसकी ओर अन्य लोगों की भाँति बारम्बार देख भी नहीं रही थी। अतएव, यह सिद्ध था कि वह उसकी माँ थी। अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा वह शायद अपने पुत्र के लिये सर्वाधिक दुखी थी लेकिन ऐसा प्रतीत हो रहा था कि वह अपने पुत्र के सूली पर इस भाँति लटक जाने के कृत्य को सराहना की दृष्टि से नहीं देख रही थी। माँ को लग रहा था कि उसके पुत्र ने अवश्य ही कोई ऐसा अपराध जाने या अनजाने किया

है जिससे उसे सूली पर लटकना पड़ा है और वह ऐसे कार्य की पुष्टि के लिये तैयार नहीं जान पड़ती थी। माँ जानती थी कि कुछ भी हो उसका पुत्र निर्दोष है क्योंकि वह उसकी माँ थी। चाहे पुत्र ने कुछ भी क्यों न किया हो माँ के लिये तो वह सदा निर्दोष ही रहता है।

बरब्बास मातृहीन था, और पितृहीन भी—क्योंकि उसने कभी किसी को अपने पिता की चर्चा करते हुए नहीं सुना था। जहाँ तक उसे ज्ञान था उसका कोई सम्बन्धी भी नहीं था। अतएव यदि मौत की सजा दे दी गई होती तो शायद इतने आँसू न गिराये गये होते। वे सबके सब अपनी छातियाँ पीट रहे थे और ऐसा लगता था जैसे इतने बड़े दुख का वज्र उन पर गिरा था। क्रन्दन और विलापों से वह स्थान बड़ी देर से गूँज रहा था।

दाहिनी ओर की सूली पर लटके व्यक्ति को वह भली-भाँति जानता था। यदि उस व्यक्ति ने बरब्बास को यहाँ छिपे हुए खड़ा देखा भी होगा तो मन में यही समझा होगा कि वह उसी के कारण यहाँ खड़ा है; यह देखने के लिए कि वह मृत्यु की वेदना का कितनी वीरता और कितने धैर्य से सामना करता है। लेकिन वह यहाँ उसकी वजह से बिलकुल नहीं खड़ा था। यह भी सच है कि दाहिनी सूली पर लटकने वाले व्यक्ति को सूली पर लटका देख उसे कोई दुख नहीं हुआ था। यदि किसी को सचमुच सूली पर लटकाये जाने की आवश्यकता ही हो तो उस पाजी का नम्बर सबसे पहले होना ही चाहिए था। इसलिये नहीं कि उसे मृत्यु-दण्ड दिया गया था वरन् किन्हीं अन्य कारणों वश। लेकिन वह उसी की ओर क्यों देख रहा था। बीच वाले व्यक्ति की ओर क्यों नहीं देख रहा था जो उसके बदले सूली पर चढ़ा दिया गया था। वह सूली के स्थान तक केवल उसी के लिये आया था। उस आदमी ने उसे यहाँ तक आने के लिये अपनी शक्ति से विवश कर दिया था—उसका बरब्बास पर अद्भुत प्रभाव था। अद्भुत शक्ति थी! लेकिन यदि उन तीनों में कोई सबसे अधिक

शक्तिहीन दिखलायी पड़ता था तो वही था। सूली पर लटकने के बाद सबसे अधिक व्यथाकारी अवस्था किसी की यदि दिखलायी पड़ती थी तो उसी की। शेष दोनों निश्चय ही उसकी भाँति व्यथित नहीं दिखलायी पड़ते थे। स्पष्ट था कि उन दोनों में तीसरे बीच वाले व्यक्ति की अपेक्षा कहीं अधिक शक्ति शेष रह गई थी। उसमें तो अपना सिर ऊपर उठाने की शक्ति भी नहीं बची थी। उसका सिर दाहिनी ओर लुढ़क गया था।

हाँ, अब उसने अपना सिर जरा सा ऊपर उठाया लेकिन उसकी छाती जिस पर एक भी बाल न था उल्टी चलने वाली साँस के कारण फूल रही थी। जिह्वा ओठों से चिपक गई थी। उसने कराह कर पानी माँगा। सैनिक जो सूली से थोड़ी ही दूर पर चौपड़ खेलने में व्यस्त थे उस व्यक्ति से ऊब चुके थे क्योंकि उसके मरने में बड़ी देर लग रही थी। अतएव उन्होंने पानी माँगने की कराह को पहले तो सुना ही नहीं लेकिन बाद में एक सम्बन्धी ने जाकर सैनिकों से पानी देने के लिये कहा। तब अनमना सा एक सैनिक उठा। उसने स्पंज को पानी में डुबोया और एक बाँस के सिरे में अटका कर मरणासन्न बन्दी के मुँह के पास रख दिया। लेकिन जब सूली चढ़े व्यक्ति ने गन्दे पानी को चखा तो उसे जहाँ का तहाँ ही छोड़ दिया। इस पर वह सैनिक हँस पड़ा और वहाँ खड़ा रहा। इसके बाद जब उसने यह बात जाकर अपने साथी सैनिकों को बतलाई तो वे भी हँसने लगे। दोगले कहीं के!

सम्बन्धी अथवा जो भी लोग सूली चढ़े व्यक्ति को देख रहे थे वे भावावेश की मुद्रा में उसकी ओर देखने लगे क्योंकि उसकी साँस फूलने से यह स्पष्ट होता जा रहा था कि उसके भी दम तोड़ने में अब और अधिक समय नहीं लगेगा। दम टूटने का समय निकट आने की बात सोचते ही बरब्बास को ऐसा अनुभव सा हुआ कि उसकी छाती से कोई पत्थर हट जायगा। बेचारे को इस मर्मान्तिक पीड़ा, वेदना और व्यथा से तो मुक्ति मिलेगी। बस यही है कि वह जल्दी से जल्दी अपनी साँसें

पूरी कर दे। उसके शरीर छोड़ते ही बरब्बास ने सोचा वह जल्दी से यहाँ से उड़ चलेगा और फिर इस स्थान के बारे में कभी सोचेगा भी नहीं।...

लेकिन यह क्या हुआ। यकायक सारी पहाड़ी पर अँधेरा छा गया। ऐसा लगा जैसे सूर्य ज्योतिहीन हो गया है। घना अँधेरा हो गया। इसी अँधेरे में से उस व्यक्ति की आवाज आयी—ओ मेरे ईश्वर, मेरे ईश्वर, तुमने मुझे क्यों छोड़ दिया है!

यह स्वर भयावना था; चाहे उसका अर्थ जो रहा हो। लेकिन यह अँधेरा क्यों हो गया? यह तो दोपहर थी। इसका क्या कारण है? पहाड़ी पर तीनों सूलियाँ मन्द-मन्द सी दिखलाई पड़ रही थीं ऐसी कि मानों प्रेतात्मा हों। कुछ न कुछ भयंकर काण्ड अवश्य होने वाला था। सैनिक तत्काल उठ खड़े हुए। उन्होंने तलवारें म्यानों से बाहर खींच लीं। चाहे कुछ भी हो सैनिक तो अपनी आदत से लाचार होते हैं। वे हर बात पर अपनी तलवार ही खींचते हैं। वे सूलियों के चारों ओर खड़े थे। डर के कारण धीरे-धीरे फुसफुसा कर बातें कर रहे थे। भयभीत हो जाने के कारण उनका हँसना बन्द हो गया था। वे भी तो लोक शंकाओं पर विश्वास करते हैं।

बरब्बास स्वय भयभीत हो गया था। जब धीरे-धीरे प्रकाश पुनः लौट आया जैसे वह उषाकाल में आता है तो उसका भी साहस बँधा। क्रमशः पहले जैसा ही वातावरण पुनः हो गया। चिड़ियाँ जो पहले चुप हो गई थीं फिर चहचहाने लगीं। सब कुछ ऐसा लगा जैसे रात बीती हो और सवेरा हुआ हो।

उसके सभी सम्बन्धी एकदम गुमसुम खड़े थे। उनमें से कोई भी रुदन या विलाप नहीं कर रहा था। वे सबके सब सैनिकों सहित सूली पर चढ़े उस व्यक्ति को देख रहे थे। समस्त वातावरण में स्तब्धता छाई थी।

अब वह भी फुरसत पा गया था और जहाँ चाहे वहाँ जा सकता था। सब कुछ हो चुका था। सूरज फिर निकल आया था और सभी बातें

पूर्ववत् हो चली थीं। उस व्यक्ति की मृत्यु के कारण केवल थोड़ी सी देर के लिये अन्धकार छा गया था।

हाँ, वह अब चल देगा। अब रुकने या प्रतीक्षा करने के लिए शेष भी क्या रहा है? जिसे मरना था—वह मर चुका। अब ठहरने का कोई कारण नहीं है। उसे सूली से नीचे उतार लिया गया है। उसने देखा दो आदमियों ने साफ कपड़े से शव को लपेट दिया। शव बिलकुल धवल हो गया था। और वे दोनों उसे इस प्रकार स्पर्श कर रहे थे जिससे उठाने-रखने में शव को तनिक भी पीड़ा न हो। वे सब बड़ी अजीब तरह का व्यवहार कर रहे थे। आखिरकार उसे सूली दे दी जा चुकी थी। कुछ भी हो वे लोग बड़े विचित्र व्यक्ति थे। माँ वहाँ खड़ी थी। उसकी आँखों के आँसू सूख चुके थे। वह अपने पुत्र की ओर अपलक दृष्टि से देख रही थी कि उसे क्या हो गया और उसका रूखा काले वर्ण का मुख हृदयगत विषाद को अभिव्यक्त करने में सर्वथा असफल हो रहा था। उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि यह हुआ क्या। वह केवल इतना ही जानती थी कि जो कुछ हुआ है उसे क्षमा नहीं किया जा सकता। वह उसे अधिक अच्छी तरह समझ सकता था।

जब वह शोक समूह धीरे-धीरे चला जा रहा था और कुछ लोग समूह के बीच सफेद वस्त्रों और फूलों से ढके शव को लिए चल रहे थे तब एक स्त्री ने धीरे से फुसफुसा कर माँ के कान में कुछ कहा और बरबास की ओर संकेत किया। इसके बाद वह स्त्री एक क्षण के लिए रुकी और उसने ऐसे असहाय ढंग से अवमाननापूर्ण दृष्टि से बरबास की ओर देखा कि वह शायद उसे कभी भी नहीं भूल सकेगा। इसके बाद वे लोग गोलगोथा की सड़क पर चले गये और वहाँ से बायीं ओर मुड़ गये।

बरबास सब लोगों के पीछे बचकर छिपता हुआ-सा इसीलिए सूली स्थल तक गया था कि उसे कोई देख न सके। एक उद्यान में जाकर, जो उस स्थान से थोड़ी ही दूर था, उन लोगों ने शव को एक प्रस्तर

समाधि में प्रतिष्ठापित कर दिया। जब मृत व्यक्ति के सम्बन्धी प्रार्थना कर रहे थे तब सैनिकों ने धीरे से समाधि के मुँह पर शिलाखण्ड रख कर उसे बन्द कर दिया और चले गये।

वह उन लोगों के बाद समाधि के पास चला गया और कुछ देर तक वहाँ खड़ा रहा। लेकिन उसने प्रार्थना नहीं की क्योंकि वह अपने को दुष्टात्मा समझ रहा था और जानता था उसकी प्रार्थना या उपासना स्वीकार नहीं की जायगी; विशेष रूप से तब जब कि उसके अपराधों का मार्जन न हुआ हो। इसके अतिरिक्त वह मृतक से परिचित भी नहीं था। इतना सब होते हुए भी वहाँ एक मिनट खड़ा रहा।

इसके बाद वह भी जेरूसलम की ओर चला गया।

२

डेविड सिंहद्वार से नगर में प्रविष्ट होने के बाद जब बरब्बास सड़क पर कुछ आगे बढ़ गया तो उसे एक तरुणी मिली। वह मकानों की तरफ इधर-उधर देखती जा रही थी और यह दिखलाने का प्रयत्न कर रही थी वह उसकी ओर नहीं देख रही है। लेकिन बरब्बास को यह ताड़ने में अधिक समय नहीं लगा कि तरुणी ने उसे देख लिया है। उस युवती ने इस बात की कल्पना भी नहीं की थी कि बरब्बास से उसी पुनः भेंट होगी। संभवतः उसने सोच रखा था कि बरब्बास को भी सूली पर चढ़ाया जा चुका होगा।

कुछ दूर बरब्बास उसके पीछे-पीछे चलता रहा और उसके बाद बराबर आकर चलने लगा। और इस प्रकार दोनों मिल गये। उनकी भेंट होने की वैसे कोई आवश्यकता नहीं थी। बरब्बास को तरुणी से बोलने की भी कोई आवश्यकता नहीं थी। उससे बोल देने के बाद बरब्बास को स्वयं अपने ऊपर आश्चर्य होने लगा। युवती भी थोड़ी-सी चकित हुई, ऐसा बरब्बास को उसकी भाव-भंगिमा से ज्ञात हुआ। जब-तब बरब्बास की ओर

देखने का उस युवती को मौका भी पड़ा और उसने देखा भी, किन्तु उसकी दृष्टि से झिझक का भाव सर्वथा स्पष्ट दिखलायी पड़ता था।

दोनों में होनेवाली बातचीत का उन विषयों से कोई सम्बन्ध नहीं था जो उनके मस्तिष्क में घूम रहे थे। उसने केवल इतना ही पूछा था कि वह कहाँ जा रही है और क्या उसे गिलगल से कोई समाचार मिला है। युवती ने जितना जरूरी था उतना ही जवाब दिया और जो कुछ कहा भी वह भी ऐसे कुनमुनाते हुए स्वर में कि कही गयी बात का समझना भी कठिन था।—कहाँ जा रही हो की जिज्ञासा का उत्तर मिला था, कहीं नहीं और कहाँ रहती हो, इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया गया था। उसने देखा युवती के कपड़े फटे हुए थे और वह नंगे पैर थी। उसके पैर के पंजे चौड़े और गन्दे थे। इतनी-सी बातचीत के बाद वे दोनों ही चुप हो गये तथा एक दूसरे के साथ बिना अपने मुँह से एक शब्द भी निकाले बड़ी दूर तक चलते ही गये।

चलते-चलते उन्हें एक दरवाजा मिला जिसके अन्दर का भाग ऐसा लगता था जैसे कोई अँधेरा गड्ढा हो। उस स्थान से लोगों के जोर-जोर से बातें करने की आवाज आ रही थी। वे अभी उस स्थान से कुछ ही कदम आगे बढ़े होंगे कि उन्हें पुकारती हुई एक मोटी-सी स्त्री दरवाजे के बाहर निकल आयी। उसने जोर से आवाज देकर बरबास को अपने पास बुलाया। वह बड़ी रँगी-सजी थी और अपनी मोटी बाहों वाले हाथों से इशारा करके बिना किसी प्रकार का गुल-गपाड़ा मचाये बरबास को अपने पास चले आने के लिए बुला रही थी। उसकी मुद्रा से ऐसा झलक रहा था कि वह बरबास को देखकर बड़ी ही प्रसन्न हो रही हो। बरबास कुछ हिचकिचाया और उसने अपरिचित साथी के साथ उस स्थान में जाने की अनिच्छा भी प्रकट की लेकिन मोटी स्त्री ने दोनों को पकड़ लिया और दरवाजे के अन्दर ले गयी। उनका दो आदमियों तथा तीन स्त्रियों ने जोरों से स्वागत किया जिन्हें वह तभी देख सका जब उसकी आँखें उस

अर्ध-प्रकाशित स्थान को भली-भाँति देखने में समर्थ हो सकीं। सब ने मेज के पास थोड़ी-सी जगह को पा जल्दी से खाली कर दिया और शराब गिलासों में पीने के लिए भरनी शुरू कर दी। सभी बरब्बास से बातें करने के लिए उत्सुक थे, अतएव सभी एक साथ बोलने लगे। सबने इस बात पर हर्ष प्रकट किया कि वह बन्दीगृह से मुक्त हो गया और सबसे बड़े सौभाग्य की बात तो यह है कि उसके स्थान पर दूसरा व्यक्ति सूली पर चढ़ा दिया गया। उन लोगों ने शराब तो भर-भर कर बरब्बास को पीने के लिए देनी शुरू कर दी, साथ ही यह भी प्रयत्न किया कि उसकी शराब के गिलास से उनकी शराब के गिलास भी छू जायँ जिससे वे भी उसके ऐसे सौभाग्य के साझीदार बन जायँ। एक स्त्री ने बरब्बास की बनियान के भीतर हाथ डाल कर उसकी छाती के बाल छू लिए और उस स्त्री के इस कार्य पर वह मोटी स्त्री बड़े जोरों से ठहाका मार कर हँस पड़ी।

बरब्बास उनके साथ शराब पीता रहा। लेकिन उसने बातचीत में बहुत कम हिस्सा लिया। वह उनके सामने बैठा हुआ एकटक दृष्टि से दीवाल की ओर देखता रहा। उसकी भूरी काली आँखें गहरे गड्ढों में से ऐसी मालूम होती थीं जैसे वे और नीचे दब कर बिलकुल छिप जाना चाहती हों। उन लोगों ने सोचा बरब्बास कुछ अजीब-सा आदमी हो गया है। इसमें कोई संदेह नहीं कि कुछ समय के लिए वह बड़ा अजीब हो गया था।

वे स्त्रियाँ उसको अब प्याले भर-भर कर शराब दे रही थीं। वह शराब तो पीता जा रहा था लेकिन उन लोगों की बातचीत में बहुत कम भाग ले रहा था।

अन्त में लोगों ने उससे यह पूछना भी शुरू कर दिया कि बात क्या है और उसके इतने सुस्त होने के कारण क्या हैं। लेकिन उस बड़ी और मोटी स्त्री ने उसकी गरदन में अपनी बाहें डाल दीं और कहा कि इतने दिनों तक कारागार में सांकलों से जकड़े रहने के बाद जब कोई छूटे तो

उसका कुछ अजीब-सा हो जाना कोई आश्चर्य की बात नही है। वहाँ तो कुछ समय रहने के बाद ही आदमी अधमरा हो जाता है और जब किसी को मृत्यु-दण्ड दे दिया गया हो तब तो उसके मरने में कसर ही क्या बाकी रह जाती है। ऐसी दशा में रहने के बाद यदि किसी को क्षमा-दान भी मिल जाय तब भी काफी समय तक मृतप्राय तो रहता ही है। वह ऐसी अवस्था में कुछ समय तक नहीं वरन् काफी समय तक रहा है। इसलिए उसका जीवित-सा न रहना स्वाभाविक ही है। ऐसा व्यक्ति अन्य सब की भाँति सामान्य दिखलायी ही कैसे पड़ सकता है। उस मोटी मांसल महिला के कहने पर जब अन्य सब लोग हँस पड़े तो उसका मिजाज गरम हो उठा। उसने क्रुद्ध होकर कहा कि वह अपने स्थान से बरबास तथा उसकी साथिन युवती के अतिरिक्त अन्य सबको निकाल बाहर करेगी—नहीं तो वे लोग हँसना बन्द कर दें। उस स्त्री ने यह भी कहा कि वह बरबास अथवा उसकी साथिन परिचित नहीं है लेकिन वे जो लोग बैठे हैं उनसे कहीं अधिक अच्छे स्वभाव के हैं, यह बात दूसरी है कि वे कुछ सीधे दिखलाई पड़ते हैं। इस बात पर वे दोनों आदमी ठहाके मार-मार कर हँसने लगे लेकिन थोड़ी देर बाद शान्त हो गये और उन्होंने बरबास से मन्द स्वर में कहा कि गोधूलि बाद अँधेरा चढ़ते ही वे पहाड़ों पर फिर वापस चले जायँगे; वे नगर में केवल बकरी के बच्चे की बलि चढ़ाने के लिए ही आये थे। लेकिन उस बकरी के बच्चे की बलि स्वीकार नहीं की गयी तो उन्होंने बकरी के बच्चे को बेंच कर उसकी जगह दो सफेद कबूतरों की बलि चढ़ा दी। कुछ रुपया हम लोगों के पास बाकी बचा था, इसलिए मनोरंजन के लिए वे इस मोटी स्त्री के यहाँ चले आये। उन लोगों ने बरबास से यह भी कहा कि पता नहीं अब वह कब अड्डे पर वापस लौटेगा। उन लोगों ने पहाड़ों वाले अपने अड्डे का पता भी बरबास को बता दिया। बरबास ने स्वीकृतिसूचक मुद्रा में सिर तो सब बातों में हिला दिया लेकिन कोई उत्तर नहीं दिया।

इस बीच एक स्त्री ने उस आदमी के बारे में बातचीत करना शुरू कर दिया जो बरबास के स्थान पर सूली पर चढ़ा दिया गया था। स्त्री ने बतलाया कि एक बार उस आदमी को उसने देखा था। उसके बारे में लोग यह कहते थे कि उसका सभी धर्म-ग्रन्थों पर बड़ा अधिकार है तथा वह भविष्य की बातें बतलाने के अतिरिक्त अनेक चमत्कार भी कर के दिखा सकता है। लेकिन ऐसा करने में तो कोई नुकसान न था, अन्य बहुत से लोग भी ऐसा कर सकते हैं। इसलिए अवश्य ऐसी कोई दूसरी बात होगी जिसके लिए उसे सूली पर चढ़ाया गया है। वह व्यक्ति बड़ा दुबला-पतला सा था। उसके सम्बन्ध में, स्त्री ने कहा, अब उसे इतना ही स्मरण रहा है।

एक दूसरी स्त्री ने बतलाया कि उसने कभी उस व्यक्ति को नहीं देखा लेकिन यह अवश्य सुना था कि उसने हमारे उपासनागृह के गिर कर नष्ट हो जाने तथा पूरे जेरूसलम के भूकम्प द्वारा नष्ट हो जाने की भविष्य-वाणी की थी। उसने यह भी कहा था कि ऐसी आग लगेगी जिसमें पृथ्वी और आकाश दोनों भस्म हो जायँगे। यह बिल्कुल उन्मादियों की सी बात थी। इसलिए आश्चर्य नहीं कि इसी पर उसे सूली दे दी गयी हो।

लेकिन तीसरी स्त्री ने कहा वह अधिकांशतः गरीबों के साथ ही रहा करता था और उन्हें वचन दिया करता था कि वे ही स्वर्ग जायँगे। इन सब बातों से लोग खुश होकर हँसा करते थे और कहते थे कि यदि यह सच हो तो सचमुच बड़ा अच्छा है। लेकिन वह व्यक्ति कभी भी हँसा नहीं, उसकी हँसी ओठों पर रहने वाली एक दिव्य मुसकान तक ही सीमित रहती थी।

इस पर उस मोटी स्त्री ने पुनः अपनी भुजाएँ बरबास की गरदन में डाल दीं और कहा कि उसे ठेंगे भर भी उस आदमी के सूली पर चढ़ जाने की परवाह नहीं है। वह न तो उसे जानती थी और न अब उसे जानना ही चाहती है। कुछ भी हो, अब तो उसे फाँसी मिल ही गयी।

बरबास बच गया। यही बात सब से मुख्य और अच्छी है। इस पर बरबास ने उस मोटी स्त्री का चुम्बन ले लिया।

बरबास के साथ जो तरुणी युवती आयी थी वह अब तक सिकुड़ी हुई थी। उसको देखने से ऐसा प्रतीत होता था कि उसका ध्यान उपस्थित व्यक्तियों की बातों की ओर न था। लेकिन जब उस विचित्र व्यक्ति के प्रसङ्ग में बातचीत चल पड़ी तो उसने बड़े ध्यान से उनकी बातों को सुनना शुरू कर दिया। इसके बाद वह अकस्मात उठ खड़ी हुई और उसने अपने व्यवहार से सब को आश्चर्य में डाल दिया। वह बरबास की ओर भय भरी दृष्टि से देखती हुई एकदम सड़क पर चली गयी और वहीं से रुद्ध कण्ठ से उसने कहा :—

बरबास !

उसका चेहरा फक सफेद हो गया था।

नाम पुकारने का कृत्य ही यदि हुआ होता तो उसमें कोई विशेषता नहीं थी किन्तु उसके स्वर में ऐसी विचित्रता थी कि सब लोगों ने बड़े ही आश्चर्य से उसकी ओर देखा। किसी की समझ में यह नहीं आ रहा था कि इससे उसका अभिप्राय क्या था। बरबास भी बड़ा अजीब-सा दिग्व-लायी पड़ने लगा। उसकी दृष्टि कहीं ठहर नहीं पा रही थी। वह लगातार इधर-उधर देख रहा था। कभी यहाँ, कभी वहाँ और उसका साहस किसी अन्य व्यक्ति की ओर देखने का नहीं हो रहा था। उसे पता नहीं ऐसा क्यों हो रहा था। कुछ भी हो उस समय उसे सब से अच्छी बात यही लगी कि इस बात की ओर कोई ध्यान न दिया जाय। बरबास के अच्छे साथी होने के सम्बन्ध में कोई चाहे जो कुछ कहे लेकिन यह सच था कभी-कभी लोग उसे बिलकुल समझ नहीं पाते थे। यह कोई भी नहीं जानता था कि कब कौन उसके साथ है।

वह मोटी स्त्री अब थोड़ी दूर खिसक कर बैठ गयी थी लेकिन बरबास उसकी ओर बराबर अपनी जलती हुई निगाह से देखता ही रहा।

इसके बाद सहसा मोटी स्त्री उठ कर चली गयी और बरब्बास के लिए कुछ खाने को ले आयी। उसे ऐसा लगा था कि बरब्बास अवश्य ही भूखा है। उसने एक रोटी, मांस और नमक बरब्बास के सामने लाकर रख दिया। बरब्बास ने बहुत थोड़ा-सा खाया और बचा हुआ भाग अपनी साथिन को दे दिया। वह खाने की उन वस्तुओं पर ऐसे टूट पड़ी जैसे शिकार पर सिंह टूटता हो। उसने जरा-सी देर में ही सब कुछ चट कर डाला और खाने के बाद तुरन्त घर से निकल कर बाहर चली गयी और देखते ही देखते लापता हो गयी।

पास ही बैठे अन्य लोगों की पूछने की इच्छा हो रही थी कि यह कैसी स्त्री है और उन्होंने पूछा भी लेकिन उन लोगों को कोई उत्तर नहीं मिला। यह उसी की विशेषता थी। व्यक्तिगत मामलों को रहस्य के आवरण में रखा करता था।

वह धर्म-प्रचारक किस प्रकार के चमत्कार किया करता था, उसने एक स्त्री की ओर देखते हुए प्रश्न किया; और वह क्या प्रचार किया करता था?

उन्होंने बतलाया कि यह रोगियों को अच्छा कर देता था और बुरी आत्माओं (भूतों और चुड़ैलों) से पीड़ितों को मुक्त करा देता था। कुछ लोगों का यह भी कहना था कि वह मृतकों को भी जीवित कर दिया करता था किन्तु सत्य कोई नहीं जानता। लेकिन मृतकों को जीवित करना तो असम्भव-सी बात है। किसी ने यों ही उड़ा दी होगी। वह क्या प्रचार करता था इस सम्बन्ध में किसी को कुछ भी नहीं मालूम है। लेकिन उन लोगों में से एक ने एक कहानी सुनी है। यह कहानी एक बहुत बड़ी दावत में सुनायी गयी थी। दावत एक बड़े अमीर आदमी ने किसी शादी अथवा ऐसे ही किसी समारोह के अवसर पर दी थी। बहुत-सा खाने-पीने का सामान बनाया गया था—लेकिन उस दावत में कोई मेहमान ही नहीं आया—इसलिए आदेश हुआ कि सड़क पर जो भी

आदमी जाता मिले उसी को बुला लो। इस प्रकार के निमन्त्रण पर भिखमंगों और गरीबों की एक बहुत बड़ी जमात इकट्ठी हो गयी। वे सब फटे और निहायत गन्दे कपड़े पहने थे। उन भिखमंगों तथा गरीबों को देख कर वह अमीर बड़ा क्रुद्ध हुआ या शायद उसने कहा कोई बात नहीं है। बात बतलाने वाली स्त्री भूल-सी गयी कि वह क्या कह रही थी। बरबास इस बीच पूरी कहानी बड़े ध्यान से सुन रहा था। और जब एक स्त्री ने कहा वह अवश्य ही मसीहा रहा होगा तो बरबास ने अपनी लाल दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए ध्यानावस्थित अवस्था में ही दोहराया—मसीहा ?......नहीं, वह मसीहा नहीं था, उसने आप ही आप गुनगुनाते हुए थोड़ी देर बाद कहा :

—निस्संदेह वह आदमी मसीहा नहीं था। यदि वह मसीहा होता तो वे लोग उसे कदापि सूली पर न चढ़ा पाते। यदि वे दोगले वैसा करने की कोशिश भी करते तो स्वयं ही मारे जाते। क्या वह मसीहा का अर्थ भी नहीं जानती !

—बेशक, मसीहा को सूली नहीं दी जा सकती थी। यदि उन्हें कोई सूली देता भी तो वे उसे उतर कर मार डालते।

—क्या कभी तुमने ऐसे मसीहा का नाम भी सुना है जो खुद ही सूली पर चढ़ जाय ?

बरबास अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरता हुआ चुपचाप ही बैठा रहा। जिस कमरे में वह बैठा था उसकी जमीन कच्ची थी। वह उसी पर नीचे की ओर दृष्टि डाले बैठा था।—नहीं, वह मसीहा नहीं था......

अरे यार शराब पियो अब, क्या गुमसुम बैठे सोच रहे हो; बरबास के साथी ने उसकी पसलियों में उँगलियाँ चुभाते हुए कहा। उसके लिए ऐसा करना अजीब-सी बात थी क्योंकि बरबास से इस प्रकार का परिहास करने की साधारणतः किसी को हिम्मत नहीं होती थी, फिर भी वह मजाक कर ही गया था। और बरबास ने सचमुच प्याला उठा कर शराब

पी ली। शराब की अन्तिम बूँद भी समाप्त हो जाने पर उसने ओठों से प्याला अलग हटा कर रख दिया लेकिन इन सब क्रियाओं से उसकी भावमग्न मुद्रा में कोई अन्तर नहीं आया। उसने सारा कार्य विचारों द्वारा सम्मोहित व्यक्ति की भाँति कर डाला। उस स्त्री ने जल्दी से प्याले में शराब फिर भर दी और दूसरा प्याला भी बरब्बास को पिला दिया। शराब का कुछ न कुछ प्रभाव होना ही था। वह होता रहा लेकिन उसकी व्यग्रता फिर भी दूर नहीं हुई थी। पास बैठे साथी ने फिर कोहनी मारी।

—चलो भाई, और पियो। पीकर अपनी परेशानी दूर करो। क्या तुम्हें अपनी रिहाई से खुशी नहीं हुई है? क्या तुम्हें यह खुशी नहीं हो रही कि सूली पर लटकने के बजाय तुम यहाँ आराम से बैठे शराब पी रहे हो। •उससे तो यहाँ अच्छा ही है। बरब्बास सोचो तो, तुम बच गए:— तुम्हारे प्राण अब सुरक्षित हैं। तुम जिन्दा हो!

—हाँ, हाँ! क्यों नहीं, बरब्बास ने कहा, सो तो है ही, और क्या सो तो है ही......।

इस प्रकार किसी तरह उन लोगों ने बरब्बास का शून्य दृष्टि से ताकते रहना बन्द कर दिया। वे शराब पीते हुए बातें करने लगे। बरब्बास भी पहले की अपेक्षा अधिक सामान्य हो गया था। उन लोगों ने सोचा अब बरब्बास में कोई विक्षिप्तता शेष नहीं रह गयी है।

लेकिन गपशप के दौरान में बरब्बास ने अजीब-सा प्रश्न किया। उसने पूछा, आज दिन में यकायक जो अँधेरा हो गया था उसके बारे में उनका क्या ख्याल है? आकस्मात् सूरज क्यों छिप गया और अँधेरा क्यों छा गया था?

—अँधेरा? कैसा अँधेरा? उन लोगों ने आश्चर्यान्वित होकर पूछा। अँधेरा•कब हुआ था? क्या हुआ था? कब?

—करीब १२ बजे।

—छिः......क्या बेवकूफी की बात है। किसी ने अँधेरा नहीं देखा।

बरबास ने अविश्वास भरी दृष्टि से सबकी ओर देखा, बड़ी परेशानी की हालत में। उन सब ने उसे आश्वस्त किया। अँधेरा नहीं हुआ था। जेरूसलम भर में किसी ने अँधेरा होते नहीं देखा था। क्या वह सचमुच यह समझता है कि अँधेरा हुआ था—दिन दोपहर में? अजीब-सी बात है। यदि उसका सचमुच यह ख्याल हो कि अँधेरा हुआ था तो इसका कारण यही है कि उसकी आँखों में कुछ खराबी आ गयी है। अँधेरी काल-कोठरी में रहने के बाद प्रकाश में आने से ऐसा भ्रम हो जाना स्वाभाविक है। हाँ, शायद यही कारण है। उस मोटी स्त्री ने भी कहा कि यही कारण होगा। आँखों का प्रकाश की अनभ्यस्त होने के कारण ऐसा भ्रम हो जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। प्रकाश से उसकी आँखें चौंधिया गयी होंगी।

एक बार उसने सब पर अविश्वास के भाव से निगाह डाली, लेकिन इसके बाद अपने आपको कुछ मुक्त-सा अनुभव किया। उसने एक अँगड़ाई ली और फिर हाथ बढ़ा कर प्याला उठा लिया तथा शराब का बड़ा-सा घूँट गले से नीचे उतार लिया। इसके बाद उसने शराब के प्याले को मेज पर रखने के बजाय अपने हाथ में ही रखा। तत्काल ही उसे शराब फिर दी गयी। उसके साथ और सब ने भी शराब पी। अब उसे शराब का मजा आने लगा था। वह शराब पाने पर जिस प्रकार पहले पिया करता था उस समय भी पहले की भाँति ही सामान्य ढङ्ग से पीने लगा। वे देख रहे थे कि मदिरापान के कारण बरबास की मुद्रा सुधर गयी है और वह स्वाभाविक रूप से बातचीत करने लगा है। वह अधिक बातचीत तो नहीं कर रहा था लेकिन थोड़ी-बहुत वार्ता में उसने बतलाया कि कारागृह का बन्दी जीवन कैसा होता है। हाँ, कारावास में जीवन रहते ही नरक की दशा का अनुभव प्राप्त हो गया था। इसमें कोई सन्देह नहीं

पहले वह कुछ थोड़ा-सा विक्षिप्त हो गया था। क्या भाग्य है! पहले तो उसे सूली देने के लिए बाहर निकाला गया लेकिन बाद में उसे छोड़ दिया गया। और तो और—उन सब में उसी को छोड़ा गया। यह कितना सौभाग्य है! वह भी यही समझता है। उन सब ने उसकी पीठ थपथपायी। गुलगुलाया, मुसकराए और सब ने उसके साथ शराब पी। वह भी उन लोगों के साथ मुसकराता और बीच-बीच में हँसता रहा। ज्यों-शराब की मात्रा बढ़ती गयी उसकी गम्भीरता घुलती गयी, वह अधिकाधिक प्रसन्न होता गया। उसने गरमी की वजह से अपने कपड़े ढीले कर दिए। इसके बाद वह लेट गया और सब की तरह आराम करने लगा। उसने अपने समीप बैठी स्त्री के गले में हाथ डाल कर उसे अपने पास खींच लिया। वह स्त्री भी हँसने लगी तथा उसके पास आकर उसकी गरदन पकड़ कर झूल गयी। लेकिन उस मोटी स्त्री ने आकर बरबास के पार्श्व में बैठी स्त्री को हटा दिया और कहा कि अब उसका प्रियतम राचमुन्च अपनी स्वाभाविक मुद्रा में आ गया है। भयंकर कारावास जीवन के बाद उसे अपनी मुक्ति की अवस्था में जैसा प्रसन्न होना चाहिए वैसा ही वह अब है। उस स्त्री ने बरबास को अपने पास खींच लिया और उसके सारे मुँह पर अपने मोटे ओठों से चुम्बन जड़ दिये। गरदन के पृष्ठ भाग पर गुलगुलाते हुए उसने बरबास की लाल दाढ़ी पर भी क्रीड़ा मुद्रा में कई बार हाथ फेर दिये। वे सब बरबास के इस परिवर्तन से—उसके स्वाभाविक रूप में आ जाने से—बड़े प्रसन्न थे। अब वे सब बड़ी खुशियाँ मना रहे थे। शराब पीते, आपस में चुहलबाजियाँ करते और हर बात में एक दूसरे से सहमत होते हुए बातें करने में उनका समय कट रहा था। इससे अधिक अच्छा मनोरञ्जन उनकी समझ में और कुछ नहीं हो सकता था। जिस आदमी ने महीनों से शराब नहीं पी थी और स्त्री को स्पर्श भी नहीं किया था वह भी इस अवसर का पूरा लाभ उठा रहा था। उन लोगों में से कुछ ने अनुभव किया कि पहाड़ों को वापस लौट जाने का समय

अब निकट आ गया है और उन्हें जेरूसलम में होने का पूरा फायदा उठा लेना चाहिए तथा मनोरञ्जन कर के बरबास की रिहाई का आनन्द भी ले लेना चाहिए। उन्होंने खट्टी और कड़ुवी शराब और पी जिससे उनका नशा बढ़ता ही गया। उन लोगों ने उस मोटी स्त्री को छोड़कर शेष सब स्त्रियों के साथ छेड़छाड़ की तथा बीच-बीच में उनमें से किसी न किसी को प्रत्येक पुरुष एक-एक कर के बगल वाले पर्दे के पीछे ले गया। वहाँ से वापस लौटने पर उन सबका चेहरा लाल हो जाता था किन्तु वे सब फिर शराब पीने और शोर मचाने में जुट जाते थे। उन्होंने इच्छा भर के जितना चाहते थे, उतना मनोरञ्जन किया।

उन लोगों का यही क्रम संध्या तक चलता रहा। अँधेरा अधिक बढ़ जाने पर वे दोनों आदमी उठ खड़े हुए और उन्होंने कहा, यही समय उनके प्रस्थान के लिए सर्वाधिक उपयुक्त है। उन्होंने अपने चर्मवस्त्रों को कंधों पर डाल लिया और उनके नीचे अपने हथियार छिपा लिए। सब से बिदा .लेकर वे दरवाजे से सड़क पर चले गए और और सड़क पर धीरे-धीरे चलते हुए आगे जाकर नजर से ओझल हो गये। शीघ्र ही वहाँ बैठीं अन्य तीन स्त्रियाँ परदे के पीछे चली गयीं। वे क्लान्त थीं। इसलिए नींद आते उन्हें देर न लगी। वे शीघ्र ही खर्राटे भरने लगीं। इस प्रकार कमरे में जब वह मोटी स्त्री और बरबास ये दोनों आदमी ही रह गए तो स्त्री ने कहा, क्या अब हम लोगों का एक दूसरे को परस्पर आनन्द प्रदान करना उचित न होगा। क्या बरबास की इतने दिनों तक कारावास में रहने के बाद भी कोई इच्छा नहीं जाग रही है। जहाँ तक उसका सम्बन्ध है वह इतने दिनों तक कारावास में दुख भोगने वाले और फिर सूली से बच आने वाले व्यक्ति को अधिक से अधिक सुख देने के लिए तत्पर है। इसके बाद वह स्त्री बरबास को अपने कमरे में ऊपर ले गयी। उस कमरे में ताड़ के वृक्ष के पत्तों से बना एक बिस्तर बिछा था। वह बिस्तर गर्मियों के लिए ही था। वे दोनों उस पर लेट गए। उस मोटी स्त्री ने बरबास को

अपने आलिंगन पाश में आबद्ध कर लिया और वह पागल-सा हो उठा। उसने भी स्त्री के मांसल शरीर को इतने बल से कस लिया जैसे वह उसे कभी छोड़ना ही नहीं चाहेगा। उन दोनों को पता ही नहीं चला कि आधी रात कब बीत गयी ?

अन्ततोगत्वा वे दोनों भी क्लान्त हो गये। स्त्री ने करवट ले ली और बरबास ने भी। दोनों ही तुरन्त प्रगाढ़ निद्रा में डूब गये। लेकिन कुछ ही देर में बरबास की आँख खुल गयीं। उसने देखा पार्श्ववर्ती स्त्री निद्रामग्न थी लेकिन उसका सारा बदन पसीने-पसीने हो रहा था। बरबास लेटा रहा और लेटे-लेटे उस व्यक्ति का ध्यान आया जो बीच वाली सूली पर लटकाया गया था। अब वहाँ सूली वाले पर्वत पर क्या हो रहा होगा ? इसके बाद उसे ध्यान आया अँधेरे का, क्या सचमुच उस समय अँधेरा हुआ था, वह सोचने लगा। क्या यह केवल उसकी कल्पना मात्र ही थी ? या फिर ऐसा केवल गोलगोथा में ही हुआ था ? यहाँ शहर में किसी ने कुछ नहीं देखा-सुना। कुछ भी हो वहाँ अँधेरा जरूर हुआ था। वे सैनिक भी तो भयभीत हो गये थे ? क्या यह भी उसने कल्पना ही की थी ? नहीं, उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। वह नहीं जान पा रहा था कि इन सबका अर्थ क्या है ?......

उसने सूली पर लटकाये उस व्यक्ति का पुनः ध्यान किया। उसकी आँखें बिलकुल खुली थीं। नींद नहीं आ रही थी। वह बार-बार बगल में सोई उस स्त्री की मांसलता को अनुभव कर रहा था। छत की सूखी पत्तियों से बने छप्पर में से उसे आकाश, गहरा नीला लेकिन काले अँधेरे में डूबा दिखलायी पड़ रहा था। उसे कोई तारा नहीं दीखा। केवल अँधेरा ही अँधेरा दिखा।

क्योंकि गोलगोथा तथा अन्य सब स्थानों पर उस समय अँधेरा ही अँधेरा था।

३

दूसरे दिन बरब्बास शहर में निकला तो बहुत से लोगों से मिला। इनमें उसके शत्रु-मित्र दोनों ही थे। अधिकांश को उसे देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ और कुछ लोग तो यह समझ बैठे कि वह बरब्बास की प्रेतात्मा है। इससे उसके हृदय में उन लोगों के प्रति बड़ी अरुचि एवं रोष की भावनाएँ उत्पन्न हुईं। क्या इन लोगों को यह नहीं मालूम कि मैं छोड़ दिया गया हूँ? ये लोग क्या यह नहीं जानते कि मुझे सूली पर नहीं लटकाया गया?

सूरज चढ़ता जा रहा था। प्रकाश की चमक उसे असाधारण लग रही थी और वह अपनी आँखों की चमक सँभाल पाने योग्य बना नहीं पा रहा था। क्या कारागार में उसकी आँखें सचमुच खराब हो गयीं? जो भी हो, वह धूप बचाने लगा, और अधिकांशतः छाया में ही चलने लगा। जब वह उपासनागृह के समीप पहुँचा तो मेहराबदार ऊँचे सिंह-द्वार के नीचे पहुँच कर बैठ गया और कलात्मक कार्यों को देखने लगा। इससे उसकी आँखों को कुछ विश्राम मिला। इससे और उसे अच्छा भी लगा।

उसके आने के पहले से ही उस स्थान पर दो-तीन व्यक्ति बैठे थे। वे दीवाल की ओर खिसक गये। वे धीरे-धीरे बातें कर रहे थे और उनके चेहरों की मुद्रा से ऐसा लगा कि उन्हें आगन्तुक का उनके समीप ही आकर बैठ जाना पसन्द नहीं आया। वे लोग उसकी ओर कटाक्ष करते रहे और इसके बाद हर बार उनकी आवाज और धीमी हो जाती थी। वह कभी-कभी एकाध शब्द कान में भनक पड़ जाने पर सुन लेता था लेकिन उससे उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। लेकिन इससे क्या होता है? उन लोगों की गुप्त बातचीत से उसका क्या सम्बन्ध हो ही सकता है। जो बातचीत कर रहे थे उनमें से एक तो बरब्बास की ही

आयु का था, उसकी दाढ़ी भी लाल थी, दाढ़ी ही नहीं सिर के बाल भी। वे काफी बढ़े हुए थे और नीचे चेहरे पर आकर दाढ़ी से मिले हुए थे। उसकी आँखें नीली थीं। आँखों के नीलेपन ने उस व्यक्ति की मुख मुद्रा असाधारणतः सादा तथा कुछ जिज्ञासा का भाव लिए हुए बना दिया था। शेष चेहरा मांसल और बड़ा था। उसे देखने से ऐसा प्रतीत होता था कि वह बिना कटा-छँटा सच्चा हीरा है। वेशभूषा से ज्ञात होता था कि वह कोई कारीगर है। उसके हाथों की कठोरता से भी ऐसा ही प्रतीत होता था। बरब्बास के लिए इसका कोई भी महत्व न था कि वह कौन है और कैसा लगता है। लेकिन वह ऐसे व्यक्तियों में से था जिसकी ओर लोगों का ध्यान अनायास ही चला जाता था। इतने पर भी यह पता लगाना कठिन था कि उसमें विशेष बात क्या है? केवल नीली आँखें ही उसकी एक विशेषता हो सकती थीं।

वह आदमी अपनी सिट्टीपिट्टी भूल गया था। वास्तविकता यह थी कि उन सबकी यही हालत थी जो उसके पास बैठे थे। ऐसा लगता था कि वे लोग किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में बातें कर रहे थे जो मर चुका था। बीच-बीच में वे लोग गहरी साँसें भी लेते जाते थे। लेकिन यदि सचमुच ही ऐसी बात थी तो वे शोक मनाने का भार स्त्रियों को क्यों नहीं सौंप देते जिनका काम ही यही होता है? अकस्मात् बरब्बास ने सुना मृत व्यक्ति को सूली दी गयी थी और वह भी कल ही दी गयी है। कल......? उसने उनकी बातें सुनने का और प्रयत्न किया लेकिन वह असफल रहा क्योंकि उन लोगों ने अपना स्वर और भी मन्द कर लिया था। बरब्बास ने सोचा ये लोग किसके बारे में बातें कर रहे हैं? सामने सड़क पर ही लोग आ-जा रहे थे। उनकी पदचापों का शोर एक भी शब्द सुनना असम्भव बनाये दे रहा था। जब कुछ शान्ति हुई तो उसे ऐसा लगा जैसे वे लोग उसी के सम्बन्ध में बातें कर रहे हैं। वही जो...

कैसी अजीब......वह उसके बारे में स्वयं ही कुछ समय पूर्व सोच

रहा था। जब वह मेहराबदार सिंहद्वारों से होता हुआ खुले आँगन में आ गया तो उसे याद आ गयी कल की घटना। यह वही स्थान है जहाँ उस व्यक्ति ने सूली को आगे ले चलने में असमर्थता प्रकट की थी। और अब यही लोग उस व्यक्ति के सम्बन्ध में यहाँ पर बैठे बातें कर रहे हैं... कैसा अजीब-सा लग रहा है। इन लोगों का उससे क्या सम्बन्ध है? और ये लोग धीरे-धीरे फुसफुसा-फुसफुसा कर क्यों बातें करते हैं? वह बड़ा-सा लाल दाढ़ी वाला आदमी ही ऐसा था जिसकी आवाज कभी-कभी सुनाई दे जाती थी—शायद इसलिए कि उसका शरीर ही धीरे-धीरे बोलने के लिये नहीं बनाया गया था।

क्या ये लोग कल के अँधेरे...हाँ, उस अँधेरे के बारे में भी कुछ बातचीत कर रहे हैं? जब उस व्यक्ति की मौत हुई तब क्या अँधेरा हुआ था?

वह बड़े ध्यान से और इतनी एकाग्रचित्तता से उन लोगों की बात सुनने लगा कि उन लोगों ने भी उसकी उत्सुकता को अवश्य ही समझ लिया होगा। वे अकस्मात् एकदम चुप हो गये और बड़ी देर तक बिना एक भी शब्द बोले बैठे रहे। केवल कभी-कभी कनखियों से उसकी ओर देख भर लेते थे। इसके बाद उन्होंने कानों में फिर आपस में ही कुछ कहा-सुना जिसका एक अक्षर भी बरब्बास नहीं समझ पाया। थोड़ी देर बाद उन लोगों ने लाल दाढ़ी वाले आदमी से विदा ली और चले गये। वे चार थे लेकिन बरब्बास को उनमें से कोई भी अच्छा न लगा।

बरब्बास अब अकेला रह गया था। उसके पास केवल भीमकाय व्यक्ति बैठा रह गया था। बरब्बास उस व्यक्ति से बात तो करना चाहता था लेकिन वह एक अजीब असमंजस की स्थिति में पड़ा हुआ था। वह स्थिति यह थी कि आखिर बातचीत आरम्भ कैसे की जाय। वह आदमी अपने ओठों के दाँतों से दबाये बैठा था और कभी-कभी सिर हिला देता था जैसा कि साधारण ग्रामीण जनों का स्वभाव होता है। वह भी जो कुछ सोच

रहा था वह सब कुछ उसके अङ्ग-प्रत्यङ्ग से प्रकट हो रहा था। अन्त में हारकर बरबास ने ही उस व्यक्ति से पूछा कि वह किसके सम्बन्ध में इतनी चिन्ता के साथ विचार कर रहा है। इस प्रश्न पर वह व्यक्ति परेशान-सा दिखलाई पड़ने लगा और उसने अपनी गोल-गोल, नीली-नीली आँखों को ऊपर उठाकर बरबास की तरफ देखा। थोड़ी देर तक लगातार बरबास को देखने के उपरान्त उस व्यक्ति ने बरबास से पूछा कि क्या वह जेरूसलम का निवासी है। उसने निषेधात्मक उत्तर दिया। इस पर बरबास से उस भीमकाय व्यक्ति ने पुनः कहा कि उसे ऐसा उसकी बोली से प्रतीत हुआ था। क्या यह सत्य नहीं है? बरबास ने उत्तर दिया कि उसका घर जेरूसलम से बहुत दूर नहीं है। वह नगर के पूर्व में पहाड़ों पर जो गाँव बसे हैं उन्हीं में से एक गाँव का रहने वाला है। उस आदमी ने कहा कि वह जेरूसलम के आदमियों पर तिल भर भी विश्वास नहीं करता। यहाँ सबके सब पक्के डकैत और बदमाश हैं। बरबास थोड़ा सा मुसकरा दिया और बोला वह उसकी इस बात से सहमत है। और तुम कहाँ के रहने वाले हो? बरबास ने उस व्यक्ति से पूछा जो उससे बात कर रहा था। 'मैं; मैं कहाँ का रहने वाला हूँ?' वह व्यक्ति बोला, 'मेरा घर तो यहाँ से बहुत—बहुत दूर है। उस व्यक्ति ने अपनी बाल-सुलभ दृष्टि से स्थान की दूरी प्रकट करने की चेष्टा की। उसने यह भी कहा कि वह शीघ्रातिशीघ्र अपने घर को वापस चला जाना चाहता है। वह अपने घर पहुँचने के लिए बड़ा उत्सुक है। उसने यह भी कहा कि वह बरबास पर बड़ा विश्वास करता है। इसीलिये बतला भी रहा है कि अब उसे अपने घर वापस पहुँचने की आशा नहीं है। अब उसकी वह पूर्व कल्पना मूर्तिमती न हो सकेगी जिसमें उसने यह सोचा था कि वह अपने ही गाँव में जिन्दा रहेगा और अपने ही गाँव में मरेगा। बरबास ने पूछा, 'क्यों? उसे ऐसा करने से रोकने वाला कौन है? क्या हर एक व्यक्ति अपना स्वामी नहीं है?'

—ओह नहीं, भीमकाय व्यक्ति ने विचारमग्न मुद्रा में उत्तर दिया, ऐसा नहीं है।

तब वह यहाँ क्या कर रहा है ? बरबास से यह पूछे बिना नहीं रहा गया। प्रश्न का उत्तरकर्ता ने तत्काल जवाब नहीं दिया। इसके बाद वह कुछ अनिश्चयात्मक ढङ्ग से बोला, इसका कारण उसके प्रभु हैं।

—प्रभु ?

—हाँ, क्या तुमने प्रभु के बारे में कुछ भी नहीं सुना ?

—नहीं ?

—ओह। वही जिनको कल गोलगोथा पहाड़ी पर सूली दे दी गयी थी ?

—सूली ? नहीं उसने इस बारे में कुछ नहीं सुना। क्यों ? ऐसा क्यों हुआ ?

—ऐसा क्यों हुआ ? इसलिये कि ऐसा होना ही बदा था।

—बदा था ! क्या यह प्रभु के भाग्य में बदा था कि उनको सूली दी ही जायगी ?

—और क्या ? बिलकुल सच है। धर्म-पुस्तकों में तो यह लिखा ही था। इसके अलावा स्वयं महाप्रभु ने इस सम्बन्ध में भविष्यवाणी कर दी थी।

—अच्छा ? क्या उन्होंने भविष्यवाणी कर दी थी और क्या धर्म-पुस्तकों में भी यह लिखा था ? जो कुछ हो—उसे व्यक्तिगत रूप से इस सम्बन्ध में कोई जानकारी नहीं थी क्योंकि वह धर्म-ग्रन्थों के सम्पर्क में नहीं है।

—हाँ, सो तो मैंने भी धर्म-पुस्तकें नहीं पढ़ीं हैं। लेकिन सुना अवश्य है।

बरबास ने इस पर अपना कोई संदेह प्रकट नहीं किया। लेकिन वह वह बराबर सोचता रहा—आखिर ऐसा क्यों हुआ। भविष्यवाणी तथा

सूली दिये जाने में क्या सम्बन्ध हो सकता है ? यह सभी कुछ कैसा अजीब सा लगता है ।

—हाँ...ऐसा ही तो मुझे भी लगता है । मैं भी तो ऐसा ही सोचता हूँ । मेरी समझ में नहीं आता कि उन्हें मरना क्यों पड़ा । और सो भी ऐसी भयानक गति में । लेकिन ऐसा होना ही था । यह बात होनी पहले से ही निश्चित थी । वह स्वयं इस बात को कई बार कह चुके थे । उस आदमी ने सिर झुकाकर कहा, उन्हें हमारे लिये कष्ट झेलते हुए अपने प्राणों का त्याग करना ही था ।

बरब्बास ने अपनी दृष्टि उस व्यक्ति पर डाली ।

—मरना ? हम लोगों के लिये कैसा मरना ?

—हाँ । हमारे बदले उन्हें हमारे बदले मरना था । उन्होंने निर्दोष होते हुए भी हमारे लिये इतना कष्ट सहा और ऐसी गति से प्राणत्याग किये । यह तो तुम्हें मानना ही पड़ेगा कि अपराधी और दोषी हम लोग थे—वे नहीं ।

बरब्बास सड़क की ओर ही आने-जाने वाले व्यक्तियों पर अपनी दृष्टि जमाये रहा । उसने और कुछ नहीं पूछा ।

दूसरे व्यक्ति ने अपने मन में सोचा अब प्रभु की बातों को समझना पहले से कहीं अधिक आसान हो गया है ।

'क्या तुम उन्हें भली-भाँति जानते थे ?' बरब्बास ने पूछा ।

—हाँ । क्यों नहीं । मैं उन्हें जानता था । मैं तो उनके साथ तब से था जब से उन्होंने हम लोगों के बीच घूमना-फिरना आरम्भ किया था ।

—क्या वह भी वहीं के रहने वाले थे—जहाँ के रहने वाले तुम हो ।

—और उसके बाद से हम लोग बराबर महाप्रभु के साथ ही रहे ।

—क्यों ?

—क्यों ? यह क्या प्रश्न पूछा है तुमने लेकिन क्योंकि तुम प्रभु से अपरिचित हो इसलिये यह समझना कठिन नहीं है कि तुम ऐसा क्यों पूछ रहे हो ? इससे यह प्रकट हो जाता है कि तुम प्रभु से परिचित नहीं हो।

—मैं समझा नहीं कि तुम्हारा तात्पर्य क्या है ?

—देखो, सुनो ! वे बड़े शक्तिवान थे। वे जिस व्यक्ति से कह देते थे तुम मेरे साथ चलो वही उनके पीछे चल देता था। उनकी करुणा-पूर्ण आज्ञा का पालन करने के सिवा किसी के पास अन्य कोई चारा ही शेष न रह जाता था। यदि तुम उन्हें जानते होते तो समझते कि वह शक्ति कितनी जबर्दस्त थी। यदि वह तुमसे अपने पीछे आने को कह देते तो तुम भी सिवा उनके पीछे चलने के और कुछ नहीं कर सकते थे।

बरबास कुछ देर बिलकुल चुपचाप बैठा रहा। इसके बाद वह बोला :

—यदि तुम जो कुछ कहते हो—वह सब ठीक है तो वह व्यक्ति सचमुच बड़ा असाधारण है। लेकिन सूली पर चढ़ जाने से तो ऐसा लगता है कि उनके पास कोई विशेष शक्ति नहीं थी।

—ओह, ऐसा नहीं है। तुम गलत समझे। मैंने भी पहले ऐसा ही अनुभव किया था क्योंकि यह घटना ही इतनी भयंकर थी। पहले तो मैं एक क्षण के लिये भी विश्वास न कर सका था। लेकिन धीरे-धीरे इस सबका अर्थ मेरी समझ में आ गया। और अब लगता है कि मैं इस लज्जापूर्ण मृत्यु का कारण समझ गया हूँ। मैंने और लोगों से भी इस सम्बन्ध में बातचीत की और ऐसे लोगों से भी पूछा जो धर्म-पुस्तकों को अच्छी तरह जानते हैं। देखो बात यह है कि वे निर्दोष थे। उन्होंने निर्दोष होते हुए भी सूली के सारे कष्ट इसलिये झेले कि हम सब अपराधी थे। वे निर्दोष होते हुए भी स्वर्ग से हमारी इस दुनियाँ में केवल इसीलिये

तो आये कि हम सबका भला कर सकें। वे नरक में भी हम लोगों को पापमुक्त करने के लिये ही गये। लेकिन वे वापस लौटेंगे और उनकी यश-ज्योति सारे संसार में बिखर जायगी। वे मर कर पुनः जी उठेंगे। हमें इसका पूरा विश्वास है।

—मरकर पुनः जी उठेंगे ? क्या बेवकूफी की बात है ?

—बेवकूफी नहीं, यह सत्य है। बहुत से लोगों का तो विश्वास है कि वे कल प्रातःकाल जी जायँगे क्योंकि उनके प्राण विसर्जन का कल तीसरा दिन होगा। यह कहा जाता है कि उन्होंने हम लोगों के लिए नरकाग्नि में भी तीन दिन रहना स्वीकार कर लिया था हालाँकि मैंने उन्हें ऐसा कहते स्वयं कभी नहीं सुना। लेकिन ऐसा अनुमान किया जाता है कि उन्होंने ऐसा कहा था कल सूर्योदय के समय......

बरबास ने अपने कन्धे हिलाए।

—क्या तुम विश्वास नहीं करते ?

—नहीं।

—नहीं, नहीं...तुम विश्वास भी कैसे कर सकते हो जब तुम उन्हें मानते ही नहीं। लेकिन हममें से बहुतों का ऐसा विश्वास है। और वे स्वयं मरकर क्यों नहीं जी सकते जब उन्होंने अनेक मृतकों को जीवित कर दिया ?

—मृतकों को जीवित कर दिया ? नहीं वे ऐसा नहीं कर सकते।

—हाँ, मेरी बात तो मानो। यह सच है। उनमें यह शक्ति थी। वह कुछ भी कर सकते थे, उनकी इच्छा मात्र ही की हर बात में आवश्यकता रहती थी। वे चाहते तो उस शक्ति का अपने लिये भी प्रयोग कर सकते थे किन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया। और इतनी शान्ति होते हुए भी उन्होंने अपने आपको सूली क्यों दे दी जाने दी......? हाँ, हाँ, मैं जानता हूँ।...यह समझना बहुत आसान नहीं है। तुम्हारी यह बात मैं

मानता हूँ। मैं तो एक सीधा-सादा आदमी हूँ। यह सब कुछ समझना इतना आसान नहीं है। यह तुम मान सकते हो।

—क्या तुम्हें भी उनके पुनः जीवित हो जाने का विश्वास नहीं है?

—मैं तो विश्वास करता हूँ। मैं तो उन लोगों की बातों पर पूरी तरह विश्वास करता हूँ। मैं मानता हूँ कि प्रभु वापस आयेंगे और उनकी शक्ति तथा यश का प्रकाश चारों ओर फैल जायगा। मैं इस मामले में उन लोगों का पूरा विश्वास करता हूँ जिन्होंने धर्म-पुस्तकें पढ़ी हैं। मैं समझता हूँ वे मुझसे अधिक जानते हैं। इसलिये मुझे उनकी बात माननी चाहिए। वह एक महान क्षण होगा। वे लोग तो कहते हैं कि उसी समय से एक नया युग आरंभ हो जायगा। उनके राज्य में ईश्वर-पुत्र का राज्य होगा।

—ईश्वर-पुत्र का?

—हाँ वे अपने आपको यही कहते थे।

—ईश्वर-पुत्र......

—हाँ, उन्होंने ऐसा ही कहा था...लेकिन कुछ लोगों का ऐसा विश्वास है कि...नहीं मैं नहीं कहूँगा।

बरबास और पास आ गया।

—वे लोग क्या विश्वास करते हैं?

—वे कहते हैं कि वे साक्षात् ईश्वर के ही पुत्र अर्थात् ईश्वर के ही अंश हैं।

—ईश्वर के पुत्र।

—हाँ, लेकिन निश्चय ही यह सत्य नहीं हो सकता। यह बात तो किसी को भी भयभीत कर सकती है, कम से कम मैं तो बहुत ही डर जाऊँगा यदि वे सचमुच वापस लौट आयेंगे।

बरबास काफी उत्तेजित हो उठा था।

—लोग इस तरह की बातें किस प्रकार करते हैं यह मेरी समझ

में ही नहीं आता। ईश्वर के पुत्र! ईश्वर के पुत्र को सूली पर चढ़ा दिया गया! क्या तुम्हें यह बात असंभव नहीं जान पड़ती।

—मैं कह चुका हूँ कि यह सत्य नहीं है। यदि तुम चाहो तो मैं तुम्हारे लिये यह बात दोहरा सकता हूँ।

—कैसे पागल हैं वे लोग जो ऐसी बातों में विश्वास करते हैं। जैसे-जैसे बरब्बास बोलता जाता था। वैसे-वैसे उसका चेहरा लाल होता जाता था। आँख के नीचे घाव का निशान था। वह मुख की लालिमा के साथ ही अधिकाधिक काला होता आ रहा था। वह कह रहा था ईश्वर का पुत्र। वह व्यक्ति कदापि ईश्वर-पुत्र नहीं हो सकता था। क्या तुम कल्पना करते हो कि ईश्वर-पुत्र पृथ्वी पर आयेगा। और वह तुम्हारे चारों ओर धर्म का प्रचार आरम्भ कर देगा।

—ओह क्यों नहीं? ऐसा होना बिलकुल संभव है। उतना ही संभव जितना अन्यत्र कहीं भी हो सकता है। मैं मानता हूँ कि हमारे गाँव के आस-पास का भाग संसार का एक बहुत छोटा सा कोना है। लेकिन आखिर किसी एक जगह तो उनको कार्य आरम्भ करना ही था।

वह व्यक्ति इतना सरल लग रहा था कि बरब्बास साधारण अवस्था में संभवतः हँस पड़ता लेकिन वह इतना उत्तेजित हो उठा था कि वह चाहते हुए भी हँस न सका। वह बारबार बकरी की खाल के अपने लबादे को मोड़ रहा था, घुमा रहा था और ऐसे बाँध रहा था जैसे वह खुल पड़ा हो। लेकिन लबादा यथास्थान था। वह गिरा नहीं था।

—उनकी मृत्यु के समय जो आश्चर्यजनक घटनाएँ हुईं वह तुमने सुनी है? और उनके बारे में भी तुमने कुछ सोचा है?

—कैसी घटनाएँ?

—क्या तुम नहीं जानते कि उनके मरते समय चारों दिशाओं में अँधेरा छा गया था।

बरब्बास ने अपनी आँखें दूसरी ओर फेर लीं।

—और चारों ओर भूकम्प आ गया तथा गोलगोथा पहाड़ी कम्पायमान हो उठी ? क्या तुम उस समय वहाँ थे ?

इसके बाद एक साथ उस व्यक्ति में कुछ परिवर्तन हो गया। उसने कुछ अनिश्चयात्मक ढंग से बरबास की ओर देखा तथा फिर उसने जमीन की ओर अपनी दृष्टि कर ली।

—नहीं, नहीं। मैं कुछ नहीं जानता। मैं उसका समर्थन नहीं कर सकता। बरबास कुछ हकला सा रहा था। इसके बाद वह बड़ी देर तक चुपचाप बैठा रहा और लम्बी-लम्बी साँसें लेता रहा।

आखिरकार बरबास के कंधे पर उस भीमाकार व्यक्ति ने हाथ रख कर कहा।

—जिस समय प्रभु ने यातनाएँ सहीं और अपने प्राण विसर्जित किये उस समय मैं उनके साथ न था। तब तक मैं भाग गया था। मैंने उनको 'छोड़ दिया था। और उसके पहले मैंने यह भी कहा था कि मेरा उनसे कोई सम्बन्ध नहीं है। यह सबसे खराब बात हुई जो मैंने यह कहा कि मेरा प्रभु से कोई सम्बन्ध नहीं है। मैं नहीं जानता वापस लौटने पर वे मेरे अपराधों को किस प्रकार क्षमा करेंगे। मैं क्या कहूँगा जब वे मुझसे पूछेंगे ?

इसके बाद उस व्यक्ति ने बड़ी दाढ़ी वाला अपना चेहरा दोनों हाथों से छिपा लिया और फूट-फूट कर रोना शुरू कर दिया। वह इधर से उधर बेचैनी के मारे घूमने भी लगा।

—मैंने ऐसी बात किस प्रकार की ? किसी भी व्यक्ति के लिए ऐसा करना कैसे सम्भव है ?

उसकी चमकती हुई नीली आँखों से आँसुओं की धारा प्रवाहित हो रही थी। आखिरकार उसने अपना सिर ऊपर उठाया तथा एक दूसरे व्यक्ति की ओर देखा।

—तुमने मुझसे पूछा था कि मुझे कौन-सी बात परेशान कर रही

है। वह बात मैंने तुम्हें बतला दी। अब तुम जानते हो मैं कैसा आदमी हूं! मेरे प्रभु और स्वामी इस बात को और भी अच्छी तरह से जानते हैं। मैं महा अभागा पापी हूं। क्या तुम समझते हो मेरे प्रभु मुझे कभी भी क्षमा करेंगे?

बरबास ने उत्तर दिया कि हाँ, वह अवश्य अपने प्रभु से क्षमा पा जायगा। बरबास उस व्यक्ति की बातों में उतनी रुचि नहीं पा रहा था लेकिन बरबास ने जो बातें कहीं उनका आंशिक कारण तो यह था कि वह स्वयं उस व्यक्ति को न जाने क्यों बहुत अधिक चाहने लगा था और अंशतः इसलिए कि वह व्यक्ति स्वयं अपने आपको महा-अपराधियों की भाँति धिक्कार रहा था जब कि उसने कुछ भी नहीं किया था। ऐसा कौन-सा आदमी है जिसने कभी एक दूसरे को धोखा न दिया हो।

उस आदमी ने बरबास के हाथ जोरों से पकड़ लिए और पूछा :

—क्या तुम्हारा विश्वास है कि प्रभु मुझे क्षमा कर देंगे। क्या सचमुच...क्या सचमुच ऐसा होगा...कहते-कहते उस आदमी की आवाज पुनः भर्रा उठी।

उसी समय आदमियों का एक झुण्ड वहाँ से गुजरा। जब उन लोगों ने देखा कि लाल बालों वाला भीमकाय आदमी बरबास का हाथ पकड़े बैठा है तो उनकी आँखों को विश्वास न हुआ। वे जल्दी-जल्दी उसकी तरफ बढ़ आये। उन्होंने फटे-पुराने कपड़े पहनने वाले व्यक्ति को सम्मान-पूर्वक इंगित करके कहा, 'क्या तुम नहीं जानते यह आदमी कौन है जिसका हाथ तुम पकड़े बैठे हो।'

'नहीं! मैं नहीं जानता,' उस आदमी ने कहा, 'लेकिन यह व्यक्ति मुझे बड़ा दयालु प्रतीत होता है और अभी ही हम लोगों के बीच बड़ी मैत्रीपूर्ण बातचीत हुई है।'

—क्या तुम्हें नहीं मालूम इसी आदमी के स्थान पर प्रभु को सूली दी गयी?

उस भीमाकार आदमी ने बरबास से अपना हाथ छुड़ा लिया और बड़ी निराशापूर्ण दृष्टि से एक दूसरे व्यक्ति की ओर देखने लगा। नवागन्तुक व्यक्ति और भी स्पष्टतापूर्वक अपनी भावनाएँ दिखलाने लगे। वे सबके सब बड़े जोरों से साँस खींचे निकल रहे थे। इससे उनका क्रोध स्पष्ट होता जा रहा था।

बरबास उठ खड़ा हुआ था और उसने उन सब लोगों की ओर अपनी पीठ कर ली थी जिससे उन लोगों को उसका चेहरा न दिखलायी पड़े।

—भाग यहाँ से कमीने! उन लोगों ने चिल्लाकर अत्यन्त क्रुद्ध भाव से कहा।

बरबास ने अपने लबादे को ठीक किया और सड़क पर जिधर वे लोग जा रहे थे उसकी विपरीत दिशा में चल दिया। इसके बाद पीछे मुड़कर उसने एकबार भी नहीं देखा।

४

वह युवती जो बरबास को छोड़ कर भाग आयी थीं उस दिन सो नहीं सकी। वह सारी रात तारों को देखती रही और सोचती रही कि क्या होने वाला है। नहीं, वह सोना चाहती ही नहीं थी। वह उस रात को देखते रहना चाहती थी।

उसने आसपास से बहुत-सा भूसा और पत्तियाँ बटोर ली थीं और उन्हीं का बिस्तर बना लिया था। वह वहाँ अकेली नहीं थी। असल में वह कोढ़ियों की बस्ती थी और सब कोढ़ी जो वहाँ रहते थे आसपास ही बिखरे हुए पड़े थे। उनका चिल्लाना और कराहना साफ-साफ उसे सुनायी पड़ रहा था। उनमें से कुछ तो वेदना की भयंकरता वश पड़े भी न रह पाते थे और उठ कर टहलने लगते थे। बस्ती भर में इतनी गन्दगी और कूड़ा फैला हुआ था कि उसकी दुर्गन्ध से नाक फटी जाती थी। लेकिन

उस युवती को उसकी आदत पड़ गयी थी। इसलिए वह उसे ऐसे बरदाश्त कर रही थी जैसे कोई बात ही न हो।

कल सूर्योदय के समय......कल सूर्योदय के समय......

कैसा अजीब सा विचार था। कल सवेरे ही सारे पीड़ित और रोगी व्यक्ति अच्छे हो जायँगे और भूखों को पेट भर खाना मिल जायगा। बात अकल्पनीय-सी लगती थी। यह सब आखिर कैसे होगा? लेकिन शीघ्र ही स्वर्ग के द्वार खुलेंगे, स्वर्गदूत उतरेंगे और सब को भोजन देंगे। कम से कम जितने गरीब हैं, उन सबका तो पेट भर ही दिया जायगा। अमीर लोग अपने घरों में पूर्ववत् खायँगे लेकिन गरीब भी भूखे-नंगे न रहेंगे। इसी रोगी बस्ती में सभी को यथेच्छा भोजन और वस्त्र दे दिया जायगा। वस्तुतः स्थिति के बदल जाने की कल्पना करना बिलकुल कठिन नहीं जान पड़ रहा था। आह! उस समय कैसा सुखद परिवर्तन हो जायगा। सब कुछ अभूतपूर्व और अश्रुतपूर्व होगा।

सम्भवतः उसे भी नये और अच्छे वस्त्र मिल जायँगे—कौन जानता है? शायद उसके वस्त्र सफेद होंगे। हर एक वस्तु बिलकुल ही बदल जायगी क्योंकि देवपुत्र जीवित हो उठेंगे और नया युग आरम्भ हो जायगा।

वह पड़ी-पड़ी यही बातें सोच रही थी। यह सब किस प्रकार होगा?

कल......कल सूर्योदय के समय। उसे खुशी थी कि उसे इस सम्बन्ध में पहले से ही बता दिया गया था...।

कोढ़ी की घण्टी पास ही सुनायी पड़ रही थी। वह उसकी आवाज पहचानती थी। वह अक्सर वहाँ तारों की छाँह में चला आता था, हालाँकि उसे ऐसा करने की इजाजत न थी। कोढ़ियों को आदेश था कि घाटी के नीचे वाली बस्ती में सबसे नीचे वे अपने बाड़े में ही रहें और उससे किसी भी प्रकार बाहर न निकलें। लेकिन यह रात के वक्त निकल

आता था। उस समय वह यह खतरा उठा लेता था। यह सोते हुए आदमियों के बीच अपना रास्ता खोज रहा था।

मृतकों की बस्ती......वह सचमुच वैसी ही थी? वे कहते थे कि वह व्यक्ति अब मृतकों की बस्ती में पहुँच गया था। वह सब कैसा लग रहा था।......नहीं उसे इसका कोई ज्ञान नहीं था।

अंधा आदमी सोते-सोते कराह रहा था। उससे कुछ ही दूर आगे वह दुबला-पतला युवक—जिसके शरीर में खून नहीं रह गया था—जोर-जोर से साँसें ले रहा था। बिल्कुल उसी के पास एक स्त्री पड़ी थी—जिसका हाथ दाग दिया गया था—क्योंकि कहा जाता था कि उसके शरीर में किसी अन्य व्यक्ति की आत्मा है। लेकिन कल से कोई व्यक्ति कोई कष्ट न पायेगा और न किसी को किसी प्रकार की चिन्ता ही रह जायगी। वे सब के सब गुड़मुड़ी हुए सो रहे थे। लेकिन अब, उन लोगों के लिए युवती को अधिक चिन्ता नहीं रह गयी थी।

शायद जल को—जिसे वे लोग पीते थे—देवदूत अपने एक दीर्घ निःश्वास से शुद्ध कर देगा? शायद कोढ़ियों को भी सदा के लिए अच्छा कर दिया जाय? लेकिन क्या उन्हें पानी के चश्मे में नहाने के लिए उतरने दिया जायगा? ओह क्या वे सचमुच......सचमुच अच्छे हो जायँगे? कोई नहीं जानता यह सब किस प्रकार और कैसे होगा?

शायद पानी के उस चश्मे में कुछ भी न हो और उसकी कोई चिन्ता भी न करे। लेकिन शायद देवदूत अपने सुनहले पंखों की सहायता से उड़ते हुए आवें और उस घाटी को रोग, पीड़ा और यातना से मुक्ति दे दें।

वह सोच रही थी कि सब कुछ शायद इसी प्रकार हो।

तब वह सोचने लगी जब पहले-पहल वह प्रभु से मिली थी प्रभु उस पर कितने दयालु थे। उसके प्रति पहले कभी किसी ने इतना करुणा भाव न दिखलाया था। वह स्वयं शायद महाप्रभु से कहती कि उसकी

कुरूपता दूर कर दी जाय तो प्रभु उसे सुन्दर बना देते। लेकिन वह अपने स्वामी और प्रभु देवपुत्र से यह कहना न चाहती थी। देवपुत्र तो उनकी सहायता करते थे जिनको वस्तुतः सहायता की आवश्यकता होती थी। उनके सारे कार्य अत्यन्त महान् होते थे। वह उनको अपने जरा से कार्य के लिए तनिक भी कष्ट न देना चाहती थी।

लेकिन उसे उस समय अजीब, बड़ा अजीब सा लगा था, जब वह अपने घुटनों पर धूल में खड़ी थी—प्रभु चलते-चलते रुके, पीछे मुड़े और उसके पास आए तथा बोले :

—क्या तुम भी मुझसे किसी चमत्कार की आशा करती हो?

—नहीं, भगवन्, बिलकुल नहीं। मैं तो केवल आपको यहाँ से जाते हुए देख रही थी।

और तब उन्होंने उसकी ओर इतनी कोमल किन्तु करुणाभरी दृष्टि से देखा। उन्होंने अकारण ही उसके मुँह और गालों को थपथपा दिया। और तब प्रभु ने कहा—चली आओ, तुम मेरे साथ ही रहोगी। मेरी साक्षी बनोगी।

कैसा अजीब था। उनका क्या तात्पर्य था? मेरी साक्षी बनेगी? बात बिलकुल विश्वास करने योग्य न थी। वह क्या साक्षी बनेगी?

जो कुछ उसने कहा प्रभु को उसे समझने में जरा भी समय न लगा। प्रभु ने उसकी बात को उसके मन की बात को भी तत्काल समझ लिया था। लेकिन इसमें आश्चर्य की कोई बात न थी, विशेष रूप से उस समय जब कि यह ज्ञात हो जाए कि वे देवपुत्र थे।

वह वहाँ लेटी हुई थी और उसके मस्तिष्क में तरह-तरह के विचार आ रहे थे। प्रभु के नेत्रों में जो एक प्रकार की देव-ज्योति—जो उसे प्रभु से बात करते समय दिखलायी पड़ी थी—और उनके हाथों में जो एक प्रकार की सुगन्ध थी वह भूली नहीं जा सकती...उसे रात के तारे साफ-साफ चमकते दिखलाई पड़ रहे थे...और वह लगातार आसमान की ओर

ही ताकती चली जा रही थी।...उसी दिन के बाद से उसने अपने उस घर को छोड़ दिया जिसमें उसने बहुत सी रातों के तारे देखे थे।...वैसे ही उसकी उत्सुकता जाग पड़ी...न जाने क्यों वह यह जानने के लिये आतुर हो उठी...आखिर ये तारे क्या हैं? वह नहीं जानती थी वे क्या हैं?...बाहर बड़े रेगिस्तान पर भी यही असंख्य तारे चमक रहे थे जो उसके सामने थे।...रेगिस्तान के पहले ऊँचे पहाड़ों की चोटियों से भी ऊँचे स्थान पर वे ही तारे थे। वह जानती थी—तारों को ईश्वर ने बनाया है—लेकिन यह न जानती थी कि वे हैं क्या! ये ही तारे गिलगाल पर्वत पर भी चमकते हैं...लेकिन उस दिन रात को कोई तारा न चमका था।...

तब उस मकान के बारे में सोचने लगी जो उन दो पेड़ों के बीच था।...उसकी माँ दरवाजे में खड़ी-खड़ी देखा करती थी और वह पहाड़ी के ऊपर अपना शाप लिये घूमा करती थी।...हाँ और फिर उन लोगों को उसे घर से निकाल देना पड़ा था...और उसे माँद में रहना पड़ा था। ठीक उसी तरह जैसे पशु रहते हैं।...उसे याद है कि उस बसन्त ऋतु में भी मैदान और खेत कितने हरे-भरे थे...उसकी माँ अपने घर के दरवाजे में छिपी खड़ी थी जिससे उसे वह आदमी न देख सके जिसने उसे शाप दिया था......

लेकिन अब उन सब का कोई मूल्य नहीं था।

अंधा आदमी उठ बैठा था। वह उस कोढ़ी की घण्टियों की आवाज सुन रहा था।

—यहाँ से भाग जाओ। अंधा जोरों से कोढ़ी पर चिल्लाया। अपना घूँसा नापते हुए उसने कहा, 'तुम यहाँ क्या कर रहे हो? चल दो यहाँ से! अपने बाड़े में जाओ!'

घण्टियों की आवाज अँधेरे में खो सी गई और बुड्ढा अन्धा फिर

लेट कर सो गया। सोने के पहले वह अपनी आँखों के स्थान पर हाथ रखे न जाने क्या बड़बड़ाता रहा।

क्या वे बच्चे जो मर चुके हैं, वे भी मृतकों की बस्ती में ही सम्मिलित हैं? अवश्य। लेकिन वे नहीं जो गर्भ से बाहर निकलने के पूर्व मर जाते हैं? यह संभव भी नहीं था। वे यातना की अग्नि को एक क्षण भी सहन नहीं कर सकते थे? इसलिये वैसा नहीं हो सकता था। यद्यपि उसे निश्चित रूप से ज्ञात न था।......

लेकिन नवयुग के आरम्भ होते ही सारे अभिशापों की अवधि स्वयंमेव ही समाप्त हो जायगी। बहुत सम्भव है ऐसा ही हो...यद्यपि इस सम्बन्ध में कोई भी निश्चित रूप से कुछ नहीं कह सकता था।...

वह काँप सी रही थी। ऐसा लग रहा था जैसे उसे बड़ा जाड़ा लग रहा हो। अब सबेरा होने वाला था और वह सबेरे के लिये देर से कितनी व्याकुल पड़ी थी। और ऐसा कैसे हो सकता है कि अभी तक रात समाप्त ही हुई हो। ऊपर चमकने वाले तारों का भी रंग बदल गया था। दूज का चाँद पहाड़ों की छाया में नीचे उतर कर बहुत देर का खो गया था। रक्षकों की आखिरी टोली भी आ चुकी थी—वह नगर के प्राचीर पर तीन बार मशालों का जलना और उनका ऊपर उठना देख चुकी थी। हाँ, अब रात अवश्य ही समाप्त हो गई होगी! आखिरी रात......

ओलिव पहाड़ पर सुबह का तारा निकल रहा था। वह उसे तत्काल पहचान गई। उसने पहले कभी सुबह के तारे को इतना अधिक चमकते न देखा था। अपने हाथों को अपने वक्षस्थल पर रखे वह जलती हुई आँखों से उस तारे की ओर थोड़ी देर तक लगातार देखती रही।

तभी वह अकस्मात् उठी और रात के अँधेरे में जाकर गायब हो गई।

वह खुली कब्रगाह के सामने एक झाड़ी के किनारे पड़ा हुआ था। वह सोच रहा था जब सुबह का प्रकाश हो जायगा तो वह देख सकेगा

कि आगे क्या है। वह देख सकेगा कि क्या होता है। यहाँ से सभी कुछ साफ-साफ दिखलायी पड़ेगा। केवल सूरज के उठने की ही देर है।

यह सच है और वह भली-भाँति जानता था कि मृतक व्यक्ति फिर भी कभी जीवित नहीं हो सकते लेकिन वह यह सब कुछ देखने के लिये स्वयं उस स्थान पर देखना चाहता था, जिससे उसे विश्वास हो सके। यही कारण है कि वह इतनी जल्दी उठ बैठा था। हालाँकि एक सीमा तक उसे स्वयं अपनी उत्सुकता पर आश्चर्य हो रहा था। वह परेशान था कि आखिर उसे क्यों इतनी उत्सुकता हो रही है? वह अपना दिमाग इस प्रकार की असंभव बात में क्यों खपा रहा था? आखिर उसे इन सब बातों से क्या लेना-देना है?

वह समझ रहा था कि इस चमत्कार को देखने के लिये शायद और भी बहुत से लोग आयें। यही कारण था कि वह झाड़ी के पीछे छिपकर बैठा था जिससे अन्य कोई उसे देख न सके। लेकिन वहाँ अन्य कोई न था। उसे यह विचित्र सा लगा।

हाँ, उसे कुछ दिखलायी पड़ा। उसे लगा जैसे उसके सामने कोई अपने घुटनों पर झुककर बैठ रहा है। ऐसा लगता था कि वह छाया उस सड़क पर ही झुककर बैठ रही है। कौन होगा और यहाँ कैसे आ गया। थोड़ा-सा प्रकाश बढ़ने पर उसे ऐसा लगा कि वह छाया कोई स्त्री है। सुबह के झुकझुके में उसके गौर शरीर को देखकर तुरन्त यह जान लेना कठिन सा लग रहा था कि वह कौन है। उसके शरीर का वर्ण तथा सड़क की धूल के रंग में इतना साम्य था कि दोनो के बीच अन्तर स्थापित करना कठिन हो गया था।

अब प्रकाश धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा था। शीघ्र ही सूर्य की प्रथम किरण ने उस चट्टान को आकर स्पर्श किया जिस पर कब्रगाह बनी थी। इसी बीच सब कुछ इतनी तेजी से हुआ कि वह यह समझ ही न सका कि घटना-क्रम क्या था। जिस समय उसकी बुद्धि के प्रत्युत्पन्न-मतित्व की

सर्वाधिक आवश्यकता थी उसी समय उसे ऐसा लगा कि वह बिलकुल मूर्ख हो गया है। कब्र खाली पड़ी थी ? वह भारी पत्थर अपने आप कब्र पर से उतर गया था और जहाँ शव होना चाहिये था वह वहाँ न था।

पहले वह ऐसा किंकर्तव्यविमूढ़ हो गया कि केवल उस कब्र को ताकता ही रहा जिसमें उसने स्वयं शव को रखा जाते देखा था और जिसके मुँह पर उसने स्वयं देखा था कि एक बड़ा भारी पत्थर रखा गया था। लेकिन इसके बाद वह समझ गया कि यह सब कैसे हुआ। वस्तुतः हुआ कुछ भी न था। पत्थर उसके देखने के पहले ही हट चुका था; उसके भी पहले जब वह यहाँ आया था। तभी से वह कब्र भी खाली पड़ी थी। किसने कब्र का पत्थर हटाया और किसने शव को हटाया इसका अनुमान करना कठिन न था। 'प्रभु' के शिष्यों ने रातों-रात ही कार्य कर डाला होगा। अंधकार के आवरण में वे लोग आये होंगे और शव को उठा ले गये होंगे; यह दिखलाने के लिये कि उनके प्रभु उठकर चले गये जैसी कि भविष्यवाणी उन्होंने की थी। ऐसा कर लेना भी कुछ कठिन न था।

यही कारण है कि इस समय किसी भक्त का पता भी न था। सूर्योदय के समय जब सबको यहाँ होना चाहिए था और जब वह चमत्कार होना चाहिए था। उस समय कोई भी उपस्थित न था। भक्त गणों का सुबह के समय दूर-दूर तक कहीं पता न था।

बरबास जहाँ छिपा था वहाँ से निकल आया और उसने कब्र का भली-भाँति निरीक्षण किया। जब वह उस स्त्री के पास से निकला तो उसने आश्चर्यपूर्वक देखा कि वह युवती वही है जो उसका साथ छोड़कर शराबखाने से भाग आई थी। वह उस युवती से कुछ दूरी पर खड़ा हो गया और थोड़ी देर वहीं खड़े होकर उसने युवती की ओर आश्चर्य-पूर्वक देखा। उस युवती की दृष्टि कब्र पर एकाग्र थी और उसकी चरम विस्मय से परिपूर्ण आँखें और कुछ देख ही नहीं रही थीं। उसके दोनों

ओठ अलग-अलग थे लेकिन ऐसा लगता था जैसे वह साँस ही न ले रही हो। उसके ऊपर वाले ओठ पर घाव का जो निशान था वह बिलकुल श्वेत हो गया था। उसने बरबास को देखा ही नहीं था।

उस युवती को इस प्रकार देखते रहने के कारण बरबास के हृदय में एक अजीब सा भाव पैदा हो गया। उसे न जाने क्यों अपने आप पर लज्जा आने लगी। उसे इस पर आश्चर्य नहीं करना चाहिए था। उसको आश्चर्य यही था कि वह स्वयं यहाँ क्यों आया था। उसे यहाँ आने की क्या आवश्यकता थी?

बरबास यह दिखलाना चाहता था कि वह अकारण ही वहाँ टहलते-टहलते आ गया है और उसे स्थान का कोई ज्ञान नहीं है। वह वहाँ अपने आने को केवल आकस्मिक घटना बतलाना चाहता था। लेकिन क्या वह ऐसा कर सकता था? यह बात उसे स्वयं लगा कि बड़ी दूर की कौड़ी लाने जैसी होगी। दूसरे वह युवती भी इसका विश्वास न करे शायद! इतने पर भी बरबास ने आखिर पूछ ही डाला, 'तुम यहाँ इस तरह से झुकी क्यों बैठी हो?'

कटे ओठ वाली युवती ने न तो बरबास को कोई उत्तर दिया और न वह हिली या डुली ही। वह ज्यों की त्यों झुकी बैठी रही और उसकी दृष्टि एक ही स्थान पर केन्द्रित थी। उसने बड़ी कठिनाई से युवती के मुँह से यह निकलते सुना :

—देवपुत्र उठ बैठे हैं......

बरबास के हृदय में उस युवती की यह बात सुनकर एक अजीब भावना पैदा हो गई। उसे अपने विरुद्ध एक अजीब प्रकार की भावना का सामना करना पड़ रहा था। वह नहीं जानता था कि वस्तुतः वह भावना क्या है? वह वहाँ खड़ा रहा। उसकी समझ ही में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे और क्या न करे? इसके बाद वह कब्र तक गया। और जैसा कि उसने पहले ही तय कर लिया था कब्र को अन्दर से

देखा। वह एकदम खाली पड़ी थी लेकिन यह बात उसे पहले से ही ज्ञात थी। अतएव उसका बरबास के मन पर कोई अनुकूल या विपरीत प्रभाव न पड़ा। इसके बाद बरबास पुनः उस युवती के पास लौट आया। वह अब भी झुकी हुई थी। उसका चेहरा राख की तरह सफेद हो गया था। लेकिन युवती के चेहरे पर ऐसी भक्ति भावना तथा आत्मआनन्द की आभा ज्योतित हो रही थी कि बरबास को उसके लिए सचमुच दुख-सा होने लगा। इस घटना में कोई सत्यता नहीं है जिसे देखकर वह इतनी प्रसन्न हो रही है। वह उस युवती को संभवतः सारा पोलखाता सुना देता लेकिन वह यह सोचकर चुप रहा कि उसने पहले ही युवती को काफी हानि पहुँचा दी है और अब अधिक हानि पहुँचाना किसी भी प्रकार उचित न होगा। वह वास्तविकता कहने के लिये अपने आपको किसी भी प्रकार राजी नहीं कर/सका। उसने बड़ी सावधानी से युवती से पूछा कि क्या वह बता सकेगी यह सब कैसे हुआ और सूली पर चढ़ाये जाने के बाद मरे उस व्यक्ति का शव कहाँ चला गया? क्या वह व्यक्ति फिर जीवित हो गया?

उसने बड़े आश्चर्य से एक क्षण के लिए बरबास की ओर देखा। क्या उसे नहीं ज्ञात? लेकिन इसके बाद उस युवती ने अवरुद्ध कण्ठ से आनन्दातिशयता के स्वर में बतलाया कि आकाश से किस प्रकार एक देवदूत आग जैसा लाल लबादा पहने हुए उतरा और उसने अपने भाले जैसे हथियार की सहायता से कब्र के मुँह पर रखा पत्थर हटा दिया। सब कुछ ऐसे हुआ जैसे कोई बड़ी साधारण सी बात हुई हो यद्यपि वह था एक चमत्कार ही! इस प्रकार वह हुआ। क्या उसने नहीं देखा?

बरबास ने जमीन की ओर अपनी दृष्टि डाल ली और कहा कि उसने वह सब कुछ भी नहीं देखा। उसने अपने मन में सोचा कितना अच्छा हुआ जो मैंने यह सब बातें नहीं देखीं। ऐसा लग रहा था जैसे उसकी आँखें अब बिलकुल ठीक हो गयी हों। उसकी आँखें ठीक वैसी ही हो

गयी थीं जैसे कि अन्य लोगों की थी। उसे अब किसी प्रकार की अयथार्थ बातें नहीं दिखलायी पड़ती थीं। केवल वही बातें दिखलायी पड़ती थीं जो वास्तविक हों, सत्य हों। बरब्बास को लगा जैसे उस व्यक्ति की उस पर कोई शक्ति न काम कर रही हो। लेकिन कटे ओठ वाली युवती अब भी झुकी हुई बैठी थी। जो कुछ उस युवती ने देखा था उसकी स्मृति से उसकी आँखें चमक रही थीं।

अन्ततोगत्वा वह चलने के लिए उठ खड़ी हुई। कुछ दूर तक वे दोनों शहर की ओर जाने वाली सड़क पर साथ ही साथ गये। दोनों ने एक दूसरे से कोई अधिक बात नहीं की लेकिन बरब्बास की समझ में यह बात आ गयी कि उससे विदा लेने के बाद यह युवती उस तथा कथित देवपुत्र में विश्वास करने लगी है। वह जिसे देवपुत्र मानती है—बरब्बास ने सोचा—उसे वह मृत व्यक्ति मानता है। लेकिन बरब्बास ने उस युवती से पूछा कि क्या वह बतला सकेगी वह आदमी वस्तुतः क्या शिक्षा देता था तो उसने उत्तर देने में कुछ हिचकिचाहट प्रकट की। वह दूसरी ओर देखने लगी और बरब्बास को ऐसा लगा जैसे वह उसकी दृष्टि से अपनी दृष्टि मिलाना ही नहीं चाहती है। जब वे दोनों एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ से दोनों के रास्ते अलग-अलग हो जाते थे तो उसने अपना पहला प्रश्न पुनः पूछा। उसकी क्या शिक्षा थी?

वह एक क्षण के लिए ठिठक कर खड़ी हो गयी। दो-तीन क्षण भूमि की ओर दृष्टि किये सोचती रही और इसके बाद पतले स्त्रियोचित स्वर में बोली :

—एक दूसरे से प्रेम करो।

और फिर एक दूसरे को छोड़कर वे लोग चले गये लेकिन बरब्बास थोड़ी-सी दूर चलकर खड़ा हो गया और बड़ी देर तक उस युवती को जाते हुए देखता रहा।

५

बरबास बारबार अपने आप से यह प्रश्न कर रहा था कि वह जेरू-सलम में क्यों ठहरा हुआ है विशेषकर उस समय जब उसे यहाँ कुछ भी नहीं करना है। वह नगर में एक स्थान से दूसरे स्थान को बिना किसी कार्य के घूमता फिर रहा था और वह किसी भी कार्य को करने की सोच नहीं पा रहा था। वह यह भी अनुमान कर रहा था कि पर्वतों पर उसकी प्रतीक्षा करने वाले साथी सोच रहे होंगे कि आखिर उसे इतनी देर क्यों हो रही है। वह क्यों रुका है ? वह स्वयं नहीं जानता था।

उस मांसल स्त्री ने पहले तो सोचा कि बरबास उसकी वजह से ठहरा है लेकिन वह शीघ्र ही इस परिणाम पर पहुँची कि वह उसकी वजह से शहर में नहीं रुका हुआ है। उसे यह बात कुछ बुरी लगी लेकिन ईश्वर साक्षी है यह पुरुष जाति सदैव अपनी काम और क्षुधा की वासनाएँ शान्त कर लेने के बाद और भी कृतघ्न हो जाती है। पता नहीं वह क्यों बरबास को इतना अधिक प्यार करने लगी थी कि वह उसका साथ अधिक से अधिक समय के लिए चाहती थी। बरबास उसी के पास सोता था और उसे यह अच्छा लगता था। केवल भोजनादि की प्राथमिक व्यव-स्थाएँ कर देने से यदि इतना अच्छा पुरुष मिल जाय तो उससे बड़े सौभाग्य की और क्या बात हो सकती है ? और बरबास के साथ एक बात यह भी थी कि यदि वह उसकी परवाह नहीं करता था तो वह अन्य किसी की भी रत्ती भर चिन्ता न करता था। उसने ऐसा कभी किया ही नहीं था। और एक हद तक वह इस बात से खुश भी थी कि बरबास उसकी बहुत अधिक चिन्ता नहीं करता था। कुछ भी हो, फिलहाल तो दोनों का प्रेम संबंध चल ही रहा था। कभी-कभी वह बरबास की किसी बात पर दुखी होकर रो लेती थी लेकिन वास्तविकता यह थी कि बुरी लगने वाली बात भी अधिक समय तक उसके दिमाग में नहीं रहती थी। कभी-कभी

उसे यह भी अच्छा लगता था। उसे प्रेम करने का एक बड़ा व्यापक अनुभव हो रहा था और वह उसमें किसी भी प्रकार की न्यूनता नहीं चाहती थी।

लेकिन बरबास जेरूसलम में पागलों की तरह क्यों घूमता फिर रहा है—यह बात उसकी समझ में बिलकुल नहीं आ रही थी। या दिन भर वह क्या करता रहता है? कम से कम वह उन व्यक्तियों में तो नहीं ही था जो सर्वथा निखट्टू हों और सड़कों पर आवारों की तरह चक्कर लगाते फिरें। वह तो उन आदमियों में से था जो सदैव सक्रिय रहते हैं और खतरों से भरे साहसिक जीवन का स्वागत करते हैं। इस प्रकार से अकारण घूमना उसके स्वभाव के सर्वथा विपरीत था।

नहीं, जब से वह सूली से बचकर लौटा है तब से वह अपनी सर्वथा पूर्व-स्थिति में नहीं आया है। ऐसा लगता है जैसे उसे सचमुच ही फाँसी लग गयी हो। कभी-कभी बरबास को ऐसा अनुभव करने में भी कठिनाई होती थी कि वह सचमुच सूली पर नहीं चढ़ा दिया गया है। दोपहर में जब वे दोनों लेटते थे तो वह स्त्री बरबास के सम्बन्ध में बार-बार यह बात दोहराती थी कि वह सूली पर नहीं चढ़ाया गया है। और इसके बाद वे दोनों खूब हँसते थे।

बरबास कभी-कभी उस शहीद व्यक्ति के भक्तों के बीच भी चला जाता था। यह तो कोई नहीं कह सकता कि वह ऐसा जानबूझ कर किया करता था लेकिन भक्तों की संख्या इतनी अधिक थी कि वे सड़कों पर या बाजारों में अथवा इधर-उधर कहीं न कहीं झुण्ड के रूप में मिल ही जाते थे। यदि इस प्रकार के भक्तों से उसकी कभी भेंट हो जाती तो वह उनके पास रुक जाता था और मृतात्मा के बारे में पूछताछ करता—उनकी शिक्षाएँ जानने की कोशिश करता—हालाँकि उसकी समझ में उन शिक्षाओं का एक शब्द भी न आता था। एक दूसरे से प्रेम करो?...... वह एक स्थान से दूसरे स्थान को जाता। रास्ते में उसे दूकानें मिलतीं।

सौदागर मिलते। कारीगर मिलते जो अपने-अपने स्थानों में बैठे-बैठे काम कर रहे होते। खोमचेवाले फेरियाँ लगाते हुए मिलते। इन सामान्य और अतिसाधारण लोगों में उसकी शिक्षाओं में विश्वास करने वाले बरब्बास को मिल जाते। इन लोगों को बरब्बास व्यावसायिक रूप से प्रचार करने वालों से कहीं अधिक चाहता था। वह हर तरह से शिक्षाओं को समझने की कोशिश करता लेकिन वह ठीक-ठीक ढंग से कुछ भी नहीं समझ पाता था। शायद इसका कारण यह था कि जो भी बातें उससे कही जाती थीं उनके कहने का ढंग इतना मूर्खतापूर्ण होता था कि उनसे कोई भी कुछ भी नहीं समझ पाता था। लेकिन उन सभी लोगों का विश्वास था कि उनके प्रभु जीवित हो उठे हैं और वे शीघ्र ही स्वर्ग से आकर दुष्टों का दमन करेंगे और एक स्वर्गीय और अलौकिक राज्य की स्थापना करेंगे। वे सब एक-सी ही बात कहते थे—इसलिए ऐसा लगता था कि उनको पढ़ाया गया है। लेकिन उन सब लोगों को समान रूप से यह विश्वास न था कि प्रभु देवपुत्र ही थे। कुछ लोगों को यह बात आश्चर्य-जनक-सी लगती थी। कुछ को विश्वास ही नहीं होता था। लेकिन बहुत से ऐसे भी थे जिनका इसमें पूरा विश्वास था और वे यह कहते भी थे कि उनके प्रभु ईश्वर के सिंहासन पर साक्षात् ईश्वर के पार्श्व में बैठेंगे। लेकिन सबसे पहले इस पापमय एवं अपूर्ण संसार का नाश हो जायगा।

कैसे अजीब से व्यक्ति थे वे लोग?

वे लोग यह भी देखते थे कि बरब्बास उन्हीं की भाँति प्रभु में विश्वास नहीं करता है—इसलिए वे उससे सतर्क भी रहते थे। कुछ लोग तो साफ-साफ अपना अविश्वास प्रकट करते हुए बरब्बास से यह कह भी देते थे कि वे उससे कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहते। बरब्बास को ऐसी बातें सुनने की आदत पड़ गयी थी लेकिन इस बार उसे बहुत ही बुरा लगा जैसा कि उसे पहले कभी न लगा था। लोग प्रायः उसके रास्ते में आड़े न आते थे और यह प्रकट कर देते थे कि वे उससे कोई वास्ता नहीं

रखना चाहते। सम्भवतः ऐसा उसकी रूपाकृति की वजह से होता हो—या आँख के नीचे छुरे के घाव का जो निशान उसके चेहरे पर था—उसकी वजह से ऐसा होता हो—या सम्भवतः उसकी गड्ढे में धुसी आँखें ऐसी भयानक लगती हों जिसकी वजह से लोग दूर ही रहना चाहते हों। बरबास यह सब भली-भाँति जानता था। लेकिन उसके बारे में लोग क्या सोचते हैं इसकी उसे बहुत कम परवाह रहती थी।

अभी तक इस तरह की बातें सुनकर उसे किसी प्रकार का दुख नहीं हुआ करता था लेकिन अब स्थिति बदल गयी थी।

वे लोग अपने धार्मिक विश्वासों द्वारा पारस्परिक एकता और जीवन-यापन सम्बन्धी सामञ्जस्य बनाए रहते थे। वे अपने बीच किसी ऐसे व्यक्ति को न आने देते थे जो उनके सम्प्रदाय से भिन्न हो। उनका अपना एक पारस्परिक भ्रातृत्व भाव था और उसके प्रसार के लिए वे प्रीतिभोजों का भी आयोजन करते रहते थे। यद्यपि उनका सिद्धान्त सब को प्रेम करना सिखाता था लेकिन यह कहना कठिन था कि वे अपने समूह से बाहर अन्य किसी को भी प्यार करते थे।

बरबास को उनके प्रीति-भोजों में भाग लेने की तनिक भी इच्छा न होती थी। उसे अपनी स्वतंत्रता में बाधा डालने वाले विचार तक से अरुचि थी। वह अपने आपको किसी भी चीज से जरा-सा भी बाँधना नहीं चाहता था। वह अपनी स्वतंत्रता का सब से बड़ा प्रेमी था।

लेकिन तब भी वह उनसे किसी न किसी प्रकार बात करने का समय निकाल ही लेता था।

कभी-कभी वह यह दिखलाने का बहाना भी करता था कि वह भी उनके सम्प्रदाय में दीक्षित हो जाना चाहता है। लेकिन उसकी शर्त यही रहती थी कि वह सम्प्रदाय में दीक्षित होने के पूर्व उनके धार्मिक-सिद्धान्तों को भली-भाँति समझ लेना चाहता है। यह बातें सुन कर वे खुश होते और कहते वे अपने प्रभु की शिक्षाओं को बड़ी प्रसन्नता से उसे समझायेंगे।

लेकिन वास्तविकता यह थी कि उनका अन्तर हर्षित नहीं होता था। यह बड़ी ही अजीब बात थी। वे अपने आपको धिक्कारते और कहते थे कि वे बरबास के आगे बढ़ने पर भी क्यों नहीं प्रसन्न होते हैं—वे अपने सम्प्रदाय की संख्या में वृद्धि करने वाले एक व्यक्ति के आगमन पर हर्षित क्यों नहीं होते—जितना उनको होना चाहिए। इसका क्या कारण हो सकता है? लेकिन बरबास जानता था क्यों? वह अकस्मात् उनके बीच से उठ पड़ता और तेजी से एक ओर चला जाता। उसके चेहरे के घाव का निशान गहरा लाल हो जाता था।

विश्वास! उस आदमी में कैसे विश्वास वह कर ले जिसे अपनी आँखों से उसने सूली पर लटका हुआ देखा है। वह शरीर जो बहुत पहले प्राणहीन हो चुका है, जिसे अपनी आँखों से उसने जीवित होते हुए नहीं देखा उसकी बातों पर वह कैसे विश्वास कर ले। यह सब कपोल कल्पना के अतिरिक्त कुछ भी नहीं था। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं था—जो मृत हो के जीवित हो उठा हो—वह चाहे उनका 'प्रभु' हो अथवा अन्य कोई। वह लोग जिस पर चाहें विश्वास करें—यह उनका अपना मत है। वह यह नहीं मानने को तैयार कि वह कष्ट झेलना और मरना चाहते थे। यदि वे सचमुच देवपुत्र होते तो जाने कब का अपने आपको सारे कष्टों से मुक्त करा लेते। उन्हें इतनी भयंकर अवस्था में प्राण त्याग न करना पड़ता। यदि वह व्यक्ति सचमुच देवपुत्र होता तो वे लोग उसे छोड़ न देते और न उसके बदले में ही उसे सूली दे देते। बरबास को यों ही स्वाधीन करके छोड़ न दिया जाता। लोग कहते हैं उन्होंने कहा था :

—इस आदमी को छोड़ दो और मुझे इसकी जगह सूली दे दो।

यह स्पष्ट है कि वह ईश्वर-पुत्र नहीं था, यह साफ बात थी......

उसने अपनी शक्तियों का सर्वाधिक असाधारण ढङ्ग से प्रयोग किया था। यह प्रयोग ऐसा नहीं था जिसे शक्तियों का प्रयोग कहा जा सके,

अपितु ऐसा था जिसमें अन्य व्यक्ति जैसा चाहे वैसा सोच सकें और उसके सम्बन्ध में अपनी धारणा बना सकें। वे हस्तक्षेप करने से बराबर बचे थे 'यद्यपि' हुआ सब कुछ वैसा ही था जैसा उन्होंने चाहा था। यह बात इसी से प्रकट थी कि वे बरबास के स्थान पर सूली पर चढ़ गये थे।

वे लोग कहते थे कि प्रभु ने उन लोगों के लिये अपने प्राणों का विसर्जन किया है। ऐसा हो सकता है। लेकिन बरबास के ही स्थान पर वे सूली पर चढ़े—इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता। वस्तुतः बरबास प्रभु के उन लोगों की अपेक्षा कहीं अधिक समीप था। वह प्रभु से बिलकुल दूसरी भाँति से सम्बद्ध था हालाँकि वे लोग कहते थे कि उससे वे कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहते। लेकिन कोई यह भी तो कह सकता है कि उसे कष्ट भोगने के लिये स्वतंत्र छोड़ दिया गया। वास्तविकता यह थी कि वही सबसे चुना हुआ व्यक्ति था। उसे छोड़ दिया गया—देवपुत्र की आज्ञा से—क्योंकि वह ऐसा ही चाहता था यद्यपि उन लोगों को कोई संदेह नहीं हुआ।

लेकिन उसे उनके 'भ्रातृत्व' और 'प्रीतिभोजों' की तिल मात्र भी परवाह न थी। उसका अपना एक स्वतंत्र व्यक्तित्व था। वह उन लोगों की भाँति दास न था। वह उन लोगों में न था जो गहरी साँसें भरते निकालते जायँ और उनकी प्रार्थना करते जायँ।

कोई क्यों कष्ट भोगने को तैयार होगा? विशेषकर, उस समय जब उसकी कोई आवश्यकता न हो और जब तक उसके लिए कोई विवश न करे। इस प्रकार की बात का कोई विश्वास नहीं किया जा सकता। जब वह उस निर्बल व्यक्ति की कल्पना करता था तो उसे उसके दुर्बल हाथ साफ-साफ दिखलायी पड़ने लगते थे जिनमें जरा भी शक्ति नहीं थी—इतनी भी नहीं कि वे पानी का पात्र भी अपने मुँह तक ले जा सकते। ऐसा आदमी कैसे यह कह सकता है कि वह स्वयं कष्ट भोगेगा—सो भी दूसरे के लिए?—असम्भव है। वह किसी भी प्रकार उसे चाहने में

असमर्थ था। लेकिन वे लोग सूली पर चढ़े उस व्यक्ति को देवता की भाँति पूजा करते थे—उसके कष्टों पर अश्रु-धाराएँ प्रस्रवित करते—जिसकी उस जैसे व्यक्ति के लिये संभवत: कोई आवश्यकता ही न थी। वे साक्षात् मृत्यु के प्रति श्रद्धा प्रकट करते थे। लेकिन मृत्यु भयंकर होती है और वह उसके हृदय को अरुचिकर भावों से भर देती थी। इसी की वजह से उसे उन लोगों तथा उन लोगों के धर्म—जिसको वे मानते थे—दोनों से घृणा हो गई थी।

नहीं, वह मौत को नहीं चाहता था—जरा सा भी नहीं। वह उसे नहीं मानता था और सोचता था कि वह शायद अमर रहेगा। यही कारण है कि शायद वह सूली तक जाकर भी नहीं मरा। नहीं तो उसे छोड़ने की ही क्या आवश्यकता थी? एक क्षण के लिये यदि यह मान भी लिया जाय कि सूली पर चढ़ा वह व्यक्ति देवपुत्र ही था—तब भी उसे यह क्यों कर मालूम हो गया कि वह न तो मरना चाहता है और न कष्ट ही भोगना चाहता है। और इस प्रकार उसने उसके स्थान पर अपने प्राण दे दिये और सूली का कष्ट भी झेला। इतने पर वह मौत से समझौता करने के लिये तैयार न था।

हाँ, वह सचमुच देवपुत्र ही रहा होगा क्योंकि उसने उसके स्थान पर अपनी जान दे दी थी! यह बात केवल उसी के लिये कही गयी थी।

जेरूसलम की एक बड़ी सड़क से गली में जाते समय बरब्बास के मस्तिष्क में तेजी के साथ ऐसे विचार आ-जा रहे थे। कुछ ही देर पूर्व कुछ लोगों ने स्पष्ट शब्दों में उससे यह कहा कि वे उसे पसन्द नहीं करते और न यही चाहते हैं कि बरब्बास उनके बीच आया-जाया करे।

बरब्बास ने उन लोगों से बिलकुल ही न मिलने का निश्चय कर लिया था।

लेकिन दूसरे दिन बरब्बास उधर से जब पुनः गुजरा तो उन्हीं लोगों

ने उससे यह पूछा कि उनके धर्म की ऐसी कौन सी बात है जो उसकी समझ में नहीं आती है। उन लोगों ने यह स्पष्ट कर दिया कि उसका अपमान कर देने के कारण वे दुखित हैं और उन्हें इसका भी खेद है कि वे लोग उसका वैसा स्वागत न कर सके जैसा उन्हें करना चाहिए। उन्होंने इस पर भी दुख प्रकट किया कि वे अभी तक उसे वह ज्ञान नहीं दे पाये हैं जिसके लिये वह इतना प्यासा है। वह क्या जानना चाहता है? ऐसी कौन सी बात है जो उसकी समझ में नहीं आती।

बरब्बास अपने कंधों को उचकाते हुए यह कहना ही चाहता था कि उसके लिये सभी कुछ रहस्यमय है और वस्तुतः अब उस रहस्य के तथ्यों को भी जानने के लिये अधिक उत्सुक नहीं है। लेकिन वह कह बैठा कि उसे मरे व्यक्ति के जीवित हो जाने की कल्पना में विश्वास नहीं है। उसकी समझ में ही नहीं आता—वह कैसे यह बात मान ले।

वे लोग कुम्हार के चाक पर बैठे मिट्टी के बर्तन बनाने के लिये उसे घुमा रहे थे। उन्होंने अपनी दृष्टि उस चाक पर से उठाकर उस पर डाली। इसके बाद उनमें जो व्यक्ति सबसे अधिक बुजुर्ग था वह बोला क्या वह ऐसे व्यक्ति से मिलना चाहेगा—जो मर गया था लेकिन बाद में प्रभु ने उसे जीवित कर दिया? यदि वह चाहे तो उस व्यक्ति से मिलाया जा सकता है। लेकिन यह मुलाकात संध्या के बाद हो सकेगी। वे अपना काम समाप्त करने के बाद ही उस व्यक्ति के पास चल सकेंगे क्योंकि वह आदमी नगर से कुछ दूर एक स्थान पर रहता है।

बरब्बास अब भयभीत हो गया। उसे इसकी आशा न थी। वह यह समझता था कि वे लोग तर्क द्वारा उसे समझाने की चेष्टा करेंगे। यह सच है कि वह घटना भक्तों की कल्पना से अधिक कुछ नहीं है। वह व्यक्ति वस्तुतः मरा ही न होगा। फिर भी वह मिलने से डर रहा था। लेकिन वह साफ-साफ यह बात कहना भी नहीं चाहता है। वह प्रकटतः यह कहना चाहता था कि उनके प्रभु एवं भगवान की असीम शक्ति के

उस प्रमाण को वह सहर्ष भाव से देखेगा। उसने ऐसा कह भी दिया लेकिन इसके बाद से उसका मानसिक उद्वेलन निरन्तर बढ़ता जा रहा था और वह गली में इधर से उधर टहल कर समय निकाल रहा था। अन्त में संध्या को वह पुनः उन लोगों के पास गया। तब तक कार्य समाप्त हो गया था। उसको लेकर एक युवक ओलिव पर्वत की तरफ चल दिया।

जिस व्यक्ति से इन दोनों को मिलना था वह आदमी पहाड़ी ढाल पर बसे एक गाँव के छोर पर रहता था। जब कुम्हार युवक ने उस व्यक्ति की झोंपड़ी के दरवाजे की चिक उठायी तो वह व्यक्ति कुर्सी पर बैठा दरवाजे से बाहर की ओर देख रहा था। लेकिन ऐसा लगता था कि जब तक युवक ने अपने मधुर कण्ठ से नमस्कार नहीं किया तब तक उसने इन लोगों में से किसी को भी नहीं देखा। युवक ने अपने आने का कारण बतलाते हुए अपनी बस्ती के मुखिया का संदेश सुनाया। संदेश सुनने के बाद युवक तथा बरबास को उस व्यक्ति ने बैठ जाने का संकेत किया।

बरबास उस व्यक्ति के ठीक सामने बैठा और इसके बाद उसने उस व्यक्ति का चेहरा-मोहरा भली-भाँति देखने का प्रयत्न किया। उस व्यक्ति का गेहुँआँ वर्ण था और चेहरा इतना कठोर था जैसे हड्डी। खाल बिलकुल चिपकी हुई थी। बरबास ने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि ऐसे चेहरे वाले व्यक्ति से उसकी जिन्दगी में कभी भी मुलाकात होगी। उसके मुँह पर एक भी भाव न था। चेहरा ऐसा बंजर दिखलायी दे रहा था जैसे रेगिस्तान हो।

युवक के प्रश्न का उत्तर देते हुए उस व्यक्ति ने कहा यह बिलकुल सत्य है कि वह एक बार मर चुका था लेकिन प्रभु ने कृपा कर उसे पुनः जीवन दान दिया। वह चार दिन और चार रात कब्र में दबा पड़ा रहा लेकिन उसकी शारीरिक और मानसिक शक्तियों पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा है। इससे महाप्रभु ने अपनी असीम शक्ति का परिचय दे दिया

है और उनका यश चारों ओर फैल गया है। इससे प्रभु ने अपने देवपुत्र होने की बात भी सिद्ध कर दी है। वह व्यक्ति मन्द स्वर में बिना किसी उतार-चढ़ाव के बोल रहा था। जितनी देर वह बोला, अपनी पीली और बिना चमक वाली आँखों से लगातार बरब्बास की ओर देखता रहा।

जब उस व्यक्ति ने अपनी बात कह ली तब वे लोग थोड़ी देर अपने प्रभु और भगवान् की बातें करते बैठे रहे। इसके बाद वह युवक उठकर खड़ा हो गया और उसने जाने की आज्ञा माँगी। उस युवक के माता-पिता भी उसी गाँव में रहते थे। वह उन्हीं से मिलने जा रहा था।

बरब्बास यह नहीं चाहता था कि वह उस आदमी के साथ अकेला रह जाय लेकिन वह ऐसा कोई बहाना न खोज सका जिसकी वजह से वह तुरन्त विदा ले सके। वह व्यक्ति अपनी गहरी आँखों से—जिनमें कोई अभिव्यक्ति न थी और कम से कम बरब्बास के लिए तो कोई भी रुचि नहीं दिखलायी पड़ रही थी—उसकी ओर बराबर देख रहा था। इतने पर भी वे आँखें बरब्बास को अपनी ओर अव्यक्त ढंग से आकृष्ट कर रही थीं। वह उस आदमी से बचकर भाग जाना चाहता था—वहाँ से उठकर भाग जाना चाहता था—लेकिन वह ऐसा सोचते हुए भी कुछ न कर सका।

वह आदमी थोड़ी देर तो कुछ भी न बोला। लेकिन थोड़ी देर बाद वह बोला कि क्या बरब्बास को उनके प्रभु के देवपुत्र होने में विश्वास है? पहले तो बरब्बास उत्तर देने में थोड़ा सा हिचकिचाया लेकिन बाद में उसने नकारात्मक उत्तर दे दिया। वह उस व्यक्ति से झूठ नहीं बोलना चाहता था।

बरब्बास के उत्तर से वह व्यक्ति तनिक भी रुष्ट नहीं हुआ और थोड़ा सा सिर हिलाते हुए बोला :

—नहीं। हाँ, ऐसे बहुत से लोग हैं जो विश्वास नहीं करते। मेरी माँ भी इस बात में विश्वास नहीं करती। वह कल तक तो यहाँ

थी। लेकिन प्रभु ने मुझे मृत से जीवित कर दिया और ऐसा इसलिये किया जिससे मैं उनका प्रमाण बन सकूँ।

बरबास ने कहा ऐसी अवस्था में उसके लिये प्रभु में विश्वास करना बिलकुल स्वाभाविक है। यही नहीं उसे सदैव जीवनदान प्राप्त करने के लिये उनका कृतज्ञ होना चाहिए।

उस आदमी ने उत्तर दिया कि वह इसके लिये अपने प्रभु को प्रति दिन धन्यवाद देता है- इसलिये कि वह मृतकों के संसार से बचा लिया गया।

—मृतकों का संसार ? बरबास के मुँह से अकस्मात् जोरों से निकल पड़ा। उसका स्वर कम्पित सा हो उठा था—यह स्वयं उससे भी छिपा न था। मृतकों का संसार ?......वह कैसा है ? तुम तो वहाँ हो आये हो। बताओ वहाँ कैसा लगता है !

—वहाँ कैसा लगता है ? उस आदमी ने बरबास के शब्दों को दोहराया और प्रश्नसूचक दृष्टि से बरबास को देखा। उसका तात्पर्य यह था कि वह बरबास के प्रश्न को समझा न था।

—हाँ ! मैं जानना चाहता हूँ वहाँ जाकर तुमने क्या अनुभव किया ?

—मैंने वहाँ कुछ भी अनुभव नहीं किया ! उत्तर में बरबास की प्रश्न पूछने की अशिष्टता के विरुद्ध रुष्टता का भाव स्पष्ट रूप से झलक रहा था। मैं केवल मर गया था और मरणोत्तर जीवन की यही विशेषता है कि उसमें कुछ भी नहीं होता।

—कुछ भी नहीं होता ?

—नहीं। तुम क्या समझते हो—वहाँ क्या होना चाहिए ?

बरबास उसकी तरफ घूरता रहा।

—क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हें मृतकों के संसार के सम्बन्ध में

कुछ बताऊँ ? तो सुनो ! सच्ची बात यह है कि मैं कुछ भी नहीं बतला सकता । मृतकों के संसार में कुछ भी नहीं होता । उसका अस्तित्व होता है लेकिन उसमें होता कुछ भी नहीं ।

बरबारा अब भी केवल उसकी ओर घूरता ही रहा । उसे वह चेहरा बड़ा डरावना प्रतीत हो रहा था । लेकिन वह अपनी दृष्टि उस व्यक्ति पर से हटा नहीं सका ।

—नहीं, उस व्यक्ति ने बरब्बास के मुँह की ओर से दृष्टि हटाकर बाहर की ओर देखना शुरू कर दिया और कहा मृतकों का संसार कुछ भी नहीं है । जो वहाँ हो आया है उसके लिए भी वहाँ कुछ भी नहीं है ।

—यह बड़ी अजीब-सी बात है जो तुमने ऐसा प्रश्न किया । और लोग तो ऐसी जिज्ञासाएँ नहीं करते । तुमने ऐसा प्रश्न क्यों पूछा ?

उसी आदमी ने बरब्बास को यह बतलाया कि जेरूसलम में रहने वाले उसके बांधव बहुधा ऐसे व्यक्तियों को उससे मिलने के लिए भेजते रहते हैं जिनको वे बपतिस्मे द्वारा दीक्षित कर अपने धर्म में लेना चाहते हैं । इस सिलसिले में उसके पास बहुत से लोग आ चुके हैं । प्रभु ने जो ऋण भार उस पर चढ़ा दिया है उसे वह अपनी इन तुच्छ सेवाओं द्वारा थोड़ा-थोड़ा करके उतारने का प्रयत्न कर रहा है । लगभग इस युवक अथवा दो-एक अन्य व्यक्तियों के साथ उसके पास कोई न कोई आता रहता है और वह प्रमाणित करता रहता है कि प्रभु ने उसे मृतक जान कर ही जीवनदान दिया था । लेकिन किसी ने अभी तक उससे मृतकों के संसार के बारे में कभी कोई प्रश्न नहीं किया । यह पहली बार है—जब उससे इस सम्बन्ध में प्रश्न किया गया है ।

कमरे में क्रमशः अँधेरा बढ़ता जा रहा था । वह व्यक्ति उठा । उसने दिया जलाया । इसके बाद वह आदमी रोटी और नमक उठा लाया । उसने मेज पर दोनों के बीच नमक की कटोरी और रोटियों की तश्तरी

रख दी। रोटी का एक टुकड़ा तोड़ कर उसे नमक से स्पर्श कराते हुए उस आदमी ने बरब्बास से भी वैसा ही करने को कहा। बरब्बास मना तो न कर सका लेकिन रोटी का टुकड़ा तोड़ते समय उसके हाथ काँप रहे थे। वे दिए के मद्धिम प्रकाश में बैठे-बैठे नमक के साथ रोटी खाते रहे।

बरब्बास ने देखा कि यह आदमी भोजन में इस बात का कोई ध्यान नहीं रखता कि वह किसे अपने साथ खिला रहा है। उसे मनुष्य मनुष्य के बीच अन्तर करना नहीं आता—जैसा कि जेरूसलम की कुम्हार गली में रहने वाले उसके बन्धु-बांधवों को बरब्बास ने करते देखा था। लेकिन जब उसने देखा कि उस आदमी की पीली मृत उँगलियों से छुआ हुआ भोजन वह भी कर रहा है तो उसको ऐसा लगा जैसे सड़ी लाश की बदबू उसके मुँह में भर गयी है।

कुछ भी हो—इसका मतलब क्या है, उसका इस आदमी के साथ बैठ कर भोजन करना इसका मतलब क्या है? इस विचित्र भोजन का गुप्त रहस्य क्या है?

जब भोजन समाप्त हो गया तो वह आदमी दरवाजे तक बरब्बास को पहुँचाने आया और उससे शान्तिपूर्वक अपने निवास-स्थान तक जाने के लिए कह कर बिदा कर गया। बरब्बास ने मन्द स्वर में कुनमुना कर कुछ कहा और जल्दी से उससे बिदा लेकर चल दिया। वह शीघ्रतापूर्वक कदम बढ़ाता हुआ अँधेरे में जाकर खो गया और पहाड़ी ढाल पर से नीचे उतर कर शहर में आ गया। लेकिन इस बीच उसके मस्तिष्क में तरह-तरह के विचार बराबर चक्कर काट रहे थे।

जब वह अपने डेरे पर पहुँच गया तो उसने मोटी स्त्री को अपनी छाती से लगा लिया। उसका यह व्यवहार देख कर वह स्त्री विस्मय मुग्ध हो गयी। उसे बरब्बास के इस व्यवहार का कोई कारण मालूम नहीं था। लेकिन उस रात स्त्री ने अनुभव किया कि बरब्बास को नियंत्रित करने की भी आवश्यकता है। और यदि कोई बरब्बास को नियंत्रित कर सकता

है—उसे अपने हाथ में ले सकता है तो केवल वही है। वह रात भर अपने प्रेमविभोर सपनों में ही डूबी पड़ी रही। वह पुनः तरुणी हो गयी थी और कोई उससे प्रेम करता था......

दूसरे दिन बरबास जेरूसलम के दक्षिणी भाग में नहीं गया और अपने आपको कुम्हार गली की ओर जाने से भी बचाता रहा। लेकिन शहर के उत्तरी भाग में उसे एक आदमी ने पकड़ ही लिया। वह उसकी निगाहों से बच न सका। उसने बरबास से उसके पास आकर पिछले दिन के अनुभव के बारे में प्रश्न किया। बरबास ने कह दिया कि उसे इसमें सन्देह है कि वह व्यक्ति मर गया था और उसे प्रभु ने पुनः जीवन दे दिया। उस व्यक्ति का चेहरा बरबास के इस उत्तर के कारण राख की तरह सफेद हो गया। अपने प्रभु के अपमान का यह धक्का उसे बड़े जोर से लगा था। कुम्हार एक दम स्तब्ध हो गया था। बरबास ने उसकी तरफ अपनी पीठ करते हुए मुँह फेर लिया और उसे चला जाने दिया।

ऐसी प्रतिक्रिया केवल कुम्हार गली में ही नहीं, तेलियों, चमारों तथा बुनकरों के मोहल्लों में भी अवश्य ही हुई होगी क्योंकि कुछ दिनों बाद जब वह उन मोहल्लों में गया तो उससे किसी ने सीधे मुँह बात नहीं की। सबने अपनी मुखमुद्रा से स्पष्टतः अविश्वास का भाव प्रकट कर दिया। एक आदमी ने तो उससे यहाँ तक कह दिया कि अब वह क्यों उन लोगों के बीच आता है। क्या यह कोई सरकारी गुप्तचर है? बरबास वहाँ चुपचाप खड़ा रहा। जिस आदमी ने उससे यह सब कहा वह गंजा और बुड्ढा था और उसका चेहरा एकदम लाल था। बरबास उसे जानता न था। उसे यह भी ज्ञान न था कि वह हो कौन सकता है। इसके पहले बरबास ने उस बुड्ढे को पहले कभी नहीं देखा था।

बरबास समझ गया कि उसने इन लोगों को रुष्ट कर दिया है और इन सबका भाव अब उसके प्रति बिलकुल बदल गया है। वह जहाँ जाता वहाँ कठोर मुखमुद्राएँ और झिड़कियां द्वारा उसका स्वागत होता।

और एक दिन ऐसा हुआ कि यह खबर चारों ओर दावाग्नि की भाँति फैल गयी कि यही वह व्यक्ति है जिसके स्थान पर देवपुत्र को फाँसी दी गयी थी। यही वह है ! यही वह है !!

रोषभरी कनखियों से उसे देखा जाता। हर एक की दृष्टि से घृणा बरसती। लोगों का क्रोध इतना बढ़ गया था कि बरब्बास के उनकी दृष्टि के सामने न पड़ने पर भी वह कम न हुआ।

६

वह अब दिन भर घर में ही छिपा बैठा रहता और किसी से भी एक क्षण के लिए भी बात न करता। किसी भी काम के लिए वह घर से बाहर न निकलता। या तो वह उस मोटी स्त्री के मसहरीदार पलँग पर लेटा रहता अथवा ऊपर छत पर चला जाता—खास तौर से उस समय जब वह देखता कि घर में अन्दर लोगों का आना-जाना और शोर बराबर बढ़ता जा रहा है। हफ्तों इसी प्रकार बीत गये। न वह कोई काम करता और न किसी से बात करता। बस बिस्तर पर पड़े-पड़े केवल अपने विचारों में डूबा रहता। वह भोजन की भी चिन्ता न करता। भोजन उसके सामने लाकर रख दिया जाता था और उसे मिन्नतें करके खाने के लिए कहा जाता था—इसलिए वह खा लिया करता था। वह हर वस्तु के प्रति उदासीन हो गया।

उस स्थूलकाय स्त्री की समझ में ही नहीं आता था कि बरब्बास को रोग क्या है ? उसकी बीमारी का निदान करना उसकी बुद्धि के परे की बात थी। उसे यही सबसे अधिक ठीक लगता था कि बरब्बास को शांति-पूर्ण स्थान में छोड़ दिया जाय और यही बरब्बास स्वयं भी चाहता था। कोई प्रश्न पूछे जाने पर शायद ही वह कभी उत्तर देता हो। यदि उत्तर भी देता था तो वह इतना संक्षिप्त होता था कि बात करने की इच्छा रखने वाले के सारे उत्साह पर ही पानी फिर जाता था। वह केवल बिस्तर

पर पड़ा-पड़ा छत की ओर ताका करता था। नहीं, यह उसके बूते का रोग न था। वह बरब्बास को नहीं सँभाल सकती थी। क्या वह पागल हुआ जा रहा है? क्या उसका दिमाग ठिकाने नहीं है? लेकिन यह नहीं, स्थिति इससे भी अधिक गंभीर थी।

एक दिन उसकी समझ में सारी बात आ गयी। कुछ पागलों ने बरब्बास से जो यह कह दिया कि उसके स्थान पर जो दूसरा आदमी सूली पर चढ़ गया था—वह उनका ईश्वर था। बरब्बास को फाँसी पर चढ़ाया जाना चाहिए था—न कि 'देवपुत्र' को। अच्छा तो यही व्यक्ति बरब्बास की इस अवस्था के कारण हैं। कोई सन्देह नहीं कि इन्हीं लोगों ने तरह-तरह के पागलपन के विचारों से बरब्बास का दिमाग भर दिया है। सब लोगों का एक स्वर से किसी को बदनाम करना किसी को भी संचेत्य बना सकता है। जो लोग बरब्बास को बदनाम करते फिरते हैं उनका कहना था कि जो व्यक्ति बरब्बास के स्थान पर सूली पर चढ़ा दिया गया था वह उनका रक्षक था—अवतार था, जो उन्हें सब कुछ देता था।

लेकिन इसमें बरब्बास का तो कोई दोष न था। बरब्बास को इससे क्या मतलब कि वह उनके अवतारी व्यक्ति को फाँसी दिलवा देता और स्वयं सूली से बच जाता। वह तो जेरूसलम का राजा न था। हाँ, अब सारी बात उसकी समझ में आ गयी थी। उसे लोगों ने समझाया होगा कि सूली पर चढ़ा व्यक्ति कितना बड़ा, कितना निर्दोष था और यह कितनी गम्भीर बात है कि उस व्यक्ति के साथ ऐसा असभ्य व्यवहार किया गया। अवश्य ही ऐसी ही बातों ने बरब्बास का दिमाग खराब किया होगा।

यदि उसे पहले यह बात मालूम हो गयी होती तो वह न जाने कब की बरब्बास को समझा देती। उसका बरब्बास कितना सीधा-सादा, कितना भोला-भाला है।

लेकिन अब समय आ गया है जब उसे जाकर बरब्बास को समझा देना है। वह उससे बात करेगी। यह सब क्या मूर्खता है?

लेकिन वह बरब्बास से बात न कर पायी। वह इस बारे में केवल सोचती ही रह गयी। न जाने ऐसा क्या कारण था कि बरब्बास से अपने आप बातें करना कोई भी आरम्भ नहीं कर सकता था। बात करने की इच्छा होते हुए भी उसे आरम्भ करना कठिन था।

अतएव, सभी बातें पूर्ववत् चलती रहीं। क्या वह अस्वस्थ है? शायद वह रोग-ग्रस्त है? वह निर्बल हो गया था। उसके चेहरे पर इलियाहू की लड़ाई में जो घाव लग गया था—उसका ऐसा निशान था—जो चेहरे भर में सबसे अधिक लाल प्रतीत ही था। उसे देखकर दुख होता था। वह अब पहले जैसा हँसमुख और निर्द्वन्द फिर भी अत्यन्त बलवान व्यक्ति न था। उसका अतीत का व्यक्तित्व इस प्रकार सोचते रहने की कल्पना भी नहीं करने देता था। बरब्बास! बरब्बास जैसा आदमी कभी सोचते-सोचते दिन और हफ्ते काट सकता था? हरगिज नहीं!

मान लो कि शायद बरब्बास न हो। बरब्बास के शरीर में शायद कोई दूसरी आत्मा आकर बस गयी हो। जरा सोचो तो यदि वह अपने आप में न रहा हो। बरब्बास का असली व्यक्तित्व सूली पर चढ़ा दिया गया हो और उसके शरीर में दूसरे शरीर की आत्मा ने आकर कब्जा कर लिया हो और जो आत्मा निश्चयतः बरब्बास का कोई लाभ न होने देना चाहती हो—तब? कल्पना कर लो कि जब वह 'अवतारी' मरा हो तब उसकी आत्मा बरब्बास के शरीर में आ गयी हो—जिससे वह नष्ट न हो और उसके साथ जो अन्याय किया गया है, उसका बदला ले सके। उससे जो उसके स्थान पर छोड़ा गया है। यह बिलकुल संभव है। और जब इस विचार से बरब्बास की कल्पना करती है तो यह स्पष्ट हो जाता है कि उस समय से जब से बरब्बास छूटा है—बिलकुल बदल गया है। हाँ, उसे याद है जब वह छूटने के बाद सबसे पहले यहाँ आया था—तब उसने कैसा विचित्र व्यवहार किया था। हाँ, अब इससे सारी बात समझ

में आ जाती हैं। केवल एक ही बात स्पष्ट नहीं हो पा रही है कि उस 'धर्मरक्षक' की आत्मा ने बरब्बास के शरीर में कैसे प्रवेश पाया होगा क्योंकि उसने तो प्राण गोलगोथा में त्यागे थे और वहाँ बरब्बास तो गया नहीं था। लेकिन यदि वह व्यक्ति इतना शक्तिशाली था जैसा कि अन्य लोग कहते हैं तो वह कुछ भी कर सकता था। इसमें संदेह नहीं कि उसे ऐसी शक्ति अवश्य प्राप्त होगी जिसके अनुसार वह जैसा चाहे कर सके।

क्या बरब्बास स्वयं भी जानता है कि उसे क्या हो गया है? कि उसमें किसी और की आत्मा आ गयी है? कि वह स्वयं मर गया है और सूली पर चढ़े व्यक्ति की आत्मा उसके शरीर में जीवित है? क्या वह यह सब जानता है?

संभवतः उसे कोई सन्देह नहीं है। लेकिन यह समझना कठिन नहीं है कि वह सबसे अधिक कष्ट भोग रहा है। कोई आश्चर्य नहीं कि उसे कष्ट देने वाली कोई दूसरी आत्मा है जो उसका किसी भी प्रकार भला नहीं चाहती।

उसे बरब्बास के लिए बड़ा दुख हो रहा था। इतना कि उसकी तरफ देखते ही वह रो पड़ती थी। जहाँ तक उसका सम्बन्ध था वह उसकी ओर देखता भी न था। बरब्बास को अब रात को भी उस स्त्री की आवश्यकता न पड़ती थी। यह शायद सब से खराब बात थी। उसमें यह भाव निहित था कि बरब्बास को अब किसी की चिन्ता शेष नहीं रह गयी है। वही अकेली ऐसी थी जो उस बेचारे गरीब का पल्ला पकड़े थी। वह रात-रात भर अपने बिस्तर पर पड़ी रोया करती थी—लेकिन अब वह जरा स्वस्थ हुई थी। अजीब......उसे ऐसा अजीब अनुभव हुआ था कि वह जिन्दगी में फिर कभी उसे दोहराना नहीं चाहती थी।

वह अब उसे कैसे पुनः प्राप्त करे? वह सूली पाये व्यक्ति की आत्मा से अपने प्रियतम के शरीर और आत्मा को किस प्रकार मुक्त कराये? उसे इस बात का अनुमान भी नहीं था कि परायी आत्माओं से

शरीर को किस प्रकार मुक्त कराया जा सकता है ? उसे इस सम्बन्ध में बिलकुल ही कुछ भी न मालूम था। वह करीब-करीब बुरी तरह से डर गयी थी। सामान्यतः वह भीरु प्रकृति की न थी—लेकिन कितना भी साहसी कोई हो—बरबास की भयंकर मुखमुद्रा देख कर उसका साहस कूच कर जाता था। उसे लगता था कि रोग की चिकित्सा करना उसके वश की बात नहीं है। कोई आश्चर्य नहीं था कि वह जरा डर-सी जाय।

लेकिन फिर उसके दिमाग में आया नहीं वह डरी नहीं है। उसका शरीर काफी लम्बा-चौड़ा बलवान और ऐसा है जो बरबास के उपयुक्त है। वह बरबा.. -जो पहले था। सबसे पहले तो बरबास के मस्तिष्क में यही विचार आया था कि उसी को सूली पर चढ़ाया जाना चाहिए था। उसे उस समय यही प्रसन्नता हुई थी—उसका आदमी, उसका बरबास बच गया था।

यह भावनाधारा थी जो उस स्थूल शरीर वाली स्त्री के मानस में उमड़-घुमड़ कर उसे उद्वेलित कर रही थी। जब भी वह अकेली बैठती उसको चारों ओर से ऐसे ही विचार आ कर घेर लेते थे। लेकिन अन्त में उसने एक दिन यह परिणाम निकाला कि वह बरबास के सम्बन्ध में वस्तुतः कुछ भी नहीं जानती है। न वह यही जानती है कि बरबास को रोग क्या है और न वह यही जानती है कि सूली पर चढ़ाये गए व्यक्ति की आत्मा बरबास के शरीर में है या नहीं। वह कुछ भी नहीं जानती। बस वह केवल इतना ही जानती है कि बरबास उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं देता और वह इतनी मूर्खा है कि उससे प्रेम ही करे चली जा रही है ! यह विचार मात्र उसे रुला देने के लिये पर्याप्त था—और वह स्वयं अकेले में पड़ी-पड़ी दुखित हुआ करती थी।

इसके बाद बरबास जेरूसलम में जितने दिन रहा—वह शहर में केवल एक या दो बार ही गया। एक बार तो ऐसा हुआ कि वह एक ऐसे मकान में पहुँच गया जो तहखाने की तरह था और उसमें वायु और

प्रकाश आने के लिए दीवालों में इधर-उधर छेद थे। उसमें खाल और तेजाब की बू चारों ओर बड़े जोरों से महकती थी। स्पष्टतः वह स्थान चमड़े के कारीगरों के काम करने का स्थान रहा होगा—यद्यपि वह तहखाने सा मकान चमारों के मोहल्ले में न था। वह मकान कंद्रों की घाटी के पास मन्दिर पर्वत के बगल में था—जिससे ऐसा लगता था कि वहाँ बलि किए गए जानवरों की खाल उतारी जाती होगी। लेकिन अब वहाँ यह काम नहीं होता था। दीवालों के सहारे जो हौज वगैरह बने थे वे खाली पड़े थे। फिर भी उनमें से चमड़े तथा तेजाब की महक अभी बन्द नहीं हुई थी। वहाँ का फर्श चीड़ के टुकड़ों से भरा पड़ा था। यही नहीं जो कुछ कूड़ा वहाँ फेंका जा सकता था वह सब भी वहाँ जमा था। बदबू इतनी तेज उड़ती थी कि वहाँ बैठना तो दूर वहाँ के आसपास से निकल जाना कठिन था।

लेकिन बरब्बास ऐसे तहखाने के दरवाजे के बगल में जाकर बैठ गया। उसके बैठने का स्थान ऐसा था जहाँ से आसानी से उसे कोई देख नहीं सकता था। पास ही कमरे में लोग प्रार्थना कर रहे थे। यद्यपि वहाँ अँधेरा था फिर भी उस अँधेरे में से भी प्रार्थना के मन्द-मन्द स्वर उस स्थान तक सुनायी पड़ रहे थे जहाँ बरब्बास बैठा हुआ था। लेकिन बीच-बीच में सहसा सबका कण्ठ-स्वर सबल हो उठता और पहले से अधिक जोरों से प्रार्थनाएँ करने लगते। अधिकांश लोगों को बरब्बास नहीं देख सकता था। लेकिन उसने अपने समीपतम व्यक्ति को देखा जो पसीने से लथपथ था। उसने उस व्यक्ति को प्रार्थना करते हुए देखा था—उसने यह भी देखा कि पसीना किस प्रकार उसके गालों पर हो-होकर बह रहा था। वह अधेड़ आयु का व्यक्ति था। जब उसने अपनी प्रार्थना समाप्त कर ली तो वह साष्टांग भूमि पर दण्डवत् लेट गया और अपना मस्तक भूमि से स्पर्श करा दिया। ऐसा ही प्रार्थना के बाद अन्य लोग भी कर रहे थे।

इसके बाद बरबास को दूर से एक आवाज आती सुनायी दी। बरबास को ऐसा लगा कि वह इस आवाज को पहचानता है। जब उसने और नीचे झुककर देखा तो वह पहचान गया कि यह वही व्यक्ति है जिसकी लाल दाढ़ी है और जो उसे एक दिन एक उपासनागृह की ड्योढ़ी से मिला था और जिसने रो-रोकर अपनी व्यथा उससे कही थी। उस लाल दाढ़ी वाले गैलीलियन व्यक्ति पर चारों ओर से प्रकाश पड़ रहा था। वह गम्भीर और शान्त स्वर में बोल रहा था। उसके भाषण का यह ढंग और लोगों से भिन्न था—जो चिल्ला कर अत्यन्त भावुकतापूर्वक बोलने का प्रयत्न करते हैं। सबसे पहले उसने अपने प्रिय गुरु और प्रभु के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट किये और तब उसने कहा कि प्रभु ने कहा था कि जो उनमें विश्वास करेंगे उनको अपने प्रभु के प्रति विश्वास रखने के कारण अत्याचार सहने होंगे। यदि उन्होंने अत्याचारों और कष्टों को साहसपूर्वक झेल लिया तो वे अपने प्रभु को तथा उनके कष्टों को सदैव स्मरण रख सकेंगे। लेकिन गैलीलियन कहता गया कि हम सब लोग निर्बल और दुखी एवं सन्तप्त मानव हैं। हम में वे गुण नहीं जो प्रभु में थे लेकिन इतने पर भी वे सब प्रकार की मुसीबतों को बरदाश्त करेंगे और अपने धर्म को किसी भी अवस्था में न छोड़ेंगे। वे कभी उनका विरोध नहीं करेंगे। बस। इसके बाद उपदेश समाप्त हो गया लेकिन इससे श्रोता संतुष्ट न जान पड़े। और ऐसा प्रतीत होता है कि यह बात उस लाल दाढ़ी वाले व्यक्ति ने भी अनुभव कर ली। अतएव उसने कहा कि वह उस प्रार्थना का पाठ करेगा जो उसे प्रभु ने सिखायी थी। इसके बाद उसने प्रार्थना का पाठ किया। इस प्रार्थना के उपरान्त प्रायः सभी सन्तुष्ट दिखलायी पड़े। कुछ की आँखों में तो आँसू आ गये थे और उनका कण्ठ अवरुद्ध हो गया था। पूरा कमरा एक अपूर्व बांधविक-स्नेह के वातावरण से भरा-सा हुआ था। जब वह व्यक्ति नीचे उतर कर आया तो कुछ लोग उसे बधाइयाँ देने को आगे बढ़े। बरबास

ने देखा कि उस व्यक्ति को वही लोग घेरे थे जिन्होंने उसे 'भाग जा कमीने !' आदि कह कर उसे भगाया था।

इस बीच प्रार्थना और उपासना का कार्य चलता रहा और कुछ लोग तो बिलकुल समाधिस्थ से हो गये। बरबास उन सबको देखता रहा। इसके साथ ही वह प्रार्थना सम्बन्धी संकेत भी लिखता गया।

पता नहीं कैसे अकस्मात् ही एक साथ सब के सब जोर-जोर से प्रार्थना पढ़ने लगे। उसने प्रकाश की रेखा की सहायता से अपने पास खड़ी ओठ कटी युवती को भी देखा। वह अपने दोनों हाथ छाती पर रखे थी। उसका पीला चेहरा प्रकाशोन्मुख था। उसने उस युवती को कब्रगाह के बाद उस दिन पहली बार देखा था। वह उस दिन के बाद से और भी दुबली हो गयी थी। रक्त तो जैसे उसके शरीर में रहा ही नहीं था। शरीर पर केवल फटे कपड़े शेष रह गये थे। मन भी बड़ा दुखी प्रतीत हो रहा था। समस्त उपस्थित व्यक्तियों की दृष्टि उस पर केन्द्रित थी। सभी यह सोच रहे थे कि यह युवती कौन है। किसी का उससे परिचय नहीं जान पड़ता था। यह भाव लोगों के चेहरों से साफ-साफ पढ़ा जा सकता था कि उन्हें उस युवती की उपस्थिति बहुत अच्छी नहीं मालूम हो रही थी। परन्तु वे लोग उसका कोई कारण नहीं बता पा रहे थे सिवा इसके कि उसके बदन पर फटे, पुराने कपड़े हैं। वे लोग यह भी सोच रहे थे कि यह युवती अपने उपदेश में क्या कहेगी ?

वह क्या कहने के लिए खड़ी हुई है ? उसे क्या कहना है ? कई बार यही प्रश्न बरबास के मन में आ रहा था। संभवतः वह यह तो अनुभव कर ही रही थी कि वह उस स्थान पर खड़े होकर बोलने के उपयुक्त नहीं है। पता नहीं बरबास क्यों उत्तेजित हो गया था। उसे तो कुछ लेना-देना भी न था। वह प्रभु के भक्तों के समक्ष क्या साक्षी देना चाहती है ?

उसके मुँह के भावों से ऐसा लगता था जैसे वह स्वयं भी बोलने के स्थान पर खड़ी होने के कारण सन्तुष्ट न हो। लेकिन वह खड़ी थी।

उसके नेत्र पलकों से ढके थे---और ऐसा लगता था जैसे वह किसी को भी देखना न चाहती हो। वह किसी प्रकार अपना वक्तव्य देकर कार्य समाप्त कर देने के लिए अत्यन्त इच्छुक जान पड़ती थी। ऐसी दशा में बरजारा सोच रहा था—उसे बोलने की ही क्या आवश्यकता थी।

—और तब उसने बोलना आरम्भ किया। प्रभु का स्मरण करने के बाद उसने उनमें अपनी हार्दिक आस्था प्रकट की। इसमें कोई ऐसी बात न थी जो किसी के लिए मर्मस्पर्शी सिद्ध हो सके। इसके विपरीत वह पहले की अपेक्षा भी खराब स्वर में बोली और ऐसा लगता था कि इतने लोगों की उपस्थिति के कारण घबड़ाहट के मारे उसके कण्ठ से स्वर ही नहीं फूट पा रहा था। सब लोगों ने साफ-साफ अपनी बेचैनी प्रकट कर दी। फलस्वरूप उसने जल्दी ही अपनी साक्षी समाप्त कर प्रभु की सेवा का व्रत लिया और मंच पर से नीचे उतर आयी और भीड़ में लुप्त हो गयी। श्रोताओं को ऐसा लगा जैसे उस युवती ने सबके सामने अपना परिहास करा लिया हो। सब लोग सभा की समाप्ति के लिए नजर आ रहे थे—अतः एक व्यक्ति ने जो बरबास से 'भाग जा कमीने' आदि कहने वालों का नेता था—मंच पर खड़ा हो गया और उसने सभा विसर्जित होने की घोषणा कर दी। उसने यह भी कहा कि सब ही जानते हैं कि अब की बार प्रार्थना सभा इस स्थल पर आयोजित क्यों की गयी। वह शहर में क्यों नहीं आयोजित की जा सकी। अगली सभा कहाँ हो सकेगी यह नहीं कहा जा सकता। लेकिन भगवान उनके लिए किसी ऐसे स्थान का प्रबन्ध अवश्य कर देंगे जहाँ से वे दुनिया की बुराइयों से बचे रह कर प्रभु का स्मरण कर सकें। वे अपनी शरण में आये हुए लोगों का परित्याग न करेंगे। प्रभु हम लोगों के चरवाहे हैं और हम लोग उनकी भेड़ें हैं......

बरबास ने आगे और कुछ नहीं सुना। वह लोगों के पहले ही वहाँ से खिसक आया और प्रसन्न था कि वह उन सबसे अलग है।

उन लोगों का विचारमात्र उसे परेशान कर देता था।

७

जब दमन कार्य आरंभ हुआ तो एक अंधे बुड्ढे आदमी ने जाकर एक दण्डनायक से जाकर शिकायत की। अंधे को वह युवक दण्डनायक तक लाया था जो सदैव हाँफा करता था। अंधे ने कहा :

—हम लोगों के बीच रोगी बस्ती में एक औरत आ गयी है जो यह अफवाह फैलाती फिरती है कि कोई मुक्तिदूत आने वाला है—जो सारी पुरानी दुनिया को नष्ट कर देगा और नयी दुनिया बसायेगा। जो कुछ है वह सब विध्वस्त कर दिया जायगा और दूसरी अच्छी दुनिया बनेगी जिसमें केवल उसी का राज होगा—उसकी ही चलेगी। क्या हम लोग पत्थर मार-मार कर उसे मार डालें ?

दण्डनायक जो जरा समझदार था उसने अंधे से अभियोगों के कारण पूछे।

दण्डनायक ने सबसे पहला प्रश्न यह किया कि वह कैसा मुक्तिदूत है ? इसका उत्तर अंधे ने यह दिया कि वैसा ही जिसका प्रचार करने के लिये अन्य बहुत से लोगों को ढेले चला-चला कर मार डाला गया है। और यदि न्याय है तो उस ओंठ कटी औरत को भी यही सजा मिलनी चाहिए। उसने उससे स्वयं यह कहते सुना है कि उसके भगवान सबको बचायेंगे—यहाँ तक कि कोढ़ियों की भी वे रक्षा करेंगे। वे उनका उचित उपचार करेंगे और उन्हें भी वैसा ही स्वच्छ और नीरोग कर देंगे जैसे कि अन्य लोग हैं। लेकिन जब कोढ़ी भी अन्य सब की भाँति हो जायँगे तब क्या होगा ? वे लोग तो सब स्थानों में जायँगे और फिर शायद घण्टियाँ भी न बाँधेंगे—इसलिये लोग जान भी न सकेंगे कौन क्या है। कोई यह भी न जन सकेगा कि वे कहाँ हैं। कम से कम उस जैसे तो अंधे नहीं ही

जान सकेंगे। क्या यह उचित है कि इस प्रकार की अफवाहें और सुनी-सुनायी बातें फैलायी जायँ।

कुछ दूरी पर अँधेरे से स्थान में दण्डनायक अपनी दाढ़ी पर हाथ फेर रहे थे। तब उस अंधे से कहा गया कि क्या वह कोई गवाही ला सकता है।

—अवश्य। वह एक नहीं कई गवाहियाँ दिला सकता है। रोगी बस्ती के बाहर वाले हिस्से में हमेशा कुछ लोग ऐसी बातों को सुनने के लिये बैठे रहते हैं। बस्ती के कोढ़ी तो अवश्य ही ऐसी बातें सुनना पसन्द करते हैं। वह उन्हीं लोगों के साथ अधिक बातें करती है। इससे भी अधिक चिन्ता की बात यह है कि वह कई बार कोढ़ी बाड़े में हो आई है। कहा जाता है कि उसने कोढ़ियों में अनेक बार लज्जाजनक रुचि ग्रहण की है। उसने उन लोगों में से कई के साथ तो यहाँ तक कहा जाता है कि यौन-संबंध तक स्थापित कर लिये हैं। लेकिन मुझे व्यक्तिगत रूप से इस संबंध में कोई जानकारी नहीं है। जो कुछ मैंने सुना है उसके आधार पर कम से कम मैं इतना तो कह ही सकता हूँ कि वह कुमारी नहीं रही है। समझा जाता है कि उसके एक बच्चा भी हुआ था जिसे उसने मार डाला। जहाँ तक मेरे कानों का सवाल है वे अपना काम बिलकुल ठीक-ठीक करते हैं; केवल मेरी आँखों ने ही जवाब दे रखा है। क्या करूँ—मैं अंधा हूँ। और यही मेरा सबसे बड़ा दुर्भाग्य है, श्रीमान!

दण्डनायक ने इसके बाद पूछा कि क्या यह भी सत्य है कि जिसे वह 'मुक्तिदाता' कहती है वह वही व्यक्ति है जिसको सूली दी जा चुकी है और क्या उस औरत के जरिए सूली पर चढ़े व्यक्ति की शिक्षाओं को मानने वालों की संख्या बढ़ी है?

—हाँ, यह सच है। वे सब के सब यह चाहते हैं कि स्वस्थ हो जायँ और वह यह कहती है कि प्रभु की कृपा से सब अच्छे हो जायँगे। लँगड़े-लूलों को लुप्त अंग मिल जायँगे, पागलों का दिमाग ठीक हो जायगा

और अंधों को आँखें मिल जायँगी। कहने का आशय यह है कि संसार में बिलकुल दुख-दर्द रह ही न जायगा। लेकिन इधर वे लोग कुछ नाराज से हो गये हैं क्योंकि उसके आश्वासनों के बावजूद उसके प्रभु का कहीं पता नहीं है और सब की तकलीफें ज्यों की त्यों हैं। कुछ लोग उसका मजाक उड़ाते हैं और गालियाँ भी देते हैं। लेकिन कोढ़ियों का विश्वास अभी छूटा नहीं है। इसका कारण यह है कि उसने उनको वैसे आश्वासन दे रखे हैं। उसने वादा किया है कि सभी कोढ़ियों को उपासनागृह में भगवान के समक्ष प्रार्थना करने के लिये जाने दिया जायगा।

—कोढ़ियों को।

—हाँ।

—वह इस प्रकार के निराधार वचन कैसे दे सकती है?

—जी, इसका कारण यह है कि वह जो आश्वासन देती है अपने प्रभु की ओर से देती है और उसके प्रभु सर्वशक्तिमान हैं। वे जो चाहें सो कर सकते हैं। वे जो चाहें सो परिवर्तन कर सकते हैं। वे देवपुत्र हैं!

—वे देवपुत्र हैं!

—हाँ।

—क्या वह यह भी कहती है कि वह व्यक्ति देवपुत्र था?

—हाँ। लेकिन यह केवल आँखों में धूल झोंकना है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति जानता है कि उसे सूली पर चढ़ा दिया गया था। और मैं नहीं समझता कि इस संबंध में और अधिक छानबीन करने की भी कोई आवश्यकता है। जिन्होंने उस व्यक्ति को सूली पर चढ़ाये जाने की आज्ञा दी वे अवश्य ही जानते होंगे कि वे क्या कहने और करने जा रहे हैं और उन्होंने जो कुछ कहा और किया होगा वह सोच-समझ कर ही किया और कहा होगा। या क्या ऐसी बात नहीं है?

—मैं स्वयं उनमें से एक था जिसने सजा सुनायी थी।

—ओह, तब तो आप उसके बारे में सभी कुछ जानते होंगे!

इसके बाद थोड़ी देर के लिए शान्ति छा गयी। थोड़ी देर बाद दण्डनायक ने घोषणा की कि उस औरत को न्यायालय में उपस्थित होने की आज्ञा दी जायगी और उससे कहा जायगा कि यदि हो सके तो वह अपनी रक्षा करे और जो अभियोग उसके विरुद्ध हैं उनका उत्तर दे। अंधा बुड्ढा झुक कर सलाम करता हुआ वादी के कठघरे से नीचे उतर आया और सलाम करने के साथ शुक्रिया अदा करना न भूला। अंधे बुड्ढे को नीचे उतारने के लिए दण्डनायक ने अपने सेवक भेजे। उन लोगों ने सुरक्षा के ध्यान से उस अंधे बुड्ढे से पूछा कि क्या उसकी उस औरत से कोई नाराजी तो नहीं है।

—नाराजी ? मेरी क्या नाराजी होती ? मेरी कभी किसी से कोई दुश्मनी रही ही नही ! मैंने तो उनमें से किसी को देखा तक नहीं है।

सेवकों ने उसे उतरने और न्यायालय के बाहर जाने में मदद की। बाहर वह रोगी युवक खड़ा था। वह अंधे को देख कर उस स्थान से बाहर निकल आया जहाँ वह छिपा खड़ा था। उसने आकर अंधे का हाथ पकड़ लिया और इसके बाद दोनों अपने स्थानों को वापस चले गए।

जब उस ओठ कटी युवती को सजा सुना दी गयी तब उसे उस स्थान पर ले जाया गया जहाँ अपराधियों की पत्थर मार-मार कर जान ले ली जाती थी। यह स्थान नगर के दक्षिण में था। उसके साथ मंदिर के सहायक अधिकारी तथा कुछ वरदीधारी सिपाही उस स्थान तक गए और पीछे बड़ी लम्बी-चौड़ी भीड़ थी। युवती को स्थान पर आ जाने पर पत्थर के गड्ढे में नीचे उतार दिया गया। सारी भीड़ गड्ढे के चारों ओर बिखर गयी। गड्ढे में जो पत्थर पड़े थे उनमें खून के निशान भी जगह-जगह पड़े हुए थे।

उपस्थित सैनिक अधिकारी ने भीड़ से शान्त हो जाने के लिए कहा और धर्माधिकारी ने उस युवती को दिए गए दण्ड का कारण बतलाने

हुए कहा कि जिस आदमी ने उस पर अभियोग लगाया है वही उसे सब से पहला पत्थर मारेगा। बुड्ढे अंधे को सामने लाया गया। लेकिन वह किसी भी तरह सब से पहले पत्थर मारने को राजी ही न हुआ क्योंकि उसका मत था कि जब उसने कभी उस औरत को देखा ही नहीं तब पत्थर क्यों मारे ?

—मैं क्यों उसे पत्थर मारूँ ? मेरा उससे क्या सम्बन्ध ? मैंने उसे कभी देखा नहीं ?

लेकिन जब उसे समझाया गया कि उसे तो पहला पत्थर मारना ही होगा और वह यह करने से बच नहीं सकता क्योंकि कानून ही ऐसा है तो उसने कुछ शिकायत की ध्वनि में कुनमुनाते हुए वैसा करना स्वीकार कर लिया। उसके हाथ में एक पत्थर दिया गया। उसने चलाया लेकिन वह लगा नहीं क्योंकि उसने उसे बिना किसी निशाने के फेंका था। उसने फिर प्रयत्न किया लेकिन वह सफल नहीं हुआ। तब तीसरी बार एक आदमी ने अंधे की सहायता की। पत्थर मारने में अंधे की सहायता करने के लिए जो आदमी सामने आया था वह देखने में अत्यन्त क्रूर, कठोर और बिना बालों वाले मुँह का वयवान व्यक्ति था। उसने अंधे के हाथ में पत्थर देकर उसका हाथ पकड़ कर इस प्रकार चलवाया कि युवती को पत्थर लग जाय लेकिन परिणाम कुछ भी नहीं हुआ। पत्थर उस युवती से बहुत दूर जा कर गिरा। दण्डित युवती विस्फारित और चमकीले नेत्रों से चारों ओर देख रही थी कि अब क्या होने जा रहा है।

एक अधीर व्यक्ति इतना बेचैन हो उठा कि वह नीचे गड्ढे में उतर गया और उसने एक बड़ा-सा पत्थर उठा कर पूरी शक्ति से ओट कटी युवती पर दे मारा। उस पत्थर की युवती के बड़ी गहरी चोट आयी और वह गिर पड़ी तथा उसने अत्यन्त असहाय भाव से अपने हाथ ऊपर उठा दिए। भीड़ से अपनी प्रसन्नता की चीख रोकी न जा सकी और इस चीख को अपनी प्रशंसा समझ कर पत्थर मारने वाला व्यक्ति अपने ही

स्थान पर बड़े गर्व से खड़ा हो खून में लथपथ उस युवती को देखता रहा। बरब्बास अब आगे बढ़ आया और उस आदमी के पास दाहिनी ओर निकटतम स्थिति में पहुँच गया। उसने धीरे से अपना लबादा ऊपर उठाया और छुरा निकाला। पता नहीं कब अभ्यस्त हाथों ने छुरा पहला पत्थर मारने वाले व्यक्ति की बगल में भोंक दिया। यह सब कुछ इतनी तेजी के साथ हुआ कि कोई कुछ भी समझ ही नहीं सका कि यह हुआ क्या और कोई देख भी नहीं पाया। और इसके अलावा ये सब लोग पत्थर मारने में जुटे थे।

बरब्बास ने अपने जाने के लिए लोगों को चीर कर मार्ग निकाल लिया और गड्ढे में नीचे झुक कर देखा। नीचे वही ओठ कटी युवती लड़खड़ाती हुई इधर-उधर हट कर पत्थरों से बचने का प्रयत्न कर रही थी और वह दोनों हाथों को उठा कर कह रही थी :

—लो वे आ गए! वे आ गए!......वे मुझे दिखलायी पड़ रहे हैं। वे मुझे दिखलाई पड़ रहे हैं!

और इसके बाद ही वह फिर घुटनों के बल गिर पड़ी। ऐसा लगा जैसे उसने किसी का आँचल पकड़ लिया हो और उसके मुँह से टूटे-फूटे यह शब्द निकल रहे थे :

—हे भगवान्! मैं तुम्हें अपना मुँह क्या दिखलाऊँ? मुझे क्षमा करो! मुझे क्षमा करो।......

इसके बाद वह रक्त से भीगे पत्थरों पर झुकती ही चली गयी और न जाने कब पत्थर वर्षा के बीच ही उसके प्राण पखेरू उड़ गए।

जब यह काण्ड समाप्त हो गया तो लोगों ने देखा उनके बीच एक व्यक्ति और मरा पड़ा है। यह भी देखा गया कि एक दूसरा आदमी दौड़ता हुआ अंगूर की बेलों के बाग में छिपने के लिए भाग गया है। इसके बाद उसे जंगल की ओर भागते हुए भी देखा गया। बहुत से

रक्षकों ने उसका पीछा किया लेकिन उनमें से कोई भी उस व्यक्ति का पता न लगा सका। ऐसा लगता था जैसे पृथ्वी ही उस व्यक्ति को निगल गयी हो।

जब अँधेरा हो गया तब उसके आवरण में बरबास पुनः उस स्थान से निकल आया जहाँ वह छिपा हुआ था। वह सीधा पत्थर के गड्ढे के निकट पहुँचा और उसमें नीचे उतर गया। उसे कुछ भी दिखलायी नहीं पड़ रहा था। रास्ता टटोल-टटोल कर वह आगे बढ़ रहा था। गड्ढे में सबसे नीचे उस युवती का क्षत-विक्षत शव बरबास को पत्थरों के ढेर में छिपा मिला। इनमें से बहुत से पत्थर तो बेकार ही उस पर फेंके गये थे क्योंकि उनके फेंके जाने के पूर्व ही उस युवती के प्राण निकल चुके थे। वह अब इतनी छोटी और हल्की लग रही थी कि बरबास जब उसे अपनी बाँहों में रक्खे ऊपर चढ़ रहा था तब वह उसके शव का जरा-सा भी बोझ अनुभव नहीं कर रहा था। वह पहले गड्ढे के ऊपर आया और इसके बाद अँधेरे-अँधेरे ही बहुत दूर चला गया।

चलने का यह क्रम घण्टों चलता रहा। वह बीच-बीच रुक जाता और थोड़ा सा विश्राम करने के बाद पुनः चलने लगता। वह जब कभी रुकता उस युवती के शव को अपने सामने रख लेता। बादल उड़ चुके थे। आसमान में तारे चमक उठे थे। थोड़ी देर में ही चन्द्रोदय होने वाला था और इसके बाद ही सब कुछ दिखलायी पड़ने लगेगा। वह उसके मुँह की ओर देखने लगा। उसे कुछ विचित्र सा लगा—जब उसने यह देखा कि अन्य अंगों की तुलना में उसके मुँह पर बहुत कम चोटें आई थीं। न वह अधिक पीला ही पड़ा था। उसके मुँह पर आये सारे भाव साफ-साफ दिखलायी पड़ रहे थे। ऊपर के ओठ में घाव का

जो निशान था—यह इतना छोटा लग रहा था—जैसे वह वहाँ पहले कभी रहा ही न हो। पहले भी उसका कोई महत्व न था और अब भी न था।

उसके दिमाग में वे सारी घटनाएँ चित्र की भाँति घूम गयीं जब उसके मन में यह विचार आया कि वह अपने प्रेम की बात कहे। जब उसने उसे अपने साथ लिया था—नहीं, वह ऐसी बात भी न सोचेगा... छि:...लेकिन जब उसने उस युवती से प्रेम करने की बात सोची थी और कहा—वह उससे प्रेम करता है तब उसने यह कहा था कि वह अपने आपको उसे दे नहीं डालेगा वरन् वह जैसा और जो कुछ करना चाहेगा करेगा। उस समय उसका मुँह कैसा चमक उठा था। उसे ऐसी बातें सुनने का अभ्यास न था। लेकिन वह बरबास की यह बात सुनकर प्रसन्न हुई थी—यह बात छिपी न रह सकी थी—यद्यपि वह यह तो अवश्य ही अनुभव कर रही थी कि शायद वह झूठ बोल रहा है। या क्या शायद वह यह नहीं जानती थी? जो कुछ वह जैसा चाहता था—वैसा हो गया था। वह उसे सदैव वह वस्तु लाकर दिया करती थी जिसके बिना वह जिन्दा न रह सकता था। और उसने उससे आवश्यकता से अधिक पाया था—इसमें कोई सन्देह नहीं। बरबास ने उससे अपना संबंध इसलिये स्थापित किया था कि वह किसी अन्य स्त्री के निकट नहीं पहुँच सकता था। यद्यपि उसका पतला नशीला स्वर उसकी नसों तक को हिला देता था और उसने युवती से कह रखा था कि वह आवश्यकता से अधिक न बोला करे फिर भी वह थोड़ा बहुत तो बोलती ही थी। इसके बाद धीरे-धीरे उसका पैर ठीक हो गया और वह फिर चलने-फिरने लगा। तब वह और कर भी क्या सकता था?

उसके सामने विस्तृत रेगिस्तान का आँचल खुला पड़ा था—निर्जीव और मूक। उस पर मृत चन्द्रकिरणें पर उसे रजत वर्ण प्रदान कर रही थीं। वह जानता था कि यह रेगिस्तान चारों ओर इसी भाँति फैला

हुआ था। वह रेगिस्तान की यात्रा पर पहले कभी नहीं गया था लेकिन उसे रेगिस्तान का संपूर्ण प्रदेश अपना बड़ा परिचित सा मालूम देता था।

एक दूसरे से प्रेम करो.........

उसने एक बार पुनः उसके मुख पर दृष्टि डाली। इसके बाद उसका शव उठाकर उसने फिर अपने कदम पहाड़ों की ओर बढ़ाये।

वह इस समय ऊँटों पर खच्चरों वाली कारवाँ-सड़क पर सरपट चाल से आगे बढ़ रहा था। यह सड़क—रेगिस्तानी दगड़ा—जेरुसलम से जड्डा के रेगिस्तान के मोबलियों के देश को जाता था। रेगिस्तानी मार्ग वह कहने को ही था—उसमें मार्ग जैसे कोई चिन्ह नहीं दिखलायी पड़ते थे। केवल बीच में जानवरों की लीद तथा किसी मृत जानवर का गिद्धों और बाजों से नुचा ढाँचा ही रास्ते की पहचान बतलाता था और कोई यह कल्पना कर सकता था कि इधर से काफिले आते-जाते हैं। जब चलते-चलते आधी रात से भी अधिक समय बीत गया तब रास्ता ढालू हो गया और बरब्बास ने समझ लिया अब और बहुत आगे उसे नहीं जाता है। उसने रेगिस्तान छोड़ दिया था और ऊसर तथा ऊबड़-खाबड़ जमीन पर आ गया था। यह स्थान और अधिक एकान्त था। रास्ता अभी और आगे जाता था। उसे इसी पर बढ़ना था—लेकिन वह थक गया था—इसलिए उसने अपना बोझा उतार दिया और थोड़ी देर विश्राम करने के लिये बैठ गया। जो कुछ हो अब वह अपने स्थान के निकट आ गया था।

वह सोच रहा था कि शव को दफनाने के उचित स्थान के लिये उसे बुड्ढे के पास जाना होगा या वह स्वयं यह कार्य कर लेगा? वह इस समय किसी के पास जाना न चाहता था और उसकी इच्छा थी वह सारा कार्य स्वयं करे। बुड्ढा शायद न समझ सके कि वह लाश यहाँ क्यों लाया है। लेकिन क्या वही इस मामले में सब कुछ समझता है?

क्या उसमें समझने की भी कोई बात है ? हाँ, वह शायद यहीं की रहने वाली थी। लेकिन क्या वह कहीं की रहने वाली भी थी ? क्या कोई स्थान उसका अपना भी था ? गिलगाल में उसके दफनाने की इजाजत न मिलेगी और जेरूसलम में तो उसे कुत्तों के सामने नोचने के लिये फेंक दिया जायगा। लेकिन उसकी समझ से ऐसा न होना चाहिए। हालाँकि अगर ऐसा हो भी तो उसमें फर्क क्या पड़ता है ? उसे यहाँ लाने से लाभ ही क्या था—जहाँ वह बहिष्कृतों की भाँति अपना जीवन व्यतीत किया करती थी ? अब वह केवल इतना ही विश्राम पा सकेगी जितना कोई बच्चा अपनी कब्र में पा सकता है। मृतक को सन्तुष्ट करना कोई आसान बात नहीं है।

वह इस प्रकार जेरूसलम ही क्यों चली गयी थी ? रेगिस्तान के उन कट्टर ईसाइयों के दल में मिल जाने से लाभ ही क्या था जो मसीहा के आगमन के लिये बावले थे ? और यह कहते-फिरते थे कि सबको प्रभु के तीर्थ नगर में पहुँचना चाहिए। यदि उसने उस वृद्ध की बात मानी होती तो आज यह नौबत कभी न आती। लेकिन उसने वृद्ध की बातों के बजाय पागलों की बातों पर अधिक ध्यान दिया।

अब वह यहाँ पड़ी थी—उसके लिये, क्षत-विक्षत और मृत। उसके लिये जो ठीक था ?

क्या वह ठीक था ? क्या वह विश्व का मुक्तिदाता था ? क्या वह अखिल मानवता का रक्षक था ? यदि हाँ तो उसने फिर इसे क्यों नहीं बचाया ? तो उसे पत्थर खाने के लिये उस मौत के गड्ढे में क्यों छोड़ दिया ? यदि वह रक्षक था तो इसे बचाया क्यों नहीं ? यदि वह चाहता तो सब ठीक हो जाता लेकिन वह तो मुसीबत-पसन्द आदमी था। खुद भी मुसीबतें झेलता था और दूसरों को भी यही उपदेश देता था।

नहीं वह सूली पर चढ़ कर मरने वाले उस व्यक्ति को कभी पसन्द

नहीं कर सकता। वही इस युवती की हत्या का जिम्मेवार है। उसी ने इस युवती की बलि ली है और इस बेचारी को ऐसा फँसाया कि वह किसी भी प्रकार बच ही नहीं सकी। वह दोनों हाथों को ऊपर उठा-उठाकर सहायता माँगती रही लेकिन उसने सहायता की एक उँगली नहीं उठाया और बनता है रक्षा करने वाला! सारी दुनिया की रक्षा करने वाला।

जहाँ तक उसका संबंध है उसने उस आदमी को मौत के घाट उतार दिया जिसने सबसे पहला पत्थर मारा था। कम से कम उसने इतना तो किया। सच है कि उतने से कुछ नहीं हुआ। पत्थर चल चुका था और उसे लग भी चुका था। उस आदमी की हत्या करने का कोई अर्थ न था—फिर भी उसने इतना तो किया। कुछ तो किया।

उसने अपने हाथ से माथे पर आये स्वेद-बिन्दुओं को पोंछा और थोड़ा सा हँस दिया। इस हँसी में भी एक अवज्ञा का भाव छिपा था। इसके बाद उसने कंधे उचकाये और उठ कर खड़ा हो गया। उसने शव को उठाकर पुनः कंधे पर रखा और कब्रगाह की ओर चल दिया।

वह रास्ते में बूढ़े की, फकीर की गुफा को छोड़ता हुआ आगे बढ़ आया और उस स्थान की ओर बढ़ा जहाँ बच्चे दफनाये जाते थे। इसके बाद वह सोचता रहा कि कब्र कहाँ होगी। उधर कोढ़ियों को दफनाया जाता था और दाहिनी ओर ईसाइयों की कब्रें थीं। तब उसे ख्याल आया, बच्चों की कब्रें किस स्थान पर हैं। वह एक बार पहले भी आ चुका था और एक-एक करके उस समय की सारी बातें उसके मस्तिष्क में आकर चक्कर काट रही थीं। उसे बात करता 'वह कब्र वाला बुड्ढा भी याद आ गया......

हाँ, यही स्थान है। यह पत्थर भी रखा है—यहाँ। यहीं तो उसका पहला बच्चा दफनाया गया था। बरबास ने चौरस पत्थर का वह बड़ा-सा टुकड़ा उठाकर ओंठ कटी युवती के शव को भी उसके बच्चे के शव के

पास ही लेटा दिया। उसने युवती के सभी कटे-फटे अंगों को बड़ी साज-सँभाल के साथ करीने से रखा जिससे वह अधिक से अधिक आराम पा सके। अन्त में उसने एक उड़ती सी नजर फिर उसके मुँह पर डाली। कटे ओठ का घाव अपने निशान सहित अब भी मौजूद था लेकिन उसका होना न होना अब कोई महत्व नहीं रखता था। उसके बाद उसने वह चौरस पत्थर गड्ढे के मुँह पर फिर रख दिया और वहीं पर बैठ कर रेगिस्तान की ओर देखने लगा। वह सोचने लगा मृतकों का संसार भी ऐसा ही होगा क्या ? जो भी हो, बरब्बास ने अपनी प्रेमिका को, उस ओठ कटी युवती को मृतकों के संसार तक पहुँचा दिया था। एक बार उस संसार में प्रवेश करने के बाद इसका कोई फर्क नहीं रहता कि कौन कहाँ विश्राम करता है ? लेकिन वह अब अपने नन्हें-मुन्ने बच्चे के पास ही लेटी थी। वह जो कुछ कर सकता था उसके लिये उसने वह सब कुछ किया। यह सोचते हुए वह अपनी लाल-दाढ़ी पर हाथ फेरता रहा और थोड़ा-थोड़ा मुसकराता रहा—वह मुसकराहट भी अजीब थी—उसमें दुनिया के प्रति उसकी मान्यताओं के प्रति अवज्ञा का भाव छिपा था।

वह सोच रहा था—प्रेम करो ! एक दूसरे से प्रेम करो !......

९

जब बरब्बास स्वजनों के बीच वापस लौटा तो वे बड़ी कठिनाई से उसे पहचान सके। वह बिलकुल बदल गया था। जेरूसलम में बरब्बास के जितने साथी थे उन्होंने घर वालों से यह तो उससे मिलने के बाद लौट कर आकर कह दिया था कि बरब्बास कुछ अजीब सा हो गया है। लेकिन सब ने इसे स्वाभाविक सा समझा क्योंकि वह इतने दिनों काल-कोठरी में बंद रहा था और लगभग सूली पर चढ़ा दिया गया था। ऐसी अवस्था तक पहुँच जाने के बाद सामान्य से उसका कुछ परिवर्तित हो जाना कोई आश्चर्य की बात न थी। लेकिन आश्चर्य की तो यह बात थी कि उसमें

इतने दिन बाद भी कोई सुधार नहीं हुआ था। विशेषकर उस समय जब इतने दिन उसे छूटे हुए हो गये थे।

वैसे तो वह सदैव ही अजीब सा रहा था। वे कभी भी उसे पूरी तरह या अच्छी तरह नहीं समझ पाये थे। लेकिन उसमें यह परिवर्तन सबको बड़ा अजीब सा लग रहा था। वह सबके साथ अजनबियों सा व्यवहार करता था। जब वे लोग अपनी योजनाएँ बतलाते तो वह शायद ही उनकी तरफ कोई ध्यान देता हो। वह स्वयं कभी कोई अपना मत किसी योजना के संबंध में प्रकट न किया करता था। ऐसा प्रतीत होता था जैसे सब वस्तुओं के प्रति उदासीन हो गया हो। इसमें संदेह नहीं कि वह अब भी उन लोगों की गश्तों तथा काफिलों पर किये जाने वाले लूट-पाट के हमलों में भाग लिया करता था लेकिन उसके यह सभी काम मुर्दादिल से हुआ करते थे। यही कारण था कि उसका साथ रहना लाभ-दायक सिद्ध नहीं होता था। यदि कहीं खतरा होता था तो वह उससे बच कर निकल जाने की कोशिश नहीं करता था और शायद इसका भी कारण यह था कि उसमें सुरक्षा या अरक्षा जैसे किसी भाव के प्रति कोई सतर्कता या शिथिलता रही ही नहीं थी। वह किसी भी काम को करने की मुद्रा में नहीं रहा करता था। केवल एक ही बार वह अपने पूर्वस्वरूप में वापस लौटा था। वह मौका था जब जेरियो के एक बड़े धर्माधिकारी का खजाना लूटा जा रहा था। उस लूट में उसने पागलों की तरह भाग लेकर उन दोनों उपासनागृह के रक्षकों को काट डाला था जो खजाने के काफिले के साथ रक्षा के लिये थे। लेकिन उन रक्षकों को मारने की कोई आवश्यकता नहीं थी। वे बेचारे कोई विरोध भी नहीं कर रहे थे। उन्होंने जैसे ही यह देखा कि आक्रमणकारियों की संख्या अधिक हैं तत्काल आत्मसमर्पण कर दिया था। उसने न केवल उन्हें मार ही डाला वरन् उनका अंग-अंग काट डाला। उसके साथियों ने यह बहुत अधिक समझ कर उसे रोक दिया था। वे चाहे धर्माधिकारी तथा उनके साथियों से जितनी भी घृणा करते

हाँ लेकिन शाव तो ईश्वर के होते हैं । उनको काटना ईश्वर को रुष्ट करने के तुल्य था । इससे वे सब के सब डर गये थे । वे ईश्वर के प्रति की गयी इस अवज्ञा से बड़े भयभीत थे ।

लेकिन इसके अतिरिक्त उसने कभी कोई इच्छा उन लोगों के साथ जाने या कुछ काम करने में नहीं दिखलायी । वे क्या करते हैं या क्या नहीं करते—बरब्बास को इससे बहुत कम दिलचस्पी रह गयी थी । जब उन लोगों ने एक स्थान पर जारडन के एक रोमन सैनिक दस्ते पर हमला किया था तब भी उसने कोई अधिक उत्सुकता नहीं प्रकट की थी । हालाँकि यही रोमन सैनिक ही उसे सूली पर चढ़ाना चाहते थे । अन्य सब ने कोई सैनिक नहीं छोड़ा और सब को काट-काट कर नदी में फेंक दिया था । यदि उस दिन सबने बरब्बास जैसी ही उदासीनता और शिथिलता दिखलायी होती तो उन सब की स्थिति बहुत खराब हो जाती ।

यह परिवर्तन सभी के लिए बड़ा चिन्ताजनक था क्योंकि सब में यदि कोई सब से अधिक साहसी था तो बरब्बास ही था । वही ऐसा व्यक्ति था जो उन लोगों के हमलों की योजना तैयार करता था और उन योजनाओं को सबसे पहले कार्यान्वित किया करता था । उसे कुछ भी असम्भव नहीं लगता था । यही कारण था कि बरब्बास की बहादुरी और चतुरता पर उसके कबीले के सारे जवान निर्भर करते थे और हर महत्वपूर्ण समस्या के हल के सम्बन्ध में उसकी राय ही सर्वश्रेष्ठ मानी जाती थी और वह सदैव ठीक भी निकलती थी । वह एक प्रकार से नेता बन गया था हालाँकि उनके कबीले में नेता या सरदार की परम्परा नहीं थी और कुछ लोग बरब्बास को इसलिए चाहते भी नहीं थे । वह मनमौजी था । दूसरों की कम चिन्ता करता था और उनके प्रति उदासीन भी रहता था । यही कारण था कि अपने कबीले के बीच भी अजनबी की भाँति वह रहता था लेकिन जिस कार्य में वह रुचि ग्रहण करने लगता था कोई भी उसे हरा नहीं सकता था । लोग उससे डरते थे लेकिन फिर भी उस

पर विश्वास करते थे और उसमें मुख्य बात यही थी कि उस जैसा साहस, उस जैसी चतुराई और उस जैसी सोची बात में सफलता प्राप्त करने की क्षमता बहुत कम लोगों में थी।

लेकिन वे अब ऐसे सरदार को लेकर क्या करते—जो कुछ भी नहीं करना चाहता था—अपना काम भी नहीं ? नेतृत्व करने की बात तो दूर रही। वह अपनी गुफा के मुँह पर बैठा-बैठा समुद्र की ओर देखा करता था। उस समुद्र को लोग मृतसागर कहा करते थे। वह उन लोगों की तरफ अत्यन्त उत्सुकतापूर्ण दृष्टि से देखा करता और बरबास को तो उन लोगों का और उन लोगों को बरबास का साथ पसन्द नहीं आता था। वह वस्तुत: उन लोगों से कभी बात ही नहीं करता था। और यदि वह कभी बोलता भी था तो सब लोगों को वह उसके स्वभाव विरुद्ध जान पड़ता था। यह स्थिति अप्रिय थी लेकिन सब यह जानते थे कि वह जेरूसलम में बहुत दिनों तक कालकोठरी में बन्द रहने का परिणाम थी।

वह जहाँ बैठता था चारों ओर बेचैनी सी बिखरा देता था। वे उसके वापस लौटने पर अधिक प्रसन्न नहीं थे। वह उनके साथ वाला आदमी नहीं रह गया था। उसका नेता माना जाना असम्भव हो गया था और वह शायद ही किसी काम के योग्य रह गया था। ऐसी अवस्था में वह कुछ रह ही नहीं गया था ?

अब लोग सोचने लगे पहले भी बरबास बहुत अधिक साहसी नहीं था। उसका साहस इलियाहू के हमले के बाद से बढ़ा था जिसका निशान अभी तक उसकी आँख के नीचे वाले हिस्से में था। इसके पहले वह बड़ा डरपोक था। इलियाहू से घायल होने के बाद वह अकस्मात् बड़ा बहादुर हो गया था और लोग उसके अतीत के बारे में भूल गये थे। इलियाहू ने द्वन्द में बरबास को मार डालने की चेष्टा की लेकिन बरबास का हाथ मौके से लगा और उसने इलियाहू को ही मार डाला। इलियाहू

बरबास से इतनी घृणा क्यों करता था ? यह बात कोई नहीं जानता। लेकिन इलियाहू बरबास से घृणा करता था—यह बात सब जानते थे।

इसके बाद से बरबास उनका नेता बन गया। उसकी बहादुरी चाकू का घाव खा लेने के बाद ही प्रकाश में आयी थी।

इस प्रकार वे परस्पर बातचीत करते और कानाफूसी करते रहते।

लेकिन यह बात वे नहीं जानते थे और शायद कोई नहीं जानता था कि यह इलियाहू ही—जिसकी वे लोग इतनी याद करते हैं—बरबास का पिता था। कबीले वालों ने एक लूट में एक मोबती स्त्री का अपहरण किया था। वही स्त्री बरबास की माँ थी। इसके बाद उसे बेंच दिया गया था। लेकिन जब उसके गर्भवती होने के समाचार मालूम हुआ तब लोग ने उसे निकाल दिया और उसने सड़क पर बच्चे को जन्म दिया। लेकिन वह प्रसव के बाद ही सड़क पर मर गयी। यह कोई न जानता था कि वह किसका बच्चा है। वह स्वयं कुछ नहीं कह सकती थी, केवल अपने आपको तथा ईश्वर को गर्भ के लिए कोसा करती थी। इस बात का रहस्य कोई भी नहीं जानता था। न गुफा के दाहिनी ओर बैठे कानाफूसी करने वाले लोग इस बात को जानते थे और मृतसागर की तरंगों पर अचल दृष्टि रखने वाला पर्वत जिस पर बैठ कर समुद्री दृश्य देखने वाला बरबास ही इस रहस्य को जानता था।

उस समय बरबास इलियाहू की बात नहीं सोच रहा था। वह सोच रहा था उस माँ की बात को जो अपने कीलों से सूली पर जड़े आहत पुत्र को करुणार्द्र नेत्रों से देख रही थी। उसे यह भी याद है कि उसकी माँ ने कैसी कठोर दृष्टि से उसकी तरफ देखा था। वही क्यों ? उस जैसी निगाहों से उसे बहुतों ने देखा था। वह अक्सर गोलगोथा की बात सोचा करता और उस आदमी की माँ की भी......

उसने एक बार फिर मृतसागर और उसके पार मोबतियों के देश को देखा जहाँ अँधेरा धीरे-धीरे अपने पंख फैला कर नीचे उतर रहा था।

१०

वे यह सोच-सोच कर परेशान हुए जा रहे थे कि बरब्बास से उनका पिण्ड किस प्रकार छूटे। वे उदासी की इस प्रतिमूर्ति और अपने कार्यों की इस सीमा से ऊबे हुए थे—उसका मुँह देखना भी वे हराम समझने लगे थे क्योंकि उनका मत था कि बरब्बास की छाया पड़ते ही हर चीज का मजा फीका पड़ जाता था। लेकिन उनकी समझ में यह नहीं आ रहा था कि वे अपने उद्देश्य की सिद्ध किस प्रकार करेंगे। वे यह कैसे कहें कि अब उनके समाज में उसकी कोई उपयोगिता नहीं रह गयी है। यदि वह कहीं और चला जाय तो वे बहुत प्रसन्न होंगे। उससे यह बात कौन कह सकता था? उनमें से कोई भी यह बात कहने की उत्सुकता नहीं दिखलाता था और सच बात तो यह थी कि उनमें से कोई इतना साहसी ही न था कि बरब्बास से यह बात कह सके। अकारण ही वे बरब्बास से इतना अधिक डरते थे।

इस प्रकार उन लोगों के बीच बरब्बास के खिलाफ कानाफूसी जारी रही। वे आपस में यही कहते थे कि बरब्बास से अब कितना अधिक ऊब गये हैं। वह उनके दुर्भाग्य का चिह्न बन गया है। इसी बीच उनके कबीले के दो आदमी भी मारे गये। इससे उनका यह विश्वास और बढ़ गया कि बरब्बास जैसे मनहूस के उनके साथ रहने के कारण ही यह हुआ है। जब बरब्बास गुफा के मुँह पर बैठा-बैठा कुछ सोचा करता था तब गुफा के अँधेरे में उन लोगों की लाल-लाल चमकीली आँखें बरब्बास के विरुद्ध षड़यंत्र रचने में लगी रहती थीं।

और एक दिन ऐसा हुआ कि बरब्बास यकायक लापता हो गया। वह अपने स्थान पर नहीं था। पहले तो उन लोगों ने सोचा कि वह पागल हो गया तथा उसने पहाड़ पर से गिर कर आत्महत्या कर ली। या कोई भूत आदि उस पर चढ़ गया हो जिसके प्रभाव में उसने अपनी मौत

अपने आप बुला ली होगी। संभवतः इलियाहू की आत्मा ने ही बदला लिया हो। लेकिन जब उन्होंने वह स्थान खोजा जहाँ एक बार इलियाहू का क्षत-विक्षत शव मिला था तो वहाँ बरबास का नाम-निशान नहीं मिला। वह सर्वथा अदृश्य हो गया था।

इस प्रकार अपने आपको मुक्त अनुभव कर के वे अपने पहाड़ी ढालों पर बसे गुफाओं के मकानों में वापस लौट आये। उस समय सूरज तेजी से चमक रहा था और पहाड़ी ढाल के पत्थर जल रहे थे।

११

बरबास के अदृश्य हो जाने के बाद उसने अपना शेष जीवन कहाँ और कैसे बिताया—उसका भाग्य उसे कहाँ-कहाँ ले गया—इस बारे में कोई कुछ नहीं जानता। कुछ लोग तो यह कहते थे कि लापता होने के बाद वह रेगिस्तान के किसी एकान्त भाग में चला गया और वहाँ रह कर ईश्वर चिन्तन में अपना समय बिताने लगा। इसके विपरीत कुछ लोगों का अनुमान यह था कि वह सेमेरिटनों के साथ चला गया जो यहूदियों तथा ईसाइयों दोनों से ही घृणा करते हैं और उसे कुछ लोगों ने एक दर्रे के पास भी देखा था जब वह झुका हुआ बकरे की कुरबानी के लिए सूर्योदय की प्रतीक्षा कर रहा था। लेकिन अधिकांश व्यक्तियों का यह अनुमान था कि सीरिया की तरफ जाने वाले रास्ते में लेबनान के पहाड़ों में वह एक डकैतों के दल का सरदार हो गया था और सरदार के रूप में वह यहूदियों तथा ईसाइयों दोनों का कट्टर विरोधी हो गया था और उन सब की जो भी उसके मार्ग में पड़ जाते थे—वह अत्यन्त निर्दयतापूर्वक हत्या कर देता था।

जैसा कि हम ऊपर कह चुके हैं यह तो कोई भी न जानता था कि इन सब बातों में से कौन-सी बात तथ्य है कौन-सी नहीं। लेकिन यह सत्य है कि लगभग पचास-पचपन वर्ष की अवस्था में वह रोमन गवर्नर

के पाफोस स्थित राजमहल में एक दास के रूप लाया गया। इसके पूर्व उसने कई वर्ष ताँबे की एक खान में बन्दी की हैसियत से काम किया था। उस खान में काम करने की भयंकर सजा क्यों दी गयी—यह कोई नहीं जानता। लेकिन उसका खान के काम से बच आना ही कुछ कम महत्व नहीं रखता।

अब उसके बाल सफेद हो गये थे। चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ गयी थीं। लेकिन कुल मिला कर उसका शरीर—जैसी मुसीबतें उसने झेली थीं—उन्हें देखते हुए अच्छा था। उसने बड़ी जल्दी बल प्राप्त कर लिया था। जब उसने खान छोड़ी थी उस समय वह चलती-फिरती लाश जैसा हो गया था—उसके शरीर में कुछ रह नहीं गया था। आँखें गड्ढों में धुस गयी थीं। उनमें कोई भाव प्रकट करने की शक्ति शेष नहीं रह गयी थी। ऐसा लगता था आँखों के कुओं का पानी सूख गया हो। लेकिन वह कभी-कभी इतना बेचैन, इतना परेशान हो जाता था कि उसे कुछ भी अच्छा न लगता था। हर चीज से उसे बेहद घृणा हो जाती थी, वैसी ही घृणा जैसी शायद उसकी माँ ने संसार की हर वस्तु के प्रति बरबास के पैदा होते समय प्रकट की थी। वह घाव का निशान जो उसकी आँख के नीचे था और बीच में एक बार लुप्त हो गया था—अब फिर उभर आया था लेकिन सफेद दाढ़ी के नीचे छिप गया था।

यदि उसका शरीर इतना सुदृढ़ न होता तो वह शायद कभी भी बच न पाता और इसके लिए उसे इलियाहू तथा उस मोबती स्त्री का कृतज्ञ होना चाहिए था क्योंकि उन्हीं ने उसे सबसे पहला जीवन दिया था। इतना होते हुए भी दोनों में से एक ने भी उससे प्रेम नहीं किया। वह दोनों की घृणा का पात्र ही रहा। लेकिन वह स्वयं नहीं जानता था कि वह अपने जीवन के लिए किसके प्रति कृतज्ञ हो और न उसे अपने माँ-बाप के अपवित्र आलिंगन का ही कोई ज्ञान था।

जिस घर में वह अब आया था वह काफी बड़ा था और उसमें

बहुत से गुलाम थे। उन गुलामों में एक लम्बा, दुबला-पतला आर्मेनियन गुलाम भी था जिसका नाम सहाक था। उसकी आँखें चमकदार थीं और उनमें एक प्रकार की मोती जैसी आभा थी। उसके छोटे-छोटे लेकिन सफेद बाल तथा पिचके गालों को देख कर ऐसा लगता था जैसे वह बुड्ढा हो गया हो लेकिन वह वस्तुतः बुड्ढा नहीं था। उसकी आयु चालीस से कुछ ही ऊपर रही होगी। वह भी खान में था! बरबास और सहाक दोनों कई वर्ष साथ-साथ रहे थे और दोनों ही वहाँ से भाग आने में सफल हो गए थे। लेकिन सहाक बरबास की भाँति शीघ्र ही स्वस्थ नहीं हो सका। वह अब भी रक्त के अभाव से पीड़ित था। उसकी धवल केशराशि, अंगारे से नेत्र तथा झुर्रीदार चेहरा उसे बिलकुल भिन्न व्यक्ति बनाए था। ऐसा लगा था कि उसे कुछ ऐसा काम करना पड़ा था जिससे सारी तकलीफों के होते हुए भी बरबास बच गया था।

अन्य सभी गुलाम इन दोनों गुलामों की बातों में बड़ी दिलचस्पी दिखलाते थे क्योंकि वे ऐसे अनुभव कर आए थे जिन अनुभवों के बाद कोई साधारणतः जीवित नहीं बच पाता था। लेकिन कोई भी उन दोनों के बीते जीवन की कहानी के बारे में अधिक नहीं जान पाता था। वे दोनों अधिकतर एक साथ ही रहते थे लेकिन वे दोनों ही आपस में भी कम बोला करते थे। इतने पर भी दोनों का सम्बन्ध अविच्छिन्न प्रतीत होता था। यह अजीब-सा था। लेकिन यदि वे दोनों एक साथ खाना खाने बैठते और आराम का समय एक साथ बिताते और एक साथ ही सोते तो इसका कारण यही था कि खान में दोनों को एक साथ ही बाँधा गया था।

खानों में सभी गुलामों को दो-दो के जोड़ों में रखा गया था। इन जोड़ों में बहुधा लड़ाई भी हो जाती थी—लेकिन बरबास और सहाक में ऐसा कभी नहीं हुआ। उन लोगों का भाव एक दूसरे के प्रति सहायता का ही रहा। बरबास अपने आप बोला नहीं करता था—दूसरा अधिक

बोलने वाला था। बरबास का अधिक समय उसकी बातें सुनने में ही व्यतीत होता था। बरबास अपने जीवन की बहुत-सी गोपनीय बातें भी किसी को नहीं बतलायी थीं। लेकिन उसने एक दिन सहाक को यह बतला दिया कि वह जेरूसलम में रह चुका है। इस पर वह आर्मेनियन बड़ा उत्सुक हो उठा और उसने कई प्रश्न पूछे। वे प्रश्न अधिकांशतः उस धर्मदूत के बारे में था जो सूली पर लटका दिया गया था। सहाक ने उससे यह भी पूछा कि क्या उसने उस आदमी को देखा था। बरबास ने स्वीकारात्मक उत्तर दिया। लेकिन उसके सभी उत्तर अनमने भाव से दिए गए थे ठीक उसी तरह जैसे वह उनसे बचना चाहता हो।

इसका सहाक पर विचित्र प्रभाव पड़ा। वह एकदम ध्यान मग्न हो गया। वह सोच रहा था—एक ऐसे आदमी के साथ वह बँधा है जिसने ईश्वर को देखा है। उसके सामने से खान का और अपने काम का सारा दृश्य ही हट गया। लेकिन सहसा हवलदार के बेंत ने उसका ध्यान भंग कर दिया। सड़ाक्-सड़ाक्...। कई बेंत उस पर पड़ गये थे और उसने फिर काम शुरू कर दिया था। जब हवलदार चला गया तो सहाक की पूरी पीठ खून से तरबतर हो गयी थी। कुछ समय तक उसके मुँह से एक शब्द भी न निकला लेकिन बाद में उसने कई बातें पूँछी। वह उससे कहाँ मिला था? उत्तर मिला, गोलगोथा में।

—गोलगोथा? यह क्या है?

बरबास ने कहा यह वह स्थान है जहाँ वे लोग अपराधियों को प्राण-दण्ड देते हैं।

सहाक चुप हो गया। उसने अपनी आँखें नीचीं कर लीं। इसके बाद अकस्मात् धीरे से बोला, 'ओह, तब...'

पहली बार जब वे लोग ईसा के बारे में बात कर सके थे तब केवल इतनी ही बात हुई थी। सहाक और भी बात करना चाहता था।

दूसरी बार सहाक ने पहला प्रश्न यह किया कि क्या ईसा ने मृतकों को भी जीवित किया था ?

—हाँ...बरबास ने कहा।

—और क्या जब ईसा ने प्राण विसर्जित किये थे तब चारों ओर अँधेरा छा गया था ?

हाँ बरबास ने यह तो स्वयं देखा था। उसने अँधेरा देखा था।

सहाक जिस समय यह सब सुन रहा था। उस समय मन ही मन बड़ा प्रसन्न हो रहा था। लेकिन बरबास के सामने उस समय का पूरा दृश्य घूम रहा था।

—तो क्या तुमने उन्हें उस समय देखा था। तुम वहाँ क्यों गये थे ?

बरबास ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। सहाक के पूछने पर कि उसके पहले क्या बरबास ने ईसा को पहले कभी नहीं देखा था बरबास ने उस समय का सारा दृश्य बतला दिया जब उसकी ईसा से सबसे पहली भेंट गवर्नर के महल के सामने वाले मैदान में हुयी थी। उसने यह भी बतलाया कि ईसा के मुखमण्डल के चारों ओर उसने एक ज्योतिपुञ्ज भी देखा था जो उनके मुख को दीप्त करता था। बाद में वह आभा जाती रही तो उसने समझा था कि सूरज की रोशनी की चकाचौंध के कारण ही उसे ऐसा भ्रम हुआ था। लेकिन अन्तिम बात उसने सहाक से नहीं कही। सहाक यह सब सुनकर प्रसन्न था और वह उसकी प्रसन्नता भंग नहीं करना चाहता था।

कुछ दिन बाद उसने यह भी बतलाया कि उसने प्रभु को पुनः जीवित होते हुए भी देखा था। किस प्रकार उसने एक देवदूत को उतरते देखा जिसके हाथ में एक भाला था और वह लाल लबादा पहने था और उसने अपनी ज्योतित शक्ति द्वारा किस प्रकार प्रभु की कब्र का दरवाजा खोल दिया और वे बाहर निकल गये। यह सारी बातें सहाक को

बरबास ने बतलायीं और वह आश्चर्यमग्न दशा में यह सब सुनता रहा। उसने बतलाया किस प्रकार वह कब्र खाली रह गयी......।

सहाक सोचता रहा था क्या यह संभव है ? क्या इस गन्दे, दुखिया, सब के तरस पर जिन्दा रहने वाले गुलाम ने प्रभु ईसा का इतना सान्निध्य प्राप्त किया था ?

इसके बाद सहाक ने बरबास को अपना गुप्त रहस्य भी बतलाया। उसने वह सरकारी पीतल की पट्टी दिखलायी जिस पर एक ओर उसका नाम तथा नम्बर आदि पड़ा था और दूसरी ओर कुछ और लकीरें-सी खिंची थीं। सहाक ने बतलाया यह प्रभु का नाम खुदा हुआ है। बरबास ने भी उसे स्पर्श किया था और वे दोनों बड़ी देर तक उसे पकड़े बैठे रहे थे।

उसी समय उन्हें लगा कि पीछे से ओवरसियर आ रहा है। लेकिन ऐसा नहीं था—वह नहीं आया था। वह उसे देखने के लिए एक बार और झुक गये।

सहाक ने बतलाया कि यह बात उसे एक यूनानी गुलाम ने बतलायी थी। उसी ने उसे इस धर्म की शिक्षा दी थी। वह गुलाम खान की भट्टी वाले भाग में काम करता था जहाँ एक साल से अधिक कोई जिन्दा नहीं रह पाता। वह यूनानी गुलाम भी मर गया लेकिन उसने प्राण छोड़ते समय यह शब्द कहे थे ! ओ प्रभु, मैं बड़ा दीन हूँ। शरण आये को न ठुकराना ! इन लोगों ने उसके पैर काट दिये जिससे जंजीरें आसानी से निकाली जा सकें और उसे भट्टी में झोंक दिया जैसा कि वे सदैव वहाँ मरने वाले गुलामों के साथ करते आये थे। मैं भी वहीं था लेकिन बाद में मुझे तथा 'अन्य कई गुलामों को इधर बुला लिया गया क्योंकि यहाँ काम अधिक था।

अब बरबास समझ गया कि सहाक भी ईसाई है। सहाक ने बरबास की ओर देखते हुए अपनी बात समाप्त कर दी।

दूसरी बार अरबास ने कंपित स्वर में सहाक से अनुरोध किया कि क्या वह उसके नम्बर प्लेट के पीछे भी ईसा का नाम नहीं खोद सकता। सहाक ने उससे कहा उसे खेद है कि वह इस कला में दक्ष नहीं है लेकिन वह प्रयत्न करेगा। और उसने यथाशक्ति अपने प्लेट की नकल उस पर अच्छी से अच्छी उतार दी। उस समय वे दोनों कितने खुश हुए यह कहा—नहीं जा सकता। हालाँकि दूसरों के आने से उन्हें बीच में कई बार काम रोकना पड़ा था। अकस्मात् वे दोनों प्रार्थना करने अपने घुटनों पर झुक गये।

उसी समय ओवरसियर ने उन्हें ऐसा करते कुछ दूरी से देख लिया किन्तु वे अपनी आराधना में इतने व्यस्त थे कि उन्होंने ओवरसियर के आने पर कोई ध्यान ही नहीं दिया। उसने दोनों को मारते-मारते अधमरा कर दिया और सहाक जब गिर पड़ा तो उसे उन्होंने पकड़ कर फिर उठाया और फिर बेंत मारे। दोनों उसी अवस्था में लड़खड़ाते हुए अपने काम पर पहुँचे और उसे करने लगे। यह पहली बार था जब सूली पर चढ़े आदमी के लिए बरबास इतना पिटा था।

इसी प्रकार कई वर्ष बीत गये। दिन, हफ्ते और महीने निकलते चले गये। उन्हें रात और दिन का ज्ञान भी न हो पाता यदि उन्हें प्रति-दिन संध्या को विश्राम करने के लिए न ले जाया जाता। उन्हें खान छोड़ने की कभी भी इजाजत नहीं दी जाती थी। वे एक दूसरे की छाया की भाँति एक दूसरे के साथ रहते थे। उनका जीवन अर्ध-अंधकारमय खान में मृतकों के संसार की भाँति व्यतीत हो रहा था। अंधकार को दूर करने का प्रयत्न करते हुए जहाँ-तहाँ हल्के प्रकाशमान दिये या आग अवश्य जली रहती थी। खान के मुहाने से दिन का प्रकाश खान में घुसने की असफल चेष्टा करता था। वे उसी छेद से ऊपर देखने की कोशिश करते थे। शायद उन्हें नीला आसमान दिखलायी पड़ जाय। कभी-कभी उसकी झलक तो उन्हें मिल भी जाती थी लेकिन पृथ्वी की

हरीतिमा फिर भी न देख पाते थे। उनका भोजन भी खान में ही नीचे आ जाता था। भोजन तो जैसा होता था—वैसा होता ही था लेकिन जिन पात्रों में वह आता था—वह भी कम अशुद्ध न होते थे।

सहाक को बहुत दुख हुआ। अपनी प्लेट पर ईसा का नाम खुदवा लेने के बाद दो-एक बार तो बरबास ने प्रार्थना की लेकिन इसके बाद उसने प्रार्थना करना बन्द कर दिया। सहाक प्रयत्न करके भी इसका कारण न समझ सका। वह अधिकाधिक तटस्थ और उदासीन होता जाता था और उसकी मुखमुद्रा इतनी भावहीन होती जाती थी कि कुछ भी समझना असंभव था। जब सहाक प्रार्थना करता तो बरबास इस प्रकार बैठ कर काम करने लगता जिससे उसके पीछे सहाक छिप जाय। वह उसे प्रार्थना में मदद करना चाहता था।

क्यों? क्या कारण था? सहाक की कल्पना जवाब दे जाती थी। वह सब कुछ उसके लिए पहेली हो गया था। स्वयं बरबास पहेली बन गया था। पहले उसने सोचा था कि वह बरबास को समझ गया है। लेकिन कभी उसे ऐसा लगता कि उसका पार्श्ववर्ती साथी बिलकुल विदेशी है। उसे वह समझ ही नही सकता।

तो वह कौन है?

वह आपस में बातें करते रहते। लेकिन वह घनिष्ठता—वह पहले जैसी निकटता उनमें कभी न हो पायी। जब भी वे बातें करते बरबास इस प्रकार बैठता कि उसकी दृष्टि सहाक की दृष्टि से कभी भी न मिल पाती। लेकिन क्या वह उसे कभी भी देख पाया था? कभी भी समझ पाया था? उसको जिसके साथ वह बँधा था?

बरबास ने अपने स्वप्नों के संबंध में फिर कभी कोई बात नहीं की। सहाक को यह अभाव बहुत खला और इसका कारण समझना बिलकुल ही असंभव नहीं है।

वह बहुधा बरबास की आँखो में आयी उस चमक को याद करता था—जो उसे एक बार दिखलायी पड़ी थी।

वह अकसर ईस्टर की सुबह का बरबास का सपना याद करता—जब देवदूत ने आकर प्रभु को उनके समाधिस्थल से मुक्त किया था। उसके सामने सारा वर्णन एक ऐसा चित्र उपस्थित कर देता था कि वह समझने लगता था कि उससे प्रभु अवश्य ही मृतकावस्था से जीवित हो गये होंगे। वह अवश्य ही अब भी जीवित होंगे—यह उसका परम विश्वास था। वह भी अनुभव करता था कि उनका राज्य भी शीघ्र ही स्थापित होगा—इसमें कोई संदेह नहीं। प्रभु ने स्वयं आश्वस्त किया था। सहाक को इस संबंध में कभी एक क्षण के लिये भी संदेह नहीं हुआ था। वह यह भी समझता था कि उसके प्रभु आकर स्वयं सबको गुलामी से मुक्त करेंगे और उनके दुखदर्द भी मिटा देंगे।

सहाक को इस चमत्कार की बड़ी प्रतीक्षा थी। जितनी बार भोजन आता उतनी ही बार सहाक ऊपर उचक कर देखता—कहीं वह चमत्कार घटित तो नहीं हो गया। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ।

इसी बीच एक उल्लेख योग्य घटना अवश्य हुई। एक दिन जब वह प्रार्थना कर रहा था तो बरबास ने फुसफुसा कर सहाक से कहा, 'कोई आ रहा है! सावधान हो जाओ।' सहाक ने तत्काल अपना काम शुरू कर दिया। आने वाला व्यक्ति दूसरा ओवरसियर था जो अपने पूर्ववर्ती के स्थान पर आया था। वह इन दोनों के पीछे आकर रुक गया। सहाक को लगा कि उसके बेंत पड़ा लेकिन वह बेंत नहीं था। ओवरसियर ने सहानुभूतिपूर्ण स्वर से सहाक से पूछा वह झुका हुआ क्या कर रहा था तो सहाक ने उत्तर दिया, 'ईश्वर की प्रार्थना।'

—किस ईश्वर की? उसने पूछा।

इसके बाद वह बहुत देर तक बातें करता और अनेक प्रश्न पूछता रहा। सहाक ने जहाँ तक बन पड़ा यथाशक्ति स्पष्ट उत्तर दिये लेकिन

उनमें आवश्यक संगठन और प्रवाह का अभाव था। लेकिन ओवरसियर सुनता रहा और बीच-बीच में सिर भी हिलाता रहा। सहाक ने ओवर-सियर की एक बात का उत्तर देते हुए कहा कि उनका ईश्वर कोई बलि नहीं माँगता। वह केवल अपने भक्तों की ही बलि चाहता है। जो भक्त हो वह अपनी बलि दे।

—क्या, तुम क्या कहते हो? वह अपने भक्तों की बलि चाहता है? जो भक्त हो वह अपनी बलि दे? इसका क्या मतलब है?

—जी, इसका यह आशय यह है कि प्रभु के प्रेम की भट्टी में जल मरना चाहिए?

—उनके प्रेम की भट्टी में...?

ओवरसियर ने उक्त शब्द कहते हुए अपना सिर हिलाया।

एक क्षण बाद ओवरसियर ने कहा :

—गुलाम, तुम बड़े भोले। तुम जैसे सीधे हो वैसी ही सीधी बुद्धि की बातें भी कहते हो! कैसी विस्मयकारी कल्पना है तुम्हारी! तुमने यह सब कहाँ से सीखा?

—एक यूनानी गुलाम से, सहाक ने उत्तर दिया। वही यह कहा करता था। मैं इसका ठीक-ठीक अर्थ नहीं जानता।

—हाँ, मैं भी यही समझता हूँ—तुम इसका अर्थ नहीं समझते। तुम ही क्या कोई भी नहीं समझता। बलि दो, अपनी बलि दो प्रभु के प्रेम की भट्टी में...प्रभु के प्रेम की भट्टी...इसी प्रकार वह न जाने क्या कहता रहा। उसकी बात वह दोनों समझ न पाये। थोड़ी ही देर में दीपकों के मन्द प्रकाशों में से होता हुआ—वह चला गया और आगे के अँधेरे में जाकर खो गया।

सहाक और बरब्बास इस घटना के संबंध में बहुत देर तक सोचते रहे। उनके लिये इसका अत्यन्त महत्व था लेकिन वे इतने चकित थे कि कुछ भी सोच ही नहीं पा रहे थे। यह आदमी उन लोगों के पास

कैसे आ गया ? क्या वह सचमुच एक साधारण ओवरसियर है ? वह ऐसा व्यवहार क्यों कर गया ? वह ईसा के बारे में क्यों पूछता था ? उसकी सूली के बारे में क्यों पूछता था ? नहीं उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि सब किस प्रकार संभव था ?

इस घटना के बाद ओवरसियर अकसर सहाक के पास रुक जाया करता और उससे दो एक बातें कर लिया करता । बरब्बास से वह कभी नहीं बोला । बरब्बास ने ईसा के बारे में सहाक से और भी बातें कहलवायीं—उनके जीवन और चमत्कारों के संबंध में तथा उनके एक दूसरे से प्रेम करने के सिद्धान्त के संबंध में । और एक दिन ओवरसियर ने कहा :

—मैं भी इस ईश्वर में विश्वास करने की बात बहुत दिनों से सोच रहा हूँ । लेकिन मैं ऐसा कैसे कर सकता हूँ ? मैं ऐसी अजीब बातों में कैसे विश्वास कर सकूँगा ? और मैं गुलामों का ओवरसियर हूँ—कैसे सूली पर चढ़े व्यक्ति की उपासना कर सकता हूँ ?

सहाक ने कहा कि यद्यपि उसके प्रभु गुलामों की मौत मरे लेकिन वास्तविकता यह है कि वह स्वयं ईश्वर थे । हाँ, वे अकेले ईश्वर थे । यदि कोई उनमें विश्वास करता है तो उसे फिर अन्य किसी में विश्वास करने की आवश्यकता नहीं है ।

—केवल एक ईश्वर ! और गुलामों की भाँति ! क्या विचार है ! क्या तुम्हारा मतलब यह है कि ईश्वर एक ही है और उसे लोगों ने सूली पर चढ़ा दिया !

—हाँ । सहाक ने कहा, बात तो यही है ।

वह आदमी स्तब्ध हो गया । इसके बाद अपने स्वभाव के अनुसार सिर हिलाता हुआ खान के अंधकार में जाकर खो गया ।

वे दोनों उसके पीछे देखते ही रह गये । उस दीपक के प्रकाश में

उसकी पीठ का थोड़ा सा हिस्सा झलका था और थोड़ी ही देर में वह खो गया—अंधकार से अदृश्य हो गया।

लेकिन ओवरसियर बराबर उस अज्ञात ईश्वर के बारे में सोचता रहा। उसकी कल्पना काम नहीं कर रही थी। उस ईश्वर का कैसा स्वरूप रहा होगा और फिर उसका सिद्धान्त 'एक दूसरे से प्रेम करो'...'प्रेम करो?'... नहीं, उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। वह दो दीपकों के प्रकाश के अँधेरे में रुक गया। वह अकेले में विचार करना चाहता था। अकस्मात् उसे प्रेरणा हुई कि वह क्या करे। वह गुलाम को वहाँ से हटा देगा जिससे वह जिन्दा रह सके और उस ईश्वर का परिचय दे सके—उसकी शिक्षाएँ समझा सके—जिन्हें वह अभी तक बिल्कुल नहीं समझ सका है। बस, वह यही करेगा। यही ईश्वर की इच्छा है।

उसने ऊपर जाते ही उस ओवरसियर को खोजा जो खेतों में गुलामों से काम लेता था। उससे अपना प्रस्ताव खान के गुलामों के ओवरसियर ने कह सुनाया। पहले तो वह राजी नहीं हुआ लेकिन बाद में खान के ओवरसियर की बात समझाने-बुझाने से मान गया।

दूसरे दिन उसने सहाक से और देर तक बात की और कहा कि उसकी व्यवस्था हो गयी है। वह ऊपर खेतों में काम करेगा। उसकी बेड़ियाँ खोल दी जायँगी और कल उसे उस ओवरसियर के पास पहुँचा दिया जायगा जहाँ उसे काम करना है। सहाक के कानों को विश्वास नहीं हुआ। क्या यह सब कुछ सच है? ओवरसियर ने उत्तर दिया कि यह सच है। यह ईश्वर की इच्छा है और वह तदनुसार कार्य कर रहा है।

सहाक ने एक क्षण के लिये ओवरसियर का हाथ लेकर उसे अपनी छाती से चिपका लिया। लेकिन तब उसने कहा—वह अपने साथी बंदी को न छोड़ेगा क्योंकि दोनों का ईश्वर एक है।

ओवरसियर ने आश्चर्य से बरबास की ओर देखा।

—तुम दोनों का एक ही धर्म है ? लेकिन इसे तो मैंने कभी प्रार्थना करते नहीं देखा ?

—नहीं, सहाक ने उत्तर दिया, हालाँकि वह कुछ अनिश्चित सा था—हो सकता है, वह प्रार्थना नहीं करता हो लेकिन वह प्रभु के पास और ढङ्ग से रहा है। वह प्रभु के पास उस समय था—जब वे सूली पर चढ़ाये गये थे और मृत्यु के कष्टों से खेल रहे थे। और उसने प्रभु के दीप्तमान मुखमण्डल के दर्शन किये हैं। उसने प्रभु को पुर्नजीवित होते देखा है। यह वही व्यक्ति है जिसने मुझे प्रभु की महिमा के दर्शन कराये हैं।

यह सब समझना ओवरसियर की समझ के परे था। वह कनखियों से बरबास को देख रहा था। वह सोच रहा था—इस बन्दी की आँख के नीचे घाव है। इसकी शकल भयानक है। वह इससे मिलना या बात करना सदैव बचाता रहा है। क्या यह भी सहाक के ईश्वर में भक्तिभाव रखता है ? नहीं, उसे बिलकुल असंभव लगता है। वह उसे बिलकुल नहीं चाहता था।

न वह उसे खान के बाहर ही ले जाना चाहता था।

—लेकिन मैं इसका साथ नहीं छोड़ूँगा।

ओवरसियर कुछ बुदबुदाता हुआ सोचता रहा और कभी-कभी तिरछी नजर से बरबास को देखता भी जाता था। अन्त में ओवरसियर दोनों को खान से बाहर ले जाने के लिये राजी हो गया और उसने कुछ हिच-किचाते हुए कहा कि अच्छा, वैसा ही होगा जैसा सहाक चाहता है। इसके बाद वह ओवरसियर पुनः एकान्त में चला गया।

जब सहाक और बरबास दोनों निश्चित समय रक्षक के पास पहुँचे तो उसने उन दोनों की बेड़ियाँ काट दीं और स्वतंत्र कर दिया। इसके बाद दोनों को दिन के प्रकाश में बाहर लाया गया। और जब बरबास

को और सहाक को बाहर खुले में लाया गया तथा सहाक ने जब बसन्त के चमकते हुए सूरज को देखा, पहाड़ी ढालों की शस्य श्यामलता को देखा, हरीतिमा सम्पन्न मैदानों को और वहाँ के फूलों को हवा में नाचते देखा तथा उनकी सुगन्ध जब मन्द पवन के झकोरों द्वारा उसके नासिका रन्ध्रों में गई तो वह एकदम घुटनों के बल झुक गया और आनन्द विभोर हो चिल्ला उठा।

—लो वे आ गये! प्रभु आ गये! उनका राज्य यह रहा। उसे तो देखो।

गुलामों से काम लेने वाला जो हवलदार उनको लेने आया था—वह सहाक को इस घुटनों पर झुका देखकर अचरज में पड़ गया। इसके बाद उसने अपने पैर से ठोकर मारते हुए सहाक से उठने के लिये संकेत किया और कहा।

—अब चलो!

१२

वे दोनों खेतों के जोतने का काम बहुत अच्छा करने लगे। वास्तविकता यह थी कि उन दोनों का जोड़ा ऐसा बन गया था कि बैलों के जोड़े की भाँति ही काम करने लगे थे। वे अन्य गुलामों की अपेक्षा अधिक सशक्त और बदशकल थे—विशेषकर जब उनके सिर आधे-आधे मुड़ा दिये जाते थे—उस समय तो वे सब की हँसी के पात्र बन जाते थे। उनके काम से कालान्तर में ओवरसियर जितना प्रसन्न हो सकता था हो गया। वे उतने बुरे नहीं थे जितना उसने सोच रखा और फिर वे खान में भी तो काम कर चुके थे!

वे स्वयं खान के ओवरसियर के बड़े कृतज्ञ थे जिसने उन्हें भूगर्भ के अंधकार तथा वहाँ की बेड़ियों से मुक्ति दिलायी थी। वे सुबह से लेकर शाम तक काम करते थे फिर भी उनकी दशा पहले जैसी न थी—भिन्न

थी। खुली हवा में साँस लेने के मौके ने उन्हें कम दुखी तथा काम को अधिक सरल बना दिया था। उनके निर्बल शरीरों से अब भी बड़ा पसीना निकलता था और जानवरों का सा व्यवहार किया जाता था। हालत पहले से कुछ अधिक नहीं सुधरी थी। सड़क पर हवलदार का बेंत अब भी बज जाता था क्योंकि वह बरबास की तुलना में कम बलवान था। इतने पर भी उनमें जीवन वापस लौट आया था। वे भी अन्य मनुष्यों की भाँति पृथ्वी पर रहने लगे थे। कम से कम सदा अंधकार के वातावरण से मुक्ति पा गये थे। सुबहें और शामें आतीं—दिन और रात आते और वे उनको देखते और उसका पूरा आनन्द लेते थे। लेकिन वे समझ गये थे—या उन्हें यह समझा दिया गया था कि ईसा का राज्य नहीं है।

धीरे-धीरे अन्य गुलामों की उत्सुकता भी शान्त हो गई। वे उन्हें अपने से भिन्न प्रकार का जन्तु नहीं समझने लगे। उनके बाल फिर निकल आये और सब की भाँति ही लगने लगे। क्रमशः उनकी तरफ ध्यान भी कम दिया जाने लगा। उनके बारे में जो प्रसिद्ध थी वह यह नहीं कि वे खान में काम कर आये थे—वरन् यह थी कि वे उस नरक से जीवित बच आये थे जिसमें उनको भेज दिया गया था। वे लोग यह जानना चाहते थे कि यह अनहोनी बात कैसे हुई लेकिन वे उस रहस्य को किसी भी प्रकार जान न सके। नवागन्तुक बातूनी नहीं थे और इस चमत्कार के सम्बन्ध में तो वे अपनी जबान भी न खोलते थे। वे दोनों ही कुछ विचित्र से जीव प्रतीत होते थे और बहुधा अपने आप तक ही सीमित रहते थे।

उन लोगों को साथ रहने की अब आवश्यकता न थी। वे दोनों एक साथ बँधे न रहा करते थे। यदि वे चाहते तो अन्य गुलामों में से अपने दोस्त भी बना सकते थे और एक साथ सोने तथा एक साथ भोजन करने की भी उन्हें कोई आवश्यकता नहीं रह गई थी। लेकिन वे एक दूसरे की भावनाओं से अविच्छिन्नतः बँधे थे। एक अजीब बात यह भी हो गई थी कि वे दोनों एक दूसरे से कुछ झेंपते से भी थे और आपस

में भी बातचीत करना कठिन पाते थे। लगता ऐसा सा कि एक दूसरे से विश्रृंखलित नहीं हो सकते किन्तु मानसिक दृष्टि से वे एक दूसरे से दूर बहे जा रहे थे। वास्तविकता यह थी कि उन लोगों को एक साथ काम करते-करते इतने दिन हो गये थे कि वे अलग-अलग रहने की बात भी न सोच सकते थे। रात को कभी-कभी सोते-सोते जब उनकी आँख खुल जाती थी और वे एक दूसरे से बँधा न पाते तो भयभीत हो जाते और टटोलकर यह पता लगाते कि दूसरा भी वहाँ है या नहीं। यह ज्ञान कि दोनों एक दूसरे के पास हैं उन्हें बड़ा विश्रामदायी होता था।

यह सोचना भी कठिन था कि बरबास कभी भी ऐसी स्थिति बरदाश्त कर सकेगा। वह लोहे की साँकल से मुक्त हो गया था और भावना की साँकल से भी मुक्त होना चाहता था लेकिन सहाक इसके लिये तैयार न था। यदि उन दोनों के पारस्परिक व्यवहार में कोई भी अन्तर आता तो वह बड़ा दुखी हो जाता और सोचता था—क्या कारण हैं जो उनके संबंध पूर्ववत् नहीं चल रहे।

खान से—नरक से बच जाने के चमत्कार के सम्बन्ध में कोई बात न करते थे। पहले दो-एक दिन तो उन लोगों ने इस सम्बन्ध में बातचीत की भी थी लेकिन उसके बाद नहीं। सहाक ने कहा था—उन्हें देवपुत्र ने—ईश्वर ने ही आकर बचाया है। हाँ, वे उसी के बचाये हुए हैं... इसमें कोई शक नहीं...हालाँकि सच तो यह है कि सहाक को ईश्वर ने बचाया था और सहाक ने बरबास को। क्या यही ठीक नहीं है? क्या ऐसा ही नहीं हुआ था?

हूँ ऽ ऽ—यह कहना कठिन है।

बहरहाल, जो भी हो बरबास ने सहाक को अपने बचाने के लिये धन्यवाद दिया। लेकिन उसने क्या ईश्वर के प्रति भी अपनी कृतज्ञता प्रकट की? हाँ, क्यों नहीं? लेकिन यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। कोई भी इस बारे में निश्चित रूप से कुछ भी नहीं कह सकता था।

सहाक को यह सोचकर कभी दुख होता था कि वह बरबास के संबंध में बहुत कम जानता है। उसके संबंध में बहुत कम जानता है। उसके संबंध में—जिसे वह इतना चाहता था। और उसे इसका इतना दुख हुआ था कि वे दोनों एक साथ प्रार्थना भी नहीं कर पाते थे—उस तरह भी नहीं जिस प्रकार खान में—नरक में वे ईश्वर का एक साथ स्मरण करते थे। वह कितना चाहता था कि दोनों उसी प्रकार से प्रार्थना कर सकें। लेकिन दोनों में कोई समझौता नहीं हो पाया। सहाक की समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था।

बरबास के बारे में परस्पर इतनी विरोधी बातें थीं कि उन्हें कोई समझ न पाता था। उसने ही देवपुत्र को मरते देखा था—उनकी दीप्ति देखी थी—उनका पुर्नजागरण देखा था। यह सब होते हुए भी अब इस संबंध में कोई बात न करते थे।……

सहाक दुखी था—लेकिन अपने लिये नहीं। उसका चेहरा भट्टी की आग से झुलस जाने के कारण काला पड़ गया था। बाल सफेद हो गये थे और बेतों के उधड़े हुए चमड़े के निशान सारे बदन पर पड़े थे। लेकिन इस सबके लिये उसे कोई शिकायत नहीं थी। दुखी होना तो दूर रहा—उलटे वह खुश था। विशेषकर उस समय जब उसके प्रभु ने उसके बचाने में इतना बड़ा चमत्कार दिखा दिया था।

वही चमत्कार बरबास के साथ भी हुआ था। लेकिन बरबास जो कुछ उसे दिखलाई पड़ता उससे आगे देखने की ही कोशिश करता था। और यह कोई भी नहीं जानता था कि वह क्या सोचता रहता था।

खेतों में काम करने के लिए ऊपर आने के प्रथम भाग में उन दोनों का सम्बन्ध उक्त प्रकार का था।

जब बसन्त में होने वाली खेतों की जुताई समाप्त हो गयी तब उन्हें पानी खींचने के लिये चरस में जोत दिया गया। चरस से पानी खींचकर उससे खेतों को सींचना आवश्यक था—अन्यथा सारे खेत सूख जाते। यह

काम भी बड़ा कठिन था। यह काम समाप्त हो जाने पर उन्हें दाने की चक्की के पास ले आया गया। यह चक्की उन कई इमारतों में से एक थी जो रोमन गवर्नर के राजमहल के चारों ओर थीं। यहाँ से अन्न बाहर भेजा जाता था। वे बन्दरगाह में आ गये थे। इस प्रकार वे अब बिलकुल समुद्र के सामने आ गये थे।

इसी चक्की में उनकी एक ठिंगने और काने आदमी से मुलाकात हो गई।

उसका बदन गठीला था। बाल छोटे-छोटे लेकिन जमे और कढ़े रहा करते थे। उसके भी चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ गयी थीं। उसने एक बार आटा चुरा लिया था—इसलिये उसकी एक आँख निकाल ली गयी थी। इसी वजह से उसकी गरदन के चारों ओर एक लकड़ी का चौखाना भी पड़ा रहता था। उसका काम था पिसे हुए आटे को बोरों में भरना। बाद में वही बोरों को गोदाम भी पहुँचाता था। उसका यह सीधा-सादा काम और चूहों जैसा रंग—इन दोनों में ही महत्व की कोई बात न थी। लेकिन न जाने किस कारणवश वह अपने अन्य साथियों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण दिखलायी पड़ता था। पता नहीं कैसे—सबको यह तुरन्त मालूम हो जाता था कि वह है या नहीं—और बिना मुड़े हुए भी उसकी एक आँख वाली दृष्टि अनुभव कर ली जाती थी। ऐसा शायद कभी ही होता हो जब उसके साथ किसी का आमना-सामना होता हो।

उसने इन दो नवागन्तुकों की तरफ भी कोई ध्यान नहीं दिया। उसने बिना किसी इरादे के केवल इतना ही देखा था कि उन दोनों को चक्की का सब से बड़ा और भारी पाट चलाने के लिए सौंपा गया था। शायद किसी ने यह देखा भी नहीं कि वह जरा सा मुसकराया था। वहाँ चार चक्कियाँ थीं। प्रत्येक चक्की को दो-दो गुलाम चलाते थे। सामान्यतः चक्की चलाने का काम गधों से लिए जाने की प्रथा थी लेकिन वहाँ गधे या खच्चर इतनी संख्या में न मिलते थे कि उनका चक्की चलाने के

लिए प्रयोग किया जा सकता—अतएव गुलाम ही इस काम में भी लगा दिए गए थे क्योंकि ऐसे आदमियों की संख्या गधों से भी अधिक थी—जिनको इस काम में लगाया जा सकता था। लेकिन सहाक और बरबास का ख्याल था कि यहाँ उन्हें अन्य स्थानों की अपेक्षा अधिक भोजन मिलता था। काम अधिक होते हुए भी उन लोगों की अवस्था पहले से अधिक अच्छी थी। गुलामों का हवलदार यहाँ अपना बेंत काम में लाने का अधिक अभ्यस्त न था। वह बेंत को अपनी पीठ पर खोंसे अधिकतर उन लोगों के बीच यों ही चक्कर लगाया करता था। वह अपने बेंत का प्रयोग केवल एक अंधे बुड्ढे गुलाम पर ही करता था जो मरणासन्न था।

वह समूचा मकान अन्दर से सफेद था। आटे के अणु मकान की प्रत्येक दीवाल और उसके अन्य भागों में उड़-उड़ कर जम गए थे। और यह काम कई बरसों से चल रहा था। इसलिए हर दीवाल पर आटे की मोटी तहें जम जाना स्वाभाविक था। यहाँ तक कि छत भी आटे की मोटी तह से बच न सकी थी। जिस समय चारों चक्कियाँ चल पड़तीं उनकी आवाज से पूरा मकान गूँज उठता था। सब गुलाम नंगे बदन काम करते थे—केवल वह काना शेर की खाल ओढ़े चक्कियों के नीचे का आटा बटोरा करता था। वह आटे के गड्ढे में इस प्रकार घुस जाता था जैसे चूहा हो। उसकी गरदन में जो चौखटा पड़ा रहता था उसे देख कर ऐसा लगता था जैसे कोई चूहा फँस गया हो लेकिन पिंजड़े से निकल भागने में सफल हो गया हो। कहा जाता है कि पहले वह आटा—कच्चा आटा ही फाँक जाया करता था। उसे आटा खाने से रोकने के लिए ही वह लकड़ी का चौखटा इस प्रकार पहना दिया गया था कि उसका मुँह बन्द रहे और वह आटा न खा सके। वह जानता था कि यदि उसे आटा चुराते पकड़ लिया गया तो उसकी दूसरी आँख भी निकाल ली जायगी और उसे भी अंधा बना कर चक्की चलानी

पड़ेगी—ठीक वैसे ही जैसे वह अंधा चलाता है। लोगों का कहना था कि वह आटा भूख की वजह से नहीं बल्कि आज्ञा के प्रति अवज्ञा दिखलाने के लिए फाँका करता था।

नहीं, वह नए-नए आये दो गुलामों में जरा भी रुचि नहीं रखता था। उसे किसी से कोई खास शिकायत भी नहीं थी। वे बन्दीखाने से लाए गए थे। लेकिन उसे खान के बन्दियों से भी कोई चिढ़ न थी। उसे किसी के खिलाफ कोई शिकायत न थी।

यह देखते हुए कि उन्हें ताँबे की खानों से लाया गया है—अतएव वे अवश्य ही खतरनाक अपराधी होंगे—ऐसा वह सोचता था लेकिन दोनों में एक तो अपराधी-सा नहीं जान पड़ता था। दूसरा पहले की तुलना में अवश्य पुराना अपराधी प्रतीत होता था। वह किसी की कोई खास परवाह नहीं करता था लेकिन ये लोग—ये दोनों, खान से बाहर कैसे आ पाए—यह उत्सुकता उसे बहुत तंग करने लगी। नरक से बाहर आना? यह कैसे हुआ? किसने उनको सहायता की? यही जानने लायक बात थी। लेकिन फिर उससे इन बातों से क्या मतलब था?

यदि कोई किसी बात की धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करे तो उसे अपने मन की बात करने या कहने अथवा पूछने का मौका मिल ही जाता है। कोई न कोई मौका या स्पष्टीकरण करने का अवसर सामने आ ही जाता है। मौके पर सब चीजें साफ-साफ दिखलायी पड़ने लगती हैं—केवल आँख खोल कर देखते रहने की आवश्यकता है। और वह यह बराबर करता रहा था।

उसने देखा कि रात को वह लम्बा, दुबला, पतला गुलाम उठ कर प्रार्थना करता है। वह ऐसा क्यों करता है? वह अवश्य ही किसी देवता का स्मरण करता है लेकिन कौन से? यह कौन सा देवता है जिसकी इस तरह से प्रार्थना की जाती है? वह काना आदमी बहुत से देवताओं के नाम जानता था लेकिन उसके दिमाग में यह कभी नहीं आया था कि

उनकी प्रार्थना भी करनी चाहिए। यदि उसके मस्तिष्क में यह विचार आता तो वह भी अवश्य ही उसी प्रकार कार्य करता। लेकिन वे लोग तो मूर्ति के सामने पूजा करते हैं जब कि यह गुलाम अँधेरे में ही अपने देवता की कल्पना कर लेता है और उनकी प्रार्थना करता है। वह ठीक उसी प्रकार बातें करता है जिस प्रकार कोई अपने सामने खड़े मालिक से बातें करता हो। यह बड़ी ही अजीब-सी बात थी। लेकिन यह सब उसकी कल्पना प्रतीत होती है।

किसी भी आदमी की ऐसे किसी व्यक्ति में कैसे रुचि हो सकती है जो उसके सामने हो ही नहीं। लेकिन प्रार्थना सम्बन्धी खोज कर लेने के बाद वह काना अक्सर सहाक से मौका पा कर बात करने लगा। उसने सहाक के असाधारण देवता के बारे में भी पूछताछ की। सहाक जो कुछ बतला सकता था—उसने बतलाया। सहाक ने कहा कि उसका ईश्वर सर्वत्र है। अँधेरे में भी रहता है—उजाले में भी रहता है। कोई भी उस ईश्वर की आराधना और आह्वान किसी भी समय कर सकता है। वह ऐसा ईश्वर है जो प्रत्येक अन्तर में निवास करता है। इस पर उस एकाक्ष ने कहा कि तब तो तुम्हारा ईश्वर बड़ा अच्छा है।

—हाँ, इसमें कोई शक नहीं। वह सचमुच बड़ा अच्छा है।

एक आँख वाले गुलाम ने यह बात सुन ली और थोड़ी देर तक उस पर विचार करता रहा। वह सोचता रहा—सहाक का ईश्वर अदृश्य है—लेकिन इसमें सन्देह नहीं शक्तिशाली बहुत है। तब उसने पूछा—क्या यही ईश्वर है जिसने तुम्हें खान से बाहर निकलने में मदद की।

—हाँ, सहाक ने स्वीकारात्मक उत्तर दिया।

और उन्होंने कहा वह सब दलितों और पीड़ितों का ईश्वर है। वह सब गुलाम को उनकी गुलामी से मुक्त करेगा और उन्हें स्वतंत्रता प्रदान करेगा। सहाक अपने धर्म का प्रचार करना चाहता था और यह देख रहा था कि वह काना उस धर्म को स्वीकार करने के लिए उत्सुक है।

सहाक ने क्रमशः अनुभव किया कि वह गुलाम अपनी तथा सबकी मुक्ति के बारे में अधिक से अधिक बातें सुनने के लिए उत्सुक है। यह ईश्वर की इच्छा है कि सहाक उस धर्म के बारे में काने को अधिक से अधिक बतलाए। अतएव वह जहाँ तक बन पड़ता उसे अपने धर्म के बारे में बतलाता हालाँकि बरबास की उसकी यह बात कुछ पसन्द नहीं आती थी। एक दिन जब वे लोग दिन भर का काम समाप्त कर चक्की के पाट पर बैठे थे सहाक ने अपनी वह प्लेट काने को दिखला ही दी और उसे बतला भी दिया कि किस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए। सहाक ने यूनानी गुलाम की भी पूरी कथा काने को सुना दी।

बातचीत खत्म होने के बाद एक बार अपनी प्लेट को उलट कर सहाक ने फिर देखा और उसे अपनी छाती पर यथास्थान पूर्ववत् पुनः रख दिया। इसके बाद बड़ी प्रसन्नतापूर्वक कहा—वह अपने ईश्वर का ही पक्का और सच्चा गुलाम है।

यह सुन कर काने ने कहा—ओह।

और इसके बाद काने ने सहाक से पूछा कि क्या उसके साथी के पास भी ऐसी ही ईश्वर के नाम की प्लेट है?

—हाँ, क्यों नहीं।

काने ने सहाक की बात पर सहमति प्रकट करते हुए अपना सिर ऐसे हिलाया जैसे उसे पहले यह विश्वास न था कि दोनों का धर्म और ईश्वर एक ही है। इसके बाद वे दोनों अपने अजीबोगरीब ईश्वर के बारे में बहुत देर तक बातें करते रहते।

चक्की भर में उस समय बड़ा आश्चर्य फैल गया—जब चक्की के गुलामों के हवलदार ने एक दिन सुबह आकर घोषणा की कि बरबास और सहाक को दिन में निश्चित समय पर गवर्नर के सामने उपस्थित होना है। यह चीज सब के लिए पहली बार हो रही थी। हवलदार भी

चकित था क्योंकि उसके काम सम्भालने के दौरान में इस प्रकार की पहली घटना होने जा रही थी। इसके पीछे क्या रहस्य है ? ये दीन, हीन दो गुलाम रोमन गवर्नर के सामने क्यों उपस्थित किए जायँगे ? जो भी हो, उससे उनके हाजिर होने की आज्ञा का कोई सम्बन्ध न था और उसे तो केवल निश्चित समय दोनों को गवर्नर के सामने पहुँचा देना भर था। ठीक समय पर दोनों को जाने के लिए छोड़ दिया गया और सारे गुलाम उनको देखते रह गए। वह काना गुलाम भी देखता रहा। वह मुस्कुरा तो सकता ही न था क्योंकि उसका मुँह तो लकड़ी के चौखटे से बँधा था।

सहाक और बरब्रास को छोटी-छोटी गलियों में से होकर जाने वाले रास्तों का कोई ज्ञान न था और वे दोनों अपने हवलदार के पीछे-पीछे उसके सटे हुए चले जा रहे थे—ठीक वैसे ही जैसे वे पुनः लोहे की साँकलों से एक साथ बाँध दिए गए हों।

जब वे राजमहल में पहुँच गए तो ड्योढ़ी पर एक मोटा तगड़ा काला गुलाम मिला जिसने दोनों को ले जाकर उपस्थित अधिकारी के सुपुर्द कर दिया। वह उपस्थित अधिकारी कई शानदार कमरों और आँगनों में से होता हुआ एक बड़े लम्बे-चौड़े और राजसी ठाठ से सजे कमरे में ले गया जहाँ वे दोनों रोमन गवर्नर के सामने खड़े थे।

तीनों ही एक साथ जमीन पर उलटे लेटे गये। बरबास और सहाक ने हवलदार के कहने से ऐसा किया था—हालाँकि बरब्रास को यह बात पसन्द नहीं थी। बरब्रास का कहना था कि गवर्नर चाहे कितना ही बड़ा आदमी क्यों न हो—आखिर है तो आदमी ही—इसलिये उसके सामने झुकना अपनी आत्मा को झुकाना है। लेकिन उसने हवलदार की अवज्ञा नहीं की। उनमें से कोई भी उस समय तक उठने की हिम्मत न कर सका जब तक स्वयं गवर्नर ने उठने के लिये नहीं कहा। गवर्नर गौरवर्ण का लम्बा-चौड़ा गठीले शरीर का व्यक्ति था। उसकी आयु लगभग ६० वर्ष की थी। मुँह मांसल और लम्बा था, माथा खूब चौड़ा था। ऐसा लगता

था—जैसे ईश्वर ने उसे आज्ञा देने के लिए ही बनाया हो। अजीब-सी बात थी—लेकिन थी सच कि इन लोगों को उसके सामने भय बिलकुल न लगा। सबसे पहले गवर्नर ने हवलदार से पूछा कि दोनों गुलाम काम कैसा करते हैं और क्या वह उनके काम से सन्तुष्ट है? हवलदार ने हकलाते हुए कहा कि वह दोनों के काम से सन्तुष्ट है। लेकिन उसने अपनी रक्षा के लिए यह भी कह दिया कि वह अपने गुलामों के साथ सदैव बड़ा सख्त व्यवहार करता है। गवर्नर ने पता नहीं हवलदार की आखिरी बात पसन्द की या नहीं लेकिन हाथ के इशारे से कहा कि वह जा सकता है। वह इतना घबड़ा गया था कि जल्दी में उसने अपनी पीठ गवर्नर के मुँह के सामने कर दी और सामान्य शिष्टाचार भी भूल गया।

हवलदार के चले जाने के बाद गवर्नर ने उन दोनों से बातें करनी प्रारम्भ की। उसने सब से पहले पूछा वे कहाँ से आये और कहाँ सबसे पहले रखे गये और उन्हें क्यों सजा मिली। इसके बाद सहाक के पास जा कर उसकी नम्बर प्लेट गवर्नर ने निकाल ली और उसे पलट कर पढ़ा... जीसस क्राइस्ट! वे दोनों ही आश्चर्य में पड़ गये कि गवर्नर ने उनके प्रभु का नाम कैसे पढ़ लिया।

—यह कौन है? गवर्नर ने पूछा।

—यह मेरे ईश्वर का नाम है। सहाक ने कम्पित स्वर में उत्तर दिया।

—अहा, पहले तो मैंने ईश्वर का यह नाम कभी नहीं सुना। लेकिन फिर इतने अधिक देवता हैं कि हरएक प्रत्येक देवता का नाम याद भी तो नहीं रख सकता। क्या यह तुम्हारे गाँव के या प्रान्त के देवता का नाम है?

—नहीं, यह ईश्वर का, सबके ईश्वर का नाम है। सहाक उत्तर दिया।

—हरएक के ईश्वर का ? क्या तुमने कहा—हरएक के ईश्वर का नाम है ? खैर, इसमें भी कोई बुरा नहीं है। लेकिन मैंने तो कभी नहीं सुना। क्या वह अपनी महिमा को छिपा कर रखता है ?

सहाक ने उत्तर दिया—जी हाँ।

—वह सब का ईश्वर है तो उसकी शक्ति भी अधिक होगी ? उसकी शक्ति का क्या आधार है ?

—प्रेम।

—प्रेम ?...अच्छा, क्यों नहीं ? कुछ भी हो, तुम किसी भी ईश्वर को मानो, इससे हमें कुछ भी लेना-देना नहीं है। लेकिन तुम यह बतलाओ तुमने सरकारी नम्बर की प्लेट पर उसका नाम क्यों खुदा रखा है ?

—क्योंकि मैं उस ईश्वर का हूँ, सहाक ने फिर कम्पित स्वर में उत्तर दिया।

—क्या सच ? क्या तुम उसके गुलाम हो ? लेकिन तुम उसके गुलाम कैसे हो सकते हो ? तुम तो राज्य के गुलाम हो—जैसाकि इस नम्बर प्लेट से स्पष्ट है। क्या तुम राज्य के गुलाम नहीं हो ?

सहाक ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया। वह केवल जमीन की ओर देखता रहा। अन्त में गवर्नर ने कहा :

तुम्हें इस प्रश्न का जवाब अवश्य ही देना पड़ेगा क्योंकि इस मामले में हमें बिलकुल साफ हो जाना है। अब मैं साफ पूछता हूँ—तुम अपने आपको रोमन राज्य का गुलाम मानते हो या नहीं ?

गवर्नर का स्वर यह प्रश्न पूछते समय भी निर्दय नहीं था।

—मैं अपने ईश्वर का गुलाम हूँ, सहाक ने अपनी नजर नीचे ही झुकाए हुए कहा।

गवर्नर कुछ सोचता हुआ सहाक के सामने आ खड़ा हुआ। तब

उसने सहाक का सिर ऊपर उठाया और उसकी गरदन में से वह प्लेट निकाल ली। वह उसका सिर पकड़े थोड़ी देर तक ताँबा गलाने वाली भट्टियों की आग से झुलसा सहाक का चेहरा देखता रहा। उसने कहा कुछ भी नहीं। जब उसने सहाक के मन के भाव उसके चेहरे पर पढ़ लिये तो उसे छोड़ दिया।

इसके बाद वह बरबास के सामने आया और उसने बरबास की प्लेट उलट कर वही नाम पढ़ा और पढ़ने के बाद पूछा :

—और तुम ? क्या तुम भी इसी ईश्वर को अपना ईश्वर मानते हो ?

बरबास ने कोई उत्तर नहीं दिया।

—मुझे बतलाओ ? क्या तुम उसमें विश्वास करते हो ?

बरबास ने अपना सिर हिला कर इंकार किया।

—तुम विश्वास नहीं करते ? तो तुमने अपनी प्लेट पर उसका नाम क्यों खुदा रखा है ?

बरबास पहले की भाँति फिर चुप हो गया।

—क्या जिसका नाम खुदा है तुम्हारी प्लेट पर—वह तुम्हारा ईश्वर नहीं है ?

—नहीं मेरा कोई ईश्वर नहीं है, अन्त में बरबास ने उत्तर दिया। उसका उत्तर बड़े कोमल स्वर में था लेकिन रोमन तथा सहाक दोनों ने उसे सुन लिया। और सहाक ने ऐसे निराशा, दुख और विस्मय मिश्रित नेत्रों से बरबास की ओर देखा कि बरबास को लगा सहाक की दृष्टि सीधी उसके हृदय में प्रवेश कर गयी है।

गवर्नर को भी बरबास के इस उत्तर से आश्चर्य हुआ।

—लेकिन मेरी समझ में यह नहीं आया। कि फिर तुम्हारी प्लेट के पीछे जीसस क्राइस्ट का नाम क्यों खुदा है

—क्योंकि मैं उनमें विश्वास करना चाहता हूँ। बरबास ने दोनों में से बिना किसी की ओर देखे उत्तर दिया।

रोमन ने उसकी तरफ भी देखा। उसके बदशकल चेहरे तथा घाव की ओर देखा। उसका कठोर, मोटा और रूखा मुँह देखा। उसके चेहरे से शक्ति अब भी झलकती थी लेकिन वह बिलकुल भावहीन था। सहाक की भाँति गवर्नर ने बरबास के सिर को उठा कर उसकी शकल पर मन के भाव पढ़ने की चेष्टा नहीं की। पता नहीं—क्यों उसके मन में यह भाव भी न आया कि वह ऐसा करे।

वह फिर सहाक की तरफ मुड़ गया।

—क्या तुम यह समझते हो—जो कुछ तुमने कहा है, इसका क्या अर्थ है? इसका अर्थ यह है कि तुम सीजर के विरुद्ध बगावत कर रहे हो। क्या तुम जानते हो कि वह भी ईश्वर है? और तुम कहते हो कि सीजर के नहीं—तुम उस ईश्वर के गुलाम हो जिसका नाम तुम्हारी प्लेट के पीछे खुदा है। क्या सही बात यही है?

—जी, यही बात है। सहाक की आवाज भर्रा रही थी लेकिन पहले की भाँति नहीं काँप रही थी।

—और तुम अपनी बात पर अड़े हो?

—जी।

—लेकिन क्या तुम यह नहीं समझते कि इस प्रकार की बात कह कर अपने ऊपर कितना बड़ा खतरा बुला रहे हो?

—जी, मैं खतरे को समझता हूँ।

रोमन गवर्नर एक क्षण के लिये रुक कर विचार करने लगा। उसके दिमाग में उस ईश्वर की बात आ गयी जो जेरूसलम में सूली पर चढ़ गया था।

—यदि तुम अपना कथन वापस ले लो तो तुम्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाया जायगा। क्या तुम अपना धर्म छोड़ सकते हो?

—मैं ऐसा नहीं कर सकता, श्रीमान्! सहाक ने उत्तर दिया।

—क्यों?

—मैं अपने ईश्वर के प्रति अविश्वासी नहीं होना चाहता।

—असाधारण व्यक्ति हो तुम...मैं समझता हूँ—तुम यह तो जानते ही होगे कि इस प्रकार कार्य करके तुम मुझे कितना कड़ा दण्ड देने के लिए विवश कर रहे हो? क्या तुम सचमुच इतने बहादुर हो कि अपने धर्म के लिए जान देने के लिए तैयार हो?

—यह बात मैं अपने मुँह से क्या कहूँ? सहाक ने गवर्नर को बड़ी धीरता से उत्तर दिया।

—क्या तुम्हें अपना जीवन प्यारा नहीं है?

—जी हाँ! प्यारा है।

—लेकिन यदि तुम अपने ईश्वर और धर्म को नहीं छोड़ते तो तुम्हें कोई बचा नहीं सकता। तुम्हें अपने जीवन से हाथ धोना होगा।

—श्रीमान्, मैं अपने ईश्वर से विमुख नहीं होना चाहता।

रोमन ने अपने कंधे उचकाए और कहा :

—तो फिर मैं तुम्हारे लिए और अधिक कुछ नहीं कर सकता। इसके बाद गवर्नर अपनी मेज पर चला गया—उसी मेज पर जिस पर जब वे तीनों आये थे उस समय वह बैठा था। मेज के संगमरमर के कोने को हाथी दाँत की एक हथौड़ी से बजाते हुए गवर्नर ने कहा :

—तुम भी उतने ही पागल हो जितना तुम्हारा ईश्वर पागल था। जब वे लोग गारद के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे तब, उसी बीच गवर्नर बरबास के पास पहुँचा और उसने बरबास की वह प्लेट निकाल कर फेंक दी जिस पर जीसस क्राइस्ट का नाम खुदा था।

—जब तुम उसमें विश्वास नहीं करते तो उनके नाम के अंकित पत्र की भी तुम्हें कोई जरूरत नहीं है।

यह सब कुछ हो रहा था तो सहाक बरबास की तरफ देख रहा था। उसकी आँखों से आग निकल रही थी और उसमें जो भाव था उसे भुलाया नहीं जा सकता।

इसके बाद गारद का एक सैनिक आया और वह सहाक को ले गया। सहाक के जाने के बाद गवर्नर ने बरबास के आचरण की बड़ी प्रशंसा की और कहा कि वह उसे पुरस्कृत करेगा। बरबास को आज्ञा मिली कि वह राजमहल के सेवकों के मुखिया के पास जाय और अपने लिए पहले से अच्छा कार्य प्राप्त कर ले।

बरबास ने गवर्नर पर एक द्रुत दृष्टि डाली और गवर्नर ने देखा कि वे आँखें भावहीन न होते हुए भी ऐसी हैं जिनमें हानि करने की कोई इच्छा प्रकट नहीं होती है। उन आँखों में घृणा एक ऐसे बाण की तरह उलझी थी जो शायद कभी भी न चलाया जाता।

अस्तु। बरबास आज्ञानुसार अपना काम करने के लिए गवर्नर के सामने से चला आया।

१३

जब सहाक को सूली पर चढ़ाया गया तो बरबास उस समय झाड़ियों के पीछे छिपा हुआ अपने मित्र का परलोक गमन देख रहा था। वह सामने इसलिये नहीं आया क्योंकि वह नहीं चाहता था कि सहाक की नजर उस पर पड़े। लेकिन सहाक को इतनी तकलीफ पहले ही दी जा चुकी थी कि उसमें किसी की भी उपस्थिति का ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता ही शेष नहीं रही थी। सहाक को सूली पर केवल उन लोगों ने अपनी आदत के अनुसार चढ़ा दिया था। गवर्नर ने अपनी ओर से स्वयं कोई आदेश उसके सूली पर चढ़ाये जाने के लिये नहीं दिया था। संभवतः वह ऐसा करना भूल गया था। लेकिन उसने विपरीत आदेश देने की भी कोई चिन्ता नहीं की थी। उन लोगों ने अपनी बचत के लिये प्रथा के अनुसार सहाक को मार डाला था। गुलाम को फाँसी क्यों दी गयी—इसका उन्हें कोई ज्ञान न था और न इस बात की ही उन्हें कोई चिन्ता थी कि उसका अपराध क्या था—यह जानते।

उसका आधा सिर मूँड़ दिया गया था और आधे पर सफेद बाल थे जो रक्त से लथपथ हो गये थे। चेहरा बिलकुल भावहीन था। बरबास जानता था कि यदि कोई भाव वह प्रकट कर सकता तो क्या होता। बरबास की आँखें जल रही थीं और वह जलती आँखों से अपने दोस्त के मरने की क्रिया को देखता रहा। वह उसके स्वल्प रक्त वाले शरीर को भी देखता रहा, जिससे यदि वह अपना संबंध तोड़ना चाहता तब भी नहीं तोड़ सकता था और वह ऐसा करना भी नहीं चाहता था। उसका पूरा शरीर इतना निर्बल और कृशकाय हो गया था कि उसे देखते हुए किसी के लिये यह कल्पना करना भी कठिन था कि उसने अपराध क्या किया है। उसकी छाती पर देशद्रोह की मोहर दाग दी गयी। छाती पर पसलियों की एक-एक हड्डी दिखलायी पड़ रही थी। उसकी नम्बर प्लेट भी उतार ली गई थी—इसलिये कि उस प्लेट की धातु किसी और काम आ जायगी।

जहाँ सूली दी गई थी वह स्थान शहर से बाहर कुछ ऊँचाई पर था। नीचे एक-दो झाड़ियाँ थीं। इन्हीं में से एक के पीछे बरबास खड़ा हुआ था। उसे तथा जो लोग सूली देने आये थे उनको छोड़कर वहाँ कोई न था। किसी ने सहाक की मौत को भी देखना आवश्यक नहीं समझा। अन्यथा जब दण्डित व्यक्ति कोई बड़ा गम्भीर अपराध किये होता तो अकसर बहुत से लोग एकत्रित हो जाते थे। लेकिन सहाक ने न तो कोई हत्या की थी और न ऐसा ही अन्य कोई कार्य किया था—इसलिये कोई जानता भी न था कि उसका अपराध क्या था।

अब पुनः बसन्त आ गया था—ठीक वैसा ही जैसा गत् वर्ष आया था—जब बरबास और सहाक खान से बाहर निकले थे। सहाक बाहर निकलते ही अपने घुटनों पर झुक गया था और चिल्ला पड़ा था 'लो, वह आ गये!' सारी पृथ्वी पर हरियाली छायी थी और चारों ओर रङ्ग-बिरङ्गे फूल चटके हुए थे। जहाँ सूली दी गयी थी वह पहाड़ी भी कम

हरी नहीं थी। सूरज चमक रहा था—पहाड़ियों पर और समुद्र पर—जो अधिक दूर न था। दोपहर का समय था और गर्मी ऐसी थी कि उसमें तबियत परेशान हो जाती थी। ढाल पर चढ़ने-उतरने वालों को मक्खियों की उपस्थिति का भी ज्ञान हो जाता था। वे सारी की सारी मक्खियाँ सहाक के शरीर पर जैसे आ जुटी थीं। सहाक जब तक जिन्दा था उन्हें बड़ी कठिनाई से उड़ा पाता था। नहीं, सहाक की मौत में आत्मा का उन्नयन या पवित्र करने वाली कोई बात नहीं थी।

लेकिन यह कम उत्सुकता की बात न थी कि सहाक की मृत्यु के इतने अमहत्वपूर्ण होते हुए भी बरबास पर उसका कम असर न पड़ा था। वह एक-एक करके सारी बातें याद कर रहा था। वह पसीना जो उसकी बाहों के गड्ढे से होता हुआ शरीर पर स्वेद धारा सी बह रहा था—माथा भी पसीने से लथपथ था। मक्खियाँ अलग तङ्ग कर रही थीं और उनको वहाँ हटाने वाला भी कोई न था। उसका सिर झुक गया था और वह बड़े जोरों से कराह रहा था। बरबास ने सहाक की हर दर्द भरी साँस का स्वर सुना था। स्वयं वह यह देख-सुनकर हाँफने लगा था और उसका आधा मुँह खुला ही रह गया था। सहाक को सूली पर प्यास लगी थी और बरबास का गला झाड़ी में छिपे-छिपे सूखा जा रहा था। यह उल्लेख योग्य है कि जितना कष्ट सहाक को हो रहा था उतनी ही तकलीफ बरबास भी अनुभव कर रहा था। वे दोनों साथ-साथ एक ही लोहे की साँकल से बरसों बँधे भी तो रहे थे। वह समझता था—वह अब भी बँधा है। वह सोच रहा था कि सहाक और उसका भाग्य दोनो अब भी बँधे हैं।

सहाक कुछ कहना चाहता था—या पानी पीना चाहता था। उसने बात कहने का प्रयत्न किया लेकिन कोई चेष्टा करके भी सुन न सका। बरबास ने अपने कान उसी की ओर लगा दिये लेकिन फिर भी वह सुन न सका। इसके अलावा वह उससे काफी दूर भी खड़ा था। हाँ, निस्सन्देह,

वह इतना तो कर ही सकता था कि दौड़ता हुआ ढाल से अपने मित्र के पास चला जाता और उससे चिल्लाकर पूछता, वह क्या चाहता है ? लेकिन वह ऐसा न कर सका। वह चुपचाप अपनी झाड़ी में छिपा खड़ा रहा। उसने कुछ भी नहीं किया। वह केवल विस्फारित नेत्रों से अपने साथी को देखता रहा और उसका मुँह पीड़ा की सहानुभूतिवश आधा खुला ही रह गया।

थोड़ी देर बाद ही यह स्पष्ट हो गया कि सहाक को अब और अधिक कष्ट नहीं मिलने वाला है। उसकी साँस का स्वर कोमलतर हो गया था और छाती का उठना-बैठना भी बहुत हलका पड़ गया था। इसके बाद ही साँस का आना-जाना बिलकुल बंद हो गया और कोई भी यह समझ सकता था कि वह मर गया। उसके प्राण त्याग पर न तो पृथ्वी पर अँधेरा छाया और न भूकम्प ही आया---बिना किसी प्रकार की परेशानी पैदा किए सहाक ने अपने प्राण विसर्जित कर दिये। उसके पास बैठे लोगों ने उसके मरने की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। वे बैठे-बैठे चौपड़ खेलते रहे। केवल बरबास ने उसके प्राणान्त को देखा और एक दीर्घ निश्वास छोड़कर वह अपने घुटनों पर ऐसे झुक गया—जैसे प्रभु यीशू की प्रार्थना कर रहा हो।

अजीब बात थी......जरा सोचने की बात थी; यदि सहाक ने बरबास को प्रार्थना करते देखा होता तो वह कितना प्रसन्न हुआ होता। दुर्भाग्य-वश वह यह देखने के लिये जीवित न बचा था। वह मर चुका था।

और कुछ भी हो। हालाँकि बरबास घुटनों के बल बैठा था लेकिन वह प्रार्थना नहीं कर रहा था। वह जानता ही नहीं था कि किसकी प्रार्थना करे और क्यों करे ? जो भी हो, वह वहाँ पर थोड़ी देर प्रार्थना की मुद्रा में बैठा अवश्य रहा—चाहे उसने प्रार्थना की हो या न की हो। इसके बाद उसने सफेद दाढ़ी वाला अपना खुरदुरा, मोटे ओठों वाला मुँह अपनी हथेलियों में छिपा लिया और फूट-फूटकर रोने लगा।

अकस्मात् एक सैनिक ने कसम खाकर कहा कि सूली पर चढ़ाया गया आदमी मर चुका है और बस अब सूली पर से उतार कर घर चले जाने का काम ही शेष रहा है। उन्होंने ऐसा ही किया।

अस्तु, सहाक सूली पर चढ़ा दिया गया और बरबास उसे देखता रहा।

१४

जब गवर्नर ने अपने पद से अवकाश ग्रहण किया और अपने जीवन के शेष दिन बिताने के लिये रोम वापस जाने की तैयारी की तो उसने बहुत सी सम्पत्ति कमा ली थी। उस जैसी सम्पत्ति पहले कभी किसी गवर्नर ने अर्जित नहीं की थी। लेकिन इसके साथ ही उसने द्वीप का प्रशासन इतने अच्छे ढङ्ग से किया था और खानों को इतने मुनाफे से चलाया था कि राज्य सरकार को उतना धन पहले कभी नहीं मिला था। इस कार्य से असंख्य ओवरसियरों तथा हवलदारों ने अपने कर्तव्य-पालन में दृढ़ता, कठोरता और निर्दयता के भावों तक का प्रदर्शन किया था; अतएव वे धन्यवाद के पात्र थे। उन्हीं लोगों की बदौलत द्वीप के प्राकृतिक स्रोतों, निवासियों और गुलामों का पूरा-पूरा शोषण किया जा सका था। लेकिन वह स्वयं निर्दयी न था। उसका शासन कठोर था—वह स्वयं कठोर न था। यदि कोई उस पर निर्दयी होने का अभियोग लगाता था तो यह उसी का अज्ञान था। यह उस तथ्य का परिचायक था कि लोग उसे जानते नहीं थे। और अधिकांश के लिये वह अज्ञात, अर्द्ध दैवी पुरुष था। हजारों आदमियों ने खानों तथा खेतों में उस समय सुख की साँस ली जब उन्होंने सुना कि गवर्नर द्वीप से विदा लेने की बात सोच रहा है। वे अपने भोलेपन में सोचते थे कि नया शासक पहले की अपेक्षा दयालु होगा। लेकिन गवर्नर ने स्वयं बड़े खेद और उदास भाव से द्वीप को छोड़ा। उसने द्वीप में अपने जीवन के सर्वोत्तम सुख-साधन सम्पन्न दिन बिताये थे।

वह बड़ा सक्रिय, फुर्तीला और कठोर परिश्रम से जरा भी न डरने वाला व्यक्ति था। उसे अधिक से अधिक काम करने में आनन्द आता था। जाते समय उसे परिश्रमी जीवन के अभाव की बात सोचकर दुख हुआ। लेकिन इसके साथ ही वह बड़ा सुसंस्कृत, सुसभ्य और सुरुचि सम्पन्न व्यक्ति था। रोम में उसे समान व्यक्ति मिलेंगे—जिनमें उठ-बैठकर उसके व्यक्तित्व का विकास होगा—यह कल्पना कर उसे बड़ी प्रसन्नता भी होती थी। जब वह जहाज पर बैठा यह सोच रहा था तो उसे भावी सुख की कल्पना से बड़ा मानसिक विश्राम मिल रहा था।

गवर्नर अपने साथ कुछ ऐसे गुलामों को भी ले गया था जिन्हें उससे अपने उपयोग के लिये अच्छा समझा था। इन्हीं में बरबास भी था। बरबास को अपने साथ जाने वाले गुलामों की सूची में लिहाज और भावुकतावश अधिक रखा गया था, उपयोगिता की बात उसके दिमाग में कम थी क्योंकि उसकी ही आयु का बूढ़ा गुलाम उसकी सेवा क्या करता। लेकिन गवर्नर बरबास को बुद्धिमान समझता था क्योंकि उसने गवर्नर के कहने से अपने ईश्वर को छोड़ दिया था। यही कारण था बरबास को साथ ले जाने का। किसी को यह विश्वास न होता था कि बरबास का स्वामी इतना मुलाहिजा करने वाला और चीजों को न भूलने वाला भी हो सकता है।

यात्रा में साधारण से अधिक समय लगा। कई दिनों तक जहाज को अनुकूल वायु ही नहीं मिली। किन्तु कई सप्ताह के खेवों के बाद वे लोग आखिरकार ओसटिया के बन्दरगाह में पहुँच गये। उस समय डाँड़ चलाने वाले सब गुलामों की पीठें लहूलुहान हो गयी थीं। दूसरे दिन ही गवर्नर रोम पहुँच गये। एक-दो दिन में उनका सारा सामान भी आ गया।

गवर्नर ने अपने रहने के लिए जो महल खरीदा था वह बड़ा ही सुन्दर था और नगर के बीचोबीच था। महल कई मञ्जिला था और

अन्दर उसकी दीवालों तथा फर्श को बनाने में बहुरंगी संगमरमर से काम लिया गया था। महल का रहायशी भाग हर प्रकार के भोग-विलास की सामग्री से परिपूर्ण था। बरबास अन्य गुलामों के साथ महल के नीचे के भाग में रहता था। इसलिए उसने ऊपर का भाग तो नहीं देखा था लेकिन वह अपनी कल्पना से समझ गया था कि ऊपर का भाग कैसा होगा। लेकिन ऊपर का भाग चाहे जैसा हो उससे बरबास को कोई मतलब न था। बरबास को हलके काम सौंपे गए थे। बरबास अन्य कई गुलामों के साथ पाकशाला के संचालक के नेतृत्व में प्रतिदिन बाजार जाया करता सामान खरीदने। पाकशाला का संचालक स्वभाव से ही अभिमानी था और उसे गुलामी से मुक्ति मिल चुकी थी। बाजार में बड़ी भीड़ हुआ करती थी और आगे बढ़ना भी भीड़ की वजह से कठिन हो जाया करता था। वह कोलाहलमयी नगरी जिसमें बरबास अपने मालिक की कृपा से पहुँच सका था उसके लिए कभी अधिक परिचित न हो सकी थी। वह रोम की सम्पत्ति एवं वसुधा, बड़े-बड़े राजभवन आदि देख कर अवश्य अचरज में पड़ जाया करता था। उसने रोम के हमाम भी देखे थे। बड़े-बड़े उपासनागृह और उनमें सजे-सजाये देवताओं के दर्शन भी किए थे। लेकिन इन सब का बरबास के चित्त पर कोई प्रभाव न पड़ा था। नहीं, उसे इस दुनिया की जरा-सी भी परवाह न थी। वह उसके प्रति बिलकुल उदासीन था। रोम का विपुल वैभव भी उसके किसी काम का न था।

लेकिन वह केवल उदासीन ही नहीं रह सका था। उसे रोम की सम्पदा और सम्पन्नता से घृणा हो गयी थी।

उसे वहाँ की बहुत-सी चीजें अयथार्थ लगती थीं। इन्हीं में से पुरोहितों और धर्मपूजकों के विविध रंगी लम्बे-लम्बे जुलूस भी थे। उसका अपना कोई ईश्वर न था—इसलिए उसे उन जुलूसों के प्रति सम्मान प्रकट करना भी भला न लगता था। वह बड़े-बड़े राजभवनों की दीवालों

से सटा—इन जुलूसों की ओर दृष्टि भी न डालना चाहता था। एक बार वह एक ऐसे मन्दिर में चला गया था जिसके देवता को वह न जानता था। पूछने पर उसे मन्दिर के रक्षक ने बाहर निकाल दिया यह समझ कर कि वह कोई ऐसा विदेशी है जो मन्दिर की व्यवस्थाओं और परम्पराओं से परिचित नहीं है। वह वहाँ से भागा। एक सड़क से दूसरी सड़क, एक गली से दूसरी गली होता हुआ जब वह अपने निवासस्थान पर पहुँचा तो स्वामी का कृपापात्र होने के कारण ही आशंकित दण्ड से बच सका था। और दूसरे वे लोग यह स्पष्टीकरण मान गये थे कि वह रास्ता भूल गया था। वह अब अपनी कोठरी में लेटा रहता तो अँधेरे में जीसस क्राइस्ट का नाम उसे अपने सामने जलते हुए अक्षरों में दिखलायी पड़ता और उसे ऐसा लगता कि वह नाम उसकी छाती पर रखा हुआ है। उसकी साँस फूलने लगती थी।

उस रात बरबास को ऐसा लगा कि वह एक ऐसे गुलाम के साथ लोहे की साँकल में बँधा हुआ है जो ईसा की प्रार्थना कर रहा है लेकिन वह उसका मुँह देखने में असमर्थ है!

—तुम क्यों प्रार्थना कर रहे हो? इससे क्या लाभ? बरबास ने उस गुलाम से पूछा।

—मैं तुम्हारे लिए प्रार्थना कर रहा हूँ। उस गुलाम ने सुपरिचित स्वर में अंधकार में से उत्तर दिया।

और तब वह चुपचाप पड़ रहा। उसने प्रार्थना करने वाले गुलाम के कार्य में बाधा न डाली। उसकी आँखों में पता नहीं क्यों आँसू भर आये। लेकिन जब वह जागा और उसने अपनी साँकल बजाने की चेष्टा की तो वह वहाँ न थी और न वहाँ वह गुलाम ही था। वह किसी से बँधा न था। वह दुनिया में किसी से बँधा न था।

एक बार उसने देखा महल के एकान्त भाग में किसी गुलाम ने मछली की शकल दीवाल पर बना दी थी। वह समझ गया यह कार्य

किसी ईसाई गुलाम का ही है। वह सोचने लगा कि गुलामों में कौन-सा ईसाई है। वह चुपचाप देखता रहा और देख कर यह पता लगाने की कोशिश करता रहा कि कौन-सा गुलाम ईसाई हो सकता है। लेकिन उसने किसी से पूछा नहीं। यदि वह ऐसा करता तो पता लगाना अधिक कठिन न होता लेकिन उसे यह बात पसन्द न थी।

वह गुलामों से अधिक बोलता-चालता भी न था। जितनी आवश्यकता होती वह केवल उतनी ही बातें करता। वह उनसे बोलता न था—इसलिए उनको जानता भी न था। और यही वजह थी कि उसे भी कोई नहीं जानता था और न उसकी चिन्ता ही करता था।

बरब्बास को यह ज्ञात था कि रोम में भी बहुत से ईसाई हैं लेकिन उसने उनसे सम्पर्क स्थापित करने की कोई चेष्टा नहीं की। उसे यह भी मालूम था कि उनके नगर में विभिन्न स्थानों में प्रार्थनागृह हैं और उनके प्रीतिभोज भी होते हैं लेकिन वह उनमें से किसी भी स्थान पर नहीं गया। उसके दिमाग में यह बात दो-एक बार आयी भी लेकिन उसे क्रियात्मक रूप वह कभी न दे सका। वह उनके ईश्वर का नाम अपनी नम्बर वाली प्लेट पर लिखे था लेकिन वह उससे छीन ली गयी थी।

बाद में उन लोगों को दमन के भय के कारण अपने प्रीति-सम्मेलनों का आयोजन गुप्त रूप से करना पड़ा। उन लोगों पर शक किया जाने लगा था। उन्हें दबाया जाने लगा था। लोग उनसे घृणा करने लगे थे। वे समझते थे कि ये जादूगर हैं। इनसे डरना चाहिए। कोई संबंध न रखना चाहिए।

एक दिन संध्या को उसने दो गुलामों को परस्पर बातें करते सुना। वे अँधेरे में बातें कर रहे थे और समझ रहे थे उनके पास कोई नहीं है। बरब्बास भी उन्हें देख नहीं सका था। केवल उनकी आवाज से ही पहचान सका था। उन दोनों गुलामों को कुछ ही दिन पूर्व खरीदा गया था।

वे उस सभा की बातें कर रहे थे जो ईसाई बंधुओं की दूसरे दिन संध्या को होने जा रही थी। उन लोगों की बातों से बरबास को पता चला कि सभा कब्रों के पास वाले मैदान में होने जा रही है।

सभा का स्थान भी अजीब सा रखा है......मृतकों के बीच...... वे अपने मिलने का वैसा स्थान किस प्रकार निश्चित कर सके।

दूसरे दिन संध्या को गुलामों के रहने की कोठरियों के हाते के बंद होने के पूर्व ही बरबास उससे बाहर निकल गया। वह जानता था—ऐसा करके वह अपने जीवन को खतरे में डाल रहा है—लेकिन वह रुक न सका। वह निश्चित स्थान के पास गोधूलि बेला के समय ही पहुँच गया। रास्ते में उसे एक चरवाहा मिला जो भेड़ों को चराकर शहर वापस ला रहा था। उससे पूछने पर उसे कब्रों के पास वाले उस मैदान का पता लग गया जहाँ सभा होने वाली थी। लेकिन उस समय वहाँ एक भी आदमी न था।

वह ढाल से नीचे उतर गया। नीचे अँधेरे में वह रास्ता टटोलता चलने लगा। दिन का प्रकाश अब भी था! लेकिन क्रमशः अँधेरा हो गया। बीच-बीच में उसे लगता कि अगल-बगल कुछ लोग बातें कर रहे हैं। वह रुक जाता और सुनता लेकिन बाद में पता चलता उसका यह भ्रम मात्र है।

अकस्मात् उसे एक स्थान से प्रकाश की रेखा दिखलायी पड़ी। वह तेजी से उस ओर बढ़ा लेकिन बीच में ही न जाने क्या हुआ कि वह प्रकाश-रेखा गुम हो गयी। उसने बड़ा प्रयत्न किया वह मिल जाय—मिल जाय लेकिन वह न मिली।

उसे रास्ता मालूम था। इसलिये वह वापस लौट पड़ा। लेकिन लौटते-लौटते अब की बार दूसरी दिशा में उसे प्रकाश दिखलायी पड़ा। इस बार कोई भ्रम नहीं हो सकता था। वह उसी ओर बढ़ा। प्रकाश तीव्र से तीव्रतर होता गया और यहाँ तक कि अन्त में......

सहसा वह फिर लुप्त हो गया। आँख फाड़कर देखने पर भी वह ज्योति पुञ्ज बरबास को दिखलायी न पड़ा।

उसने अपना हाथ माथे पर रखा और फिर उँगलियों से आँखें टटोलीं। वह सोचने लगा उसे भी कैसा प्रकाशपुञ्ज दिखलायी पड़ा था। क्या वह प्रकाश नहीं था? क्या वह केवल उसकी कल्पना ही थी?...... या उसकी आँखों ने ही धोखा दिया था?......वैसा धोखा जैसा उसे पहले एक बार और हुआ था।......वह बार-बार अपनी आँखें मल रहा था।

नहीं, वहाँ कहीं भी कोई प्रकाश न था। कहीं किसी भी दिशा में नहीं। केवल अनन्त बर्फीला अन्धकार उसे चारों ओर से घेरे था। कहीं कोई भी तो नहीं दिखलायी पड़ रहा था। वहाँ उसे छोड़कर किसी मनुष्य का नाम-निशान न था......केवल मृतक ही मृतक थे...वह मृतकों के संसार से एक बार फिर आ गया था।

मृतकों का संसार!...वह मृतकों के संसार में था! वह मृतकों के संसार में फँस गया था और सो भी अकेला!......

आतंक से उसका सारा शरीर सिहर उठा। ऐसा आतंक जो उसका गला सा घोटे दे रहा था। उसका दम झूलने लगा था। और सहसा वह दौड़ पड़ा। न उसने सीढ़ियाँ देखीं और न कब्रों पर लगे पत्थर देखे और न सामने आने वाली दीवालों को देखा। जो रास्ता मिला उस पर ही भाग छूटा और जो मोड़ मिला उसी पर मुड़ गया...दीवाल मिली तो उससे टकराकर अपना सिर फोड़ लिया...पत्थर मिले तो उनसे ठोकर खाली... वह पागल सा हो गया था। दौड़ते-दौड़ते उसकी साँस फूलने लगी थी। बार-बार कब्रों के पत्थरों से उसे टक्करें लग रही थीं और उसे याद दिला रही थीं कि इन तहखानों में एक बार बन्द हो जाने के बाद वह कभी भी न निकल सकेगा। न निकल सकेगा?......

आखिरकार उसे पृथ्वी को छूकर आती हुई वायु का उष्ण-स्पर्श

अनुभव हुआ। अर्ध-चेतन अवस्था में उसने अपने शरीर को ढाल से ऊपर खींच लिया। और वह अंगूर की बेलों से होता हुआ बाहर सड़क पर आ गया। वहाँ आकर वह पड़ रहा। वह अँधेरे में आसमान की ओर देख रहाथा।

अब चारों तरफ अँधेरा हो गया था। आकाश में भी और पृथ्वी पर भी। हर जगह......

बरबास जब शहर को वापस आ रहा था तो वह अनुभव कर रहा था कि वह एक दम अकेला है। इसलिये नहीं कि उसके आस-पास कोई आ-जा नहीं रहा था—वैसे तो बहुत से लोग आ-जा रहे थे—बल्कि इसलिये कि अब समूची रात उसे अकेले ही काटनी थी। ऐसा तो उसके साथ सदैव से था। वह कोई नयी बात नहीं थी लेकिन इतना एकाकी-पन वह पहली बार महसूस कर रहा था। वह अँधेरे में ऐसे चल रहा था जैसे वह उसमें गाड़ दिया गया हो। वह अकेले अपना सा मुँह लिये—जिस पर घाव का निशान था—वह निशान जो पिता ने छुरे से घाव कर के सदैव के लिये उसके मुँह को दे दिया था—चल रहा था। और सफेद बालों वाली झुर्रियोंदार छाती पर उसकी वह प्लेट लटकी थी जिस पर से ईश्वर का नाम काट दिया गया था। हाँ, वह स्वर्ग और पृथ्वी—दोनों स्थानों में अकेला था।

वह अपने विचारों में डूबा हुआ था। अपनी ही मृत्यु के संसार के विचारों में डूबा था। वह उनसे अपना सम्बन्ध कैसे छुड़ा सकता था?

वह केवल एक बार......एक बार ही एक आदमी से बँधा था, सो भी लोहे की साँकलों द्वारा।

उसे सड़क पर अपनें ही कदमों की आवाज सुनायी पड़ती थी। अन्यथा उसके लिये सर्वत्र शान्ति थी। कहीं कोलाहल न था। ऐसा लगता था जैसे चारों ओर कोई भी जीवित न हो। कोई प्रकाश न हो। अद्भुत

भयंकर, डरा देने वाले अँधेरे ने उसे घेर रखा हो। आकाश में एक भी तारा न था। कहीं पर प्रकाश का एक बिन्दु भी न था। उसे साँस लेने में कठिनाई हो रही थी। हवा गन्दी और गरम मालूम पड़ रही थी। उसे ज्वर सा प्रतीत हो रहा था। उसे लग रहा था, उसे ज्वर आ गया है। मृत्यु का ज्वर? लेकिन किसने उसे मौत के पास पहुँचा दिया? मौत! मौत तो सदा उसी के अन्दर थी। जब तक वह जीवित रहा मौत सदैव उसके अन्दर विद्यमान रही। वह उसे अन्दर ही अन्दर अपना शिकार बनाती रही। वह उसके मस्तिष्क के काले अँधेरे रास्तों में छिपी रही और सदैव अपनी भयंकरता से आंतकिक करती रही हालाँकि वह अब बूढ़ा हो गया था। उसे अब और अधिक जीने की भी इच्छा न थी लेकिन सदा की भाँति उसके मन में अब भी मौत का आतंक समाया हुआ था। यद्यपि वह इतना चाहता था...इतना चाहता था......

नही, नहीं, नहीं, मरना नहीं चाहता था वह! मरना नहीं चाहता था!

लेकिन वे सब तो अपने ईश्वर की प्रार्थना करने मृतकों के संसार में एकत्रित हुए थे। जिससे वे ईश्वर से मिल जाय—मृतकों के संसार में खो जायँ? उन्हें मौत का भय न था। उन्होंने उस भय पर विजय प्राप्त कर ली थी। तभी तो वे अपने बांधविक सम्मेलनों और अपने प्रीति-भोजों के लिये मृतकों के संसार के पास एकत्रित होते थे...प्रीति...प्रेम...एक दूसरे का प्रेम...एक दूसरे से प्रेम करो!

लेकिन जब वह वहाँ पहुँचा तो कोई भी न था। वहाँ अंधकार में एक स्थान से दूसरे स्थान की टक्करें खाता फिरा। वह केवल अपने दिमाग के अँधेरे जैसे मार्गों में परेशान हुआ घूमता फिरा। कोई भी न मिला...कोई न मिला...।

वे सब कहाँ थे? वे कहाँ थे जो एक दूसरे से प्रेम करने की शिक्षा देते फिरते हैं?

वे आज रात कहाँ हैं ?

बरबास अब शहर में आ गया था। उसे अब और भी अधिक गर्मी मालूम पड़ने लगी थी। रात सारे संसार पर उमड़-घुमड़कर अपना अँधेरा लादे दे रही थी। वह गरम थी—ऐसी गरम जैसे तवा, जलता तवा! वह स्वयं भी तो गरमी अनुभव करता था—उसका शरीर ज्वराक्रान्त था और रात भी ज्वर की भाँति तप रही थी। उसका दम सा घुटा जा रहा था। दम सा......

जैसे ही वह सड़क के नुक्कड़ से गली में मुड़ा, धुएँ की गंध उसके नासिका रंध्रों में भर गयी। धुआँ एक मकान से निकल रहा था और उसके नीचे के भाग के एक कमरे के दो छेदों में से आग की दो लपटें उसे निकलती दिखलायी पड़ीं।...वह उस ओर बढ़ा!

जैसे ही वह उस ओर भागा उसने अन्य लोगों को भी आग लगी, आग लगी का शोर मचाते हुए उसी तरफ भागते देखा।

—आग! आग!! वे यही चिल्ला रहे थे। एक गली के अन्त में उसने देखा—मकान का दूसरा भाग और जल रहा था—और भी तेजी से जल रहा था। वह पागल सा हो गया। उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। सहसा उसे सुनायी पड़ा :

—ये ईसाई हैं! ये ईसाई ही यह सब कर रहे हैं!!

यह आवाज दूर से आयी थी। इसके बाद उसने फिर सुना :

—ये ईसाई हैं! ये ईसाई ही हैं!!

पहले तो वह स्तब्ध रह गया जैसे वह समझ ही न सका हो यह कोलाहल कैसा हो रहा है। इसका क्या मतलब है। ये ईसाई...? और तब उसकी समझ में आ गया। वह सब कुछ समझ गया था।

हाँ, ये ईसाई ही हैं। ये ईसाई ही हैं जो समूचे रोम को जलाये दे रहे हैं। समूचे संसार में आग लगाये दे रहे हैं।

अब वह समझ गया था कि वे लोग वहाँ क्यों नहीं पहुँचे थे। वे

यहाँ रोम में आग लगाने के कार्य में व्यस्त थे। संसार भर में आग लगाने के चक्कर में थे। उनका समय आ गया है। उनका रक्षक आ गया है !

वह सूली पर चढ़ा व्यक्ति वापस लौट आया है—वह जो गोलगोथा की पहाड़ी पर मरा था—पुनः जीवित हो गया है। मानवता की रक्षा के लिये—इस संसार को नष्ट करने के लिये—जैसा उसने वादा किया था। वह अब इसको विध्वस्त कर देगा, महाअग्नि की ज्वालाओं में सब कुछ नष्ट हो जायगा ! अब वह व्यक्ति सचमुच अपनी शक्ति दिखला रहा है। और वह, बरबास, अब उसकी सहायता करेगा। बरबास अबकी बार धोखा न देगा। वह आग भड़का रहा था। वह एक मशाल ले आया था। उसी से वह अन्य मकानों में भी आग लगा रहा था। दौड़-दौड़कर आग लगा रहा था ! लपटें दौड़-दौड़कर एक मकान से दूसरे की ओर, एक महल से बगल वाले महल की ओर बढ़ी जा रही थीं। और बरबास भी उन्हीं के साथ भाग रहा था। वह चाहता था आग जितनी फैले उतना ही अच्छा। इसमें वह जितना ही सहयोग दे उतना ही अच्छा ! बरबास इस बार पिछड़ना नहीं चाहता था। उसने धोखा नहीं दिया। इस बार बरबास ने अपने प्रभु को धोखा नहीं दिया था। उसने महानाश के समय, मौका आने पर महाप्रभु के साथ विश्वासघात नहीं किया था। आग—सर्वसंहारकारी आग ! फैल रही थी, वह फैलती ही जा रही थी। सारी दुनिया, सारी दुनिया जल उठी थी !

देखो ! उसका राज्य यह रहा !! देखो ! उसका राज्य यह रहा !!

१५

बन्दीगृह के निचले हिस्से में जितने ईसाइयों पर आग लगाने का अभियोग लगाया गया था वे सब इकट्ठे किये गये थे। उनमें एक बरबास भी था। उसे रँगे हाथों पकड़ा गया था और पूछताछ के बाद

अन्य ईसाई अभियुक्तों के साथ बंद कर दिया गया था। वह भी उनमें से एक था।

बन्दीगृह—राजधानी के बन्दीगृह को एक बड़ी भारी चट्टान काटकर बनाया गया था। अस्तु, उसकी दीवालों से पानी चूता था। प्रकाश हल्का था लेकिन वे उसमें भी एक दूसरे की शक्लें देख सकते थे। बरब्रास इस बात से खुश था। वह अपनी चटाई पर एक ओर मुँह किये बैठा रहा।

उन लोगों ने आग के बारे में बड़ी देर तक बातें की और भावी घटनाओं के सम्बन्ध में अपनी कल्पनाएँ भिड़ाते रहे। उनका कहना था कि आग लगाने का अभियोग केवल एक बहाना भर है जिसके आधार पर उनको गिरफ्तार कर लिया गया है और अब सजा देने की तैयारी की जा रही है। न्यायाधीशों को यह अच्छी तरह से मालूम था कि आग लगाने का काम उन्होंने नहीं किया है। उनमें से एक भी सभास्थल पर न गया था। इन्हें सरकारी दमन कार्य की सूचना पहले ही मिल गयी थी—इसलिये वे अपने घरों से ही नहीं निकले थे। वे निर्दोष थे। लेकिन इससे क्या? हरेक उनको दोषी समझना चाहता था। प्रत्येक यही विश्वास करना चाहता था कि आग लगाने का काम ईसाइयों ने ही किया है। ईसाइयों के खिलाफ कुछ क्रीतदासों ने—किराये के टट्टूओं ने। आवाज लगायी थी।

—लेकिन किसने उनको खरीदा था? अँधेरे में से एक आवाज आयी जिसका उत्तर देने की फिक्र किसी ने नहीं की। उस तरफ किसी ने ध्यान ही नहीं दिया।

प्रभु के भक्त आगजनी जैसे काम को कैसे कर सकते थे? वे रोम में आग लगाने के अपराधी किस प्रकार हो सकते थे? उनके प्रभु, उनके भगवान मानवात्माओं में प्रेम की अग्नि प्रज्वलित कर उसे शुद्ध करते थे—नगरों में आग लगाने की बात तो उन्होंने कभी नहीं कही।

इसके बाद उन लोगों ने अपने उन प्रभु की बातें आरम्भ की जो

प्रेम थे और ज्योति थे और उनके राज्य की बातें की—प्रभु यीशू के राज्य की—जिसको वे लोग प्रभु के वादे के अनुसार प्रतीक्षा कर रहे थे। इसके बाद उन लोगों ने अद्भुत और प्रेम रस में भीगी भाषा में प्रभु की महिमा के मधुर गीत गाए। ये गीत बरब्बास ने पहले कभी नहीं सुने थे। वह बैठा-बैठा उन गीतों को सुनता रहा। बरब्बास ने इस बीच अपना सिर एक बार भी नहीं उठाया।

इतने में दरवाजे में लगा लोहे का डंडा हटा दिया गया और दरवाजा खोल दिया गया। बन्दीगृह के अधिकारी ने बन्दियों को भोजन कराने के लिये प्रवेश किया था। वह चाहता था कि उसके बन्दी जब भोजन करें तो कमरे में पर्याप्त प्रकाश रहे। इसलिए दरवाजा खुला ही छोड़ दिया गया था। वह अधिकारी स्वयं भोजन कर के आया था। यह बात उसका चेहरा देखने से साफ प्रकट हो जाती थी। अधिकारी ने अन्दर आते ही भद्दी-भद्दी गालियाँ उन लोगों को दीं और उनके ऊपर रोटियाँ फेंकनी शुरू कीं। वे मुँह में रखने योग्य भी न थीं। गालियाँ देते समय उसका उद्देश्य किसी बन्दी का अपमान करना न था बल्कि वह तो अन्य बन्दीगृह अधिकारियों की भाँति बन्दीगृह की परम्पराओं का निर्वाह करता जा रहा था। बरब्बास दरवाजे के पास ही बैठा था और उस दरवाजे से आने वाला सारा प्रकाश पड़ रहा था। उसे देखते ही वह अधिकारी अट्टहास कर हँस पड़ा। वह बोला :

—यह वही पागल है, जो आग लगाते हुए पकड़ा गया था! अरे मूर्ख लोगो! और तुम यह कहते हो कि कुछ जानते ही नहीं! तुम सब अव्वल दर्जे के झूठे हो।

बरब्बास की आँखें नीचे झुकी थीं। उसकी शकल कठोर और भावहीन हो गयी थी। लेकिन उसकी आँखों के नीचे घाव का निशान अधिकाधिक लाल होता जा रहा था—जिसे देखकर ऐसा लगता था कि वह जल उठा है।

सभी बन्दियों ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा। उनमें से कोई उसको न जानता था। उन लोगों ने सोचा था—वह कोई अपराधी है जो उनके साथ नहीं पकड़ा गया है। लेकिन उससे तो उनके सामने कुछ भी पूछा नहीं गया था। और न एक साथ ही पकड़ कर बन्दीगृह में भी लाया गया था।

—यह असम्भव है! उन लोगों ने आपस में कानाफूसी करते हुए कहा।

—क्या असम्भव है? रोमन बन्दीगृह के अधिकारी ने जोरों से चिल्ला कर पूछा।

—यह ईसाई नहीं हो सकता—यदि इसने वह काम किया है जो तुम कहते हो।

—ईसाई नहीं हो सकता? लेकिन यह तो स्वयं उसी ने स्वीकार किया है। जिन लोगों ने इसे पकड़ा था, उन्होंने मुझे वह बातें बतलायीं हैं जो इसने कही थीं। यही बातें इसने पूछताछ के समय भी स्वीकार कीं।

—हम इसे नहीं जानते; उन लोगों ने बेचैन होकर कुनमुनाते हुए कहा; यदि ईसाई होता तो हम लोग इसे अवश्य जानते होते। हमारे लिए तो यह बिलकुल अजनबी है।

—तुम सब के सब अच्छे खासे मूर्ख हो! थोड़ी देर और ठहरो, सब मालूम हुआ जाता है।

और बरबास के पास जाकर उसकी नम्बर वाली प्लेट अधिकारी ने उलट दी।

—इसे देखो! क्या इस पर तुम्हारे ईश्वर का नाम नही खुदा? मैं कटी हुई लकीर नहीं समझ पा रहा—क्या है? लेकिन क्या नाम नहीं लिखा है? तुम स्वयं इसे पढ़ लो।

उन सब ने बरबास को घेर लिया। अधिकांश उसे नहीं पढ़ सके लेकिन दो-एक ने पढ़ा—जीसस क्रीस्ट...जीसस क्राइस्ट...।

अधिकारी ने प्लेड छोड़ दी। और इसके बाद उसने चारों ओर विजयोल्लास प्रकट करते हुए देखा।

—अब तुम लोग क्या कहते हो ? क्या यह ईसाई नहीं है। इस आदमी ने न्यायाधीश को प्लेट स्वयं दिखलायी थी और कहा था कि वह रोमन सम्राट का गुलाम नहीं है—वह तुम्हारे उस ईश्वर का गुलाम है जो सूली पर चढ़ा दिया गया था। अब यह भी सूली पर चढ़ाया जायगा—यह बात मैं शपथ खा कर कह सकता हूँ। और सो तो तुम लोग भी नहीं बचोगे। तुम्हें भी सूली पर चढ़ना होगा। हालाँकि तुम सब इससे भी अधिक बड़े बदमाश हो। यह बड़े ही तरस की बात है कि तुम लोगों का ही एक आदमी दौड़ता हुआ हमारे जाल में चला आया और स्वयं ही चिल्ला-चिल्ला कर कहने लगा कि वह ईसाई है !

और उन लोगों के परेशान चेहरों को देख कर हँसता हुआ वह बाहर चला गया और उसने कोठरी के दरवाजे, जोरों की आवाज करते हुए बन्द कर दिये। उन सब ने उसके जाते ही बरबास को घेर लिया और प्रश्नों की बौछारें उस पर कर दीं। वह कौन है ? क्या वह सचमुच ईसाई है ? वह किस सम्प्रदाय का है ? क्या यह सच है कि उसने आग लगाने का कार्य आरम्भ किया था ?

बरबास ने किसी प्रश्न का कोई जवाब नहीं दिया था। उसका चेहरा राख की तरह सफेद हो गया था। आँखें इस कदर गड्ढे में धुस गयी थीं कि वे लुप्त-सी हो गयी थी।

—ईसाई ! क्या तुमने नही देखा कि जीसस प्रभु का नाम प्लेट पर कटा हुआ था।

—क्या नाम कटा था ? क्या प्रभु का नाम कटा हुआ था ?

—बेशक ! क्या तुमने नहीं देखा ?

दो-एक व्यक्तियों ने उसे देखा था—प्लेट को देखा था लेकिन

गाम्भीरतापूर्वक सारे मामले पर उन्होंने विचार न किया था। वे सोच रहे थे—इसका अर्थ क्या है ?

कुछ लोगों ने नम्बर वाली प्लेट उसके हाथ से छीन ली और उसे प्रकाश में ले जाकर देखा। वह साफ-साफ दिखलायी पड़ने लगी। प्रभु का नाम किसी चाकू से मजबूत हाथों ने साफ-साफ ढंग से काट दिया था।

—प्रभु यीशू का नाम क्यों कटा है। इसका क्या मतलब है ? क्या तुम सुन नहीं रहे ? इसका क्या मतलब है ? जवाब दो !

लेकिन बरबास अब भी कोई जवाब नहीं दे रहा था। वह अपने कंधे डाले चुपचाप बैठा था और जहाँ तक बन पड़ रहा था किसी के भी प्रश्न का उत्तर नहीं देना चाहता था। उन लोगों का क्रोध और आश्चर्य बराबर बढ़ता जा रहा था। वे सोच रहे थे—यह कैसा आदमी है जो कहता तो है कि वह ईसाई है लेकिन वैसा मालूम बिलकुल नहीं पड़ता। उसका विचित्र व्यवहार उन लोगों के लिए कल्पनातीत विषय था। अन्त में वे लोग एक वृद्ध के पास गये जो उन लोगों के साथ शोर मचाने में भाग न ले रहा था अपितु एक कोने में चुपचाप बैठा हुआ था। जब उन लोगों ने सारी बातें वृद्ध को बतला दीं तो वह उठ कर बरबास के पास आया। उसकी कमर थोड़ी-सी झुक गयी थी लेकिन वैसे वह लम्बा-चौड़ा था। उसका माथा चौड़ा था। सिर के बाल पतले और लम्बे थे। दाढ़ी के बाल भी लम्बे थे और सिर के बालों की भाँति वे भी सफेद हो चुके थे। दाढ़ी नीचे छाती तक आती थी। उसकी आँखों का भाव प्रभावजनक लेकिन दयापूर्ण था। नीली आँखें लगभग बच्चों जैसी चौड़ी और खुली हुई थीं। उनसे वृद्धावस्था की बुद्धिमत्ता स्पष्टतः झलकती थी।

वह थोड़ी देर बरबास के चेहरे को चुपचाप देखता रहा। और तब वह वहीं बैठ गया और ऐसा प्रतीत हुआ जैसे वह कोई पुरानी बात स्मरण कर रहा हो।

—बहुत दिनों की बात है, उसने कुछ क्षमायाचना के स्वर में कहा और बरब्बास की सामने वाली चटाई पर बैठ गया।

अन्य लोग जो उस वृद्ध के चारों ओर बैठ गये थे उन्हें इस बात से आश्चर्य हुआ कि उनके वह मान्य पितृदेव इस आदमी को जानते हैं। उनकी बातों से ऐसा लगता था कि वे जानते हैं।

धीरे-धीरे वृद्ध को बरब्बास ने सब कुछ बतला दिया। यह भी बतला दिया कि उसकी प्लेट पर नाम किस प्रकार लिखा गया और किस प्रकार काट दिया गया। बरब्बास ने बतलाया कि उसने आग लगाने में सहायता इसलिए की थी क्योंकि उसने सुना था कि मुक्तिदूत सारे संसार में आग लगा देंगे। इसीलिए उसने आग लगी देखी तो समझा कि प्रभु ने ही आग लगायी है और उसका कर्तव्य है कि वह उसे प्रज्वलित करे। यह सुनकर वृद्ध ने बड़े चिन्तापूर्वक अपना सिर हिलाया और बतलाया कि जिस आग की उनके प्रभु ने चर्चा की थी—वह यह संसारी आग नहीं थी—बल्कि प्रेम की आग थी। यह आग तो रोमन सम्राट ने लगवायी थी। इस प्रकार का कार्य करके बरब्बास ने सीजर के ही हाथ मजबूत किये।

—तुमने इस प्रकार इस दुनिया के संसारी राजा की सहायता की है—उस प्रभु की नहीं जिसका नाम प्लेट पर कटा हुआ है।

—हम लोग के यथार्थ प्रभु तो प्रेममय हैं। और बरब्बास के गले से प्लेट निकाल कर कटे हुए प्रभु के नाम को उन्होंने बड़े दुख से देखा।

इसके बाद एक दीर्घ निःश्वास उन्होंने ली और उँगलियाँ ढीली छोड़ दीं। वह प्लेट नीचे गिर पड़ी। वृद्ध समझ गये थे अब कुछ नहीं किया जा सकता था और उन्होंने यह भी समझ लिया था कि और लोग भी यह बात समझ गये हैं। यह बात बरब्बास ने भी भयभीत आँखों द्वारा प्रकट कर दी।

—यह कौन है? यह कौन है? वे सब वृद्ध को उठते देख चिल्ला

उठे। पहले तो वृद्ध ने जवाब न देना चाहा लेकिन वे लोग पीछे ही पड़े रहे तो वृद्ध को सब बतलाना ही पड़ा।

---यह बरब्बास है। प्रभु को इसी की जगह सूली पर चढ़ाया गया था।

वे सब के सब स्तब्ध हो गये थे। ऐसा लग रहा था जैसे उन्हें साँप सूँघ गया हो। उन लोगों को शायद अन्य कोई बात इतनी मर्मभेदी न लगती जितनी वह लगी।

बरब्बास! प्रभु जिसके कारण सूली पर चढ़े वह बरबास! बरब्बास!

ऐसा लग रहा था कि उनकी समझ में कुछ भी न आ रहा हो। उनकी आँखें क्रोध से लाल हो उठी थीं और अँधेरे में भी आग-सी उगलती नजर आ रही थीं।

लेकिन वृद्ध ने उन सब को शान्त कर दिया।

—यह दुखी आदमी है और हमें उसे और ठोकर मारने का या निन्दा करने का कोई अधिकार नहीं है। हम स्वयं अनेक प्रकार की त्रुटियों से युक्त हैं और यह कोई प्रशंसा की बात नहीं है कि हमारे प्रभु ने उन पर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया। हमें ऐसे किसी व्यक्ति की निन्दा करने का अधिकार नहीं है जिसका कोई ईश्वर न हो।

वे सब के सब नीची दृष्टि किये खड़े रहे। ऐसा लग रहा था कि वृद्ध के अंतिम शब्दों के बाद उन लोगों का साहस बरबास की ओर देखने का नहीं हो रहा था। वे सब बरब्बास के पास से चुपचाप जहाँ पहले बैठे थे वहाँ चले गये। वृद्ध ने दुख भरी साँस ली और वे भी भारी हृदय से अपने स्थान पर उन लोगों के पीछे-पीछे चले गये।

बरब्बास फिर अकेला बैठा रह गया। बंदीगृह में इसी प्रकार दिन के दिन बीतते चले जा रहे थे और बरबास उन लोगों से दूर ही बैठा रहता—चिन्तामग्न मुद्रा में। वह उनकी मधुर प्रार्थनाएँ सुनता और मृत्यु के बाद जो शाश्वत जीवन मिलता है उसके सम्बन्ध में उनकी

विश्वासपूर्ण वार्ताएँ सुन-सुनकर मानसिक-दृढ़ता का भाव प्राप्त करता। उन सब में अद्‌भुत विश्वास था और उनमें से एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं था जो संशयात्मा हो।

बरबास भी उनकी बातें सुनता और अपने ही विचारों के संसार में डूबा रहता। वह उस आदमी की भी याद कर लेता था जिससे वह ओलिव पर्वत पर जाकर मिला था। वह भी बहुत दिन हुए मर चुका था। उसकी अस्थिमात्र की खोपड़ी अनन्त अंधकार में बरबास को विचित्र ढंग से हँसती हुई दिखलायी पड़ती थी।

शाश्वत जीवन......

क्या इस जीवन का भी कोई अर्थ है—जो उसने बिताया था? लेकिन उसका तो उसमें भी विश्वास न था। और इस शाश्वत जीवन के सम्बन्ध में तो उसे और भी कोई ज्ञान न था। जो भी हो, इसका अन्तिम निर्णय करने का अधिकारी वह न था।

वहाँ वह वृद्ध बैठा हुआ था। उसकी दाढ़ी की धवल केशराशि लहरा-लहरा जाती थी। चारों ओर से लोग उसे घेरे रहते थे। वह सबसे अत्यन्त विश्वासपूर्वक बातें करता और सबकी बातें प्रसन्न भाव से धीरता-पूर्वक सुनता। लेकिन कभी-कभी वह भी कोने में झुक जाता था और मौन भाव से कुछ देर न जाने क्या सोचता रहता। शायद वह अपने गाँव की याद करता था जहाँ मरने की कल्पना उसने अपने बचपन में की थी। वह अपने प्रभु से एक सड़क पर मिला था। प्रभु ने उसे आज्ञा दी थी 'मेरे पीछे आओ!' और उसने उस आज्ञा का अक्षरशः पालन किया था। वह अपने भविष्य को बाल-सुलभ दृष्टि से अपने सामने देखता था। उसका झुर्रियोंदार चेहरा और पिचके गाल एक प्रकार की अपूर्व दिव्य शान्ति बिखेरते चलते थे।

अन्त में वह दिन आ ही गया। वे सब के सब वधस्थल की ओर ले जाये गये। दो-दो आदमियों का एक-एक जोड़ा बनाकर उस जोड़े

को लोहे की साँकलों से बाँध दिया गया था। लेकिन बरब्बास का कोई जोड़ा न बना था; अस्तु, वह उस मृत्यु-यात्रा में सबसे पीछे और अकेला ही था। वह इस बार भी किसी से बँधा न था। पता नहीं क्यों सूलियों के मामले में भी ऐसा हुआ कि उसको सबसे आखिरी सूली पर चढ़ाया गया।

इस अवसर पर वहाँ बड़ी भीड़ इकट्ठी हो गयी थी। सूलियों पर चढ़ाते अधिक समय नहीं लगा लेकिन जो भी समय मिला उसमें सारे चढ़ने वालों ने एक दूसरे को ढाढ़स भरे शब्दों में आशाजनक सान्त्व-नाएँ दीं। लेकिन बरब्बास अन्तिम समय भी कुछ नहीं बोला।

जब गोधूलि बेला आयी तो दर्शक जा चुके थे। वे थक जो गये थे दिन भर खड़े-खड़े। इसके अलावा जिन जिनको सूली दी गयी थी—वे सब मर चुके थे।

केवल बरब्बास ही अकेला वहाँ लटका रह गया था। वही अकेला शेष था—जिसके प्राण अटके थे। जब उसने अनुभव किया कि उसकी मृत्यु अँधेरे में से उसकी ओर बढ़ी आ रही है—वह मृत्यु जिससे वह जीवन भर भयभीत रहा तो उसके मुँह से यह शब्द ऐसे निकल पड़े जैसे वह उससे बात कर ही रहा हो :

—तुझे मैं अपनी आत्मा देता हूँ।

और बरब्बास ने अपने प्राण विसर्जित कर दिये।

उपन्यास तथा कहानी

सिन्दूर बिन्दी—इकबाल बहादुर श्रीवास्तव	२॥)
अतृप्त वासनाएँ—अ० मोराविया	२)
पेरिस का रँगीला—गा० द० मुपासां	३॥)
ममता के बंधन—सामरसेट मॉम	३)
अपराध और दंड—दास्तेवस्की	४)
मदाम बोवैरी—फ्लाबर	३)
जीवन का सत्य—मोहनसिंह सेंगर	२॥।)
खून के धब्बे ,,	२)
स्कैंडल ,,	२॥)
मुर्दे की मौत	२॥)
जिन्दगी—निर्गुण	३)
प्यार के भूखे—निर्गुण	३॥)
टूटे सपने—निर्गुण	३)
नाना—एमिल जोला	३)
सेठ बाँकेमल—अमृत लाल नागर	१॥)
२ वोल्गा से गंगा—राहुल सांकृत्यायन	४)
२ सतमी के बच्चे—राहुल सांकृत्यायन (प्रेस में)	१)
२ जीने के लिए ,,	४)
२ विस्मृत के गर्भ में ,,	२)
२ शैतान की आँख ,, (प्रेस में)	२)
२ सोने की ढाल ,,	३)
२ सिंह सेनापति ,,	३॥)
राजस्थानी रनिवास ,,	५)
पंचतंत्र की कहानियाँ—रामप्रताप त्रिपाठी	३)
चतुरी चमार—सूर्यकांत 'निराला'	१॥)
बिल्लेसुर बकरिहा ,,	१॥)
चोटी की पकड़ ,, (प्रेस में)	२)
प्रभावती ,,	३)

चित्र—मन्मथनाथ गुप्त १)
जययात्रा ,, १॥)
सुधार ,, १॥)
जय वासुदेव—डा० रामरतन भटनागर ३)
अम्बपाली—डा० भटनागर २॥)
रेड लाइट—किशोर साहू ३)
वीर कुणाल—किशोर साहू (प्रेस में) ४)
नाना की माँ—एमिल जोला (फ्रांसीसी उपन्यास) ३॥।)
साइकिल चोर—लूईजि बार्तोलिनि (इटालियन उपन्यास) ३)
दिव्य जीवन—फ्रांज बार्फेल (फ्रांसीसी उपन्यास) २)
गृहदाह—शरतचंद्र चट्टोपाध्याय ३)
तीन उपन्यास—शरतचंद्र चट्टोपाध्याय २।)
दत्ता—शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय १॥)
विराज बहू ,, १॥)
देहाती दुनिया ,, १॥)
पाँच कहानियाँ ,, १॥)
परिणीता ,, ॥)
पृथ्वीवल्लभ—कन्हैयालाल मुन्शी ३)
किसका अपराध ,, ३)
भगवान कौटिल्य ,, ३)
स्वप्न-दृष्टा ,, ४)
शिशु और सखी—कन्हैयालाल मुन्शी २)
राजाधिराज ,, ६)
पाटण की प्रभुता ,, ३)
शिकार की कहानियाँ—रघुबर सिंह २॥)
विधाता की भूल—पन्नालाल गर्ग २)
मुर्दों का टीला—रांगेय राघव ७॥)
सीधा सादा रास्ता ,, ६॥)
चीवर ,, ५)
प्रतिदान ,, ३॥)
अंगारे न बुझे ,, २॥)
इंसान पैदा हुआ—रांगेय राघव (प्रेस में) २॥)